



I ISSN 2229-547X VI DEHA

बिदेह बिदेह १३७ म अंक १३ अगस्त २०१३ (वर्ष ७ मास ७५ अंक १३७)



ई अंकमे अछि:-

१. संपादकीय संदेश

२. गद्य

—



२.१.१.

वधूकथा-सोब

ज्याति- एक हास: टैट रूड भाग ३ २.



कामिनी कामायनी-

२.२.१. कुमार पुत्र- नापव तैवव पसवव पथाव (पवमेष्ट्रव कापडा क पथाव)२.

रौन कुरुन्द पाठक -वधू कथा - प्रेम : रवदान रा अभिशीप



—



२.३. डॉ० अरुण कुमार सिंह- अलिकवनामेक/संगनशामेक (Computational)

मैथिली ब्राह्मण



—



२.४.१. अनामिका बाज- रिहनि कथा- सीमा/ २. आशीष अनटिहाव- रिहनि कथा- थाए रैना पाटी



२.५. जगदानन्द या 'मनु'- ३ ठा रिहनि कथा



२.५.१. बरि भूषण पाठक- तीन ठा रिहनि कथा २. थसबह- रिहनि कथा- गैहबीया घबरावी



२.१.१. शिरकमार या 'टिन्नु'- रैडका साहेर : पबम्पवागत संस्कार केव पवाभरक



रुति टिन्नु २. नरेन्द्र कुमार या- ववितक रैहनि मैथिली कथाक दशा-दिशा पब भैव चर्चा संपन्न भैव मनेस क छठम अधिवेशन/ डनसठम बर्य ये प्रवेशे कयक छेटना समिति नीक गप आ योजनाक पब भैव चर्चा





२.४. सन्दीप कुमार साहू- रिचाव- रिन्द- बाजा अणुव पबजा

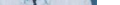

३. पद्य

୩.୧ ଜଗଦୀଶ ଚନ୍ଦ୍ର ଠାକୁର 'ଅନିତା'-ଗଜବ ୧-୪



২.২.১.  শ্রীমতী কামতঃ.  শান্তিনক্ষত্রী চৌধুরী




২.২.১.  খাশীষ খনচিহ্নাব-রিহনি গজদ ২.  জগদানন্দ মা 'মন্ড'- গজদ



২.৪. বরি ভূষণ পাঠ্য



3.3.  ରୀତ ମୁହନ୍ଦ ପାଠକ



২.৬. খনামিকা বাজ- করিতা-ক্ষমতারান





३.१. सन्दीप कुमार साहू



३.४. भानुचन्द्र सा-आजक बेटी



बाबाना धुते- अमित मिश्र- हाथी गेलै भोज थाए

भाषापक बचना-लेखन -मानक मैथिली



बिदेह मैथिली पोथी डाउनलोड साइट



VIDEHA MAITHILI BOOKS FREE DOWNLOAD SITE

बिदेह अ-पत्रिकाक सब्छा प्रबान अंक (बैर, तिवहता आ देरनागरी मे) पी.डी.एफ. डाउनलोडक लेल नीचाँक लिंकपर उपलब्ध अछि । All the old issues of Videha e journal (in Braille, Tirhuta and Devanagari versions) are available for pdf download at the following link.

बिदेह अ-पत्रिकाक सब्छा प्रबान अंक बैर, तिवहता आ देरनागरी कपमे Videha e journal's all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions



बिदेह ३-पत्रिकाक पहिल ३.० अंक

बिदेह ३-पत्रिकाक ३.०म सँ आगाँक अंक



↑ बिदेह आब.एस.एस.सी.डी. एनीमेटेडकेँ अपन साइट/ रीडरपब लगाउ ।



रीडर "लेखाउठ" पब "एड गाडजेस्ट" मे "सीड" सेलेक्ट कए "सीड यू.आर.एल." मे <http://www.videha.co.in/index.xml> ठागप केनासँ सेहो बिदेह सीड प्राप्त कए सकैत छी । गुगल रीडरमे पढ़ौ लेल <http://reader.google.com> पब जा कऽ Add a Subscription रीडर क्लिक करू आ खाली स्थानमे <http://www.videha.co.in/index.xml> पेस्ट करू आ Add रीडर दराउ ।



Join official Videha facebook group.



Join Videha google groups



बिदेह रेडियो:मैथिली कथा-कविता आदिक पहिल पौडकास्ट साइट

<http://videha123radio.wordpress.com/>

मैथिली देरनागरी वा मिथिलाक्षरमे नहि देखि/ लिखि पाबि रहल छी, (cannot see/write Maithili in Devanagari / Mithilaakshara follow links below or contact at ggajendra@videha.com) तँ एहि हेतु नीचाँक लिंक सभ पब जाउ । सगहि बिदेहक सुँभ मैथिली भाषापाक/ बचना लेखनक नर-पुबान अंक पढ़ू ।

<http://devanaagari.net/>



<http://kaulonline.com/uninagari/> (एतए रौन्समे ऑनलाइन देरनागरी
ठागप कक, रौन्स कौपी कक आ रडि डकुमेन्टमे पेश्ट कए रडि हागतकेँ सेर
कक । विशेष जानकारीक लेन ggajendra@videha.com पब सम्पर्क
कक ।)(Use Firefox 4.0 (from WWW.MOZILLA.COM)/ Opera/ Safari/
Internet Explorer 8.0/ Flock 2.0/ Google Chrome for best
view of 'Videha' Maithili e-journal at
<http://www.videha.co.in/> .)

Go to the link below for download of old issues of VI DEHA
Maithili e magazine in .pdf format and Maithili Audio/
Video/ Book/ paintings/ photo files. बिदेहक पुरान अंक आ ऑडियो/
वीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो सभक हागत सभ (उच्चावर्ण, रङ्ग सुथ साव आ
दुरस्थित मंत्र सहित) डाउनलोड करौक हेतु नीचाँक लिंक पब जाड ।

VI DEHA ARCHIVE बिदेह आर्काइव



जातिबिम्ब पुरी महकरी रिद्यापति । भावत आ नेपालक माईमे पसबन मिथिलाक
धवती प्राचीन कारहिँ महान प्रकष ओ महिला लोकनिक कर्मभूमि बहन अछि । मिथिलाक
महान प्रकष ओ महिला लोकनिक चित्र मिथिला बने मे देखु ।



गौरी-शैबक पातरणि कातक मूर्ति, एहिमे मिथिलासुबमे (१२०० वर्ष पुरक) अभिनेथ
अंकित अछि । मिथिलाक भावत आ नेपालक माईमे पसबन एहि तबहक अन्यान्य प्राचीन
आ नर स्थापन, चित्र, अभिनेथ आ मूर्तिकलाक हेतु देखु मिथिलाक खोज



मिथिला, मैथिल आ मैथिलीसँ सम्बन्धित सूचना, सम्पर्क, खस्रषण सर्गति रिदेहक सर्च-अंजन
आ नूज सर्गिस आ मिथिला, मैथिल आ मैथिलीसँ सम्बन्धित रेससागठ सभक समग्र
संकलनक लेल देखु -रिदेह सूचना सर्पक खस्रषण-

रिदेह ज्ञानरुतक डिस्कसन फोबमपब जाड ।

"मैथिल आब मिथिला" (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय ज्ञानरुत) पब जाड ।

२. गद्य



२.१.१.

वधूकथा-सोब

ज्याति- एक हाग: ठेठ रुड भाग ३ २.



कामिनी कामायनी-

२.२.१. कृमाव पुथ- नापव लेवव पसवव पथाव (पवमेथेव कापडि क पथाव)२.

रौल कृकन्द पाठक -वधू कथा - प्रेम : रवदान रा अभिशोप



२.३.

डॉ० अरुण कृमाव सिंह- खलिकवनामेक/सर्गनशामेक (Computational)
मैथिली रूकव



२.४.१. अनामिका बाज- रिहनि कथा- सीमा/ २. रिहनि कथा- थाए रैना पट्टी



आशीष अनटिन्हाव-



२.३. जगदानन्द मा 'मनु'-३. ठा रिहनि कथा



२.३.१. बरि भूषा पाठक- तीन ठा रिहनि कथा २. असबह- रिहनि कथा- गेहबीया घबरावी



मो.



२.१.१. शिरकमाव मा 'ष्टिन्नु'-रैडका साहेर : पबम्पवागत संस्कार केव पवाभरक



ब्रुति टिब २. नरेन्द्र कमाव मा- ववितक रैल्ल मैथिलीक कथाक दशा-दिशा पब भेव चर्चा संपन्न भेव, मज्जेस क छठम अधिवेशन/ डनसठम र्ष ये प्रवेशे कयवक चेतना समिति नीक गप आ योजनाक पब भेव चर्चा



२.४. सन्दीप कमाव साहू-रिचाव-रिन्द- बाजा अणव पबजा



१. जाति- एक हाग: ष्टि बूड भाग ३. २. वयुकथा-सोव



कामिनी कामायनी-



१



ज्याति

एक हाग : ठेठ बुड भाग 5

अपन रैठाके जन्मदिन मनाकऽ मास-सम्बर लौष्ट गेला । हम हेब असगब बहि गेनहुँ । पतिदेर के रूमर बहन जे हमबा असगब नहि नीक लागैत अछि से ओ ऑफिस सऽ जन्मी आरि जायत छलैथ । रौचमे एकरेब ऑफिस के पिकनिक पब सेहो गेनहुँ । रैह हमब सरहक हनीमून छल । रौद मे ओ जगह तीर्थस्थली रनि गेलौ । हम तऽ गुप मे गेल बही । रैहूत दिन रौद एहेन दम्पति भेटैला जे असगब ओतय गेल बहथ आ हुंका सरके आश्चर्य लागैत छलैन जे नररियाहन कोना रैसी लोक मे हनीमून मे जा सकैत छल । हमबा अहिरातक पब किछ रैजनाग नहि पसन्द छल । हम अपन पति के सेहो चुप बहके ञ्शिबा केनियैन ।

खाली समय मे एम सी ए करैके जोश चठन तऽ पति देर के नऽ कऽ अम्बर उम्बर भैठकि बहन छलहुँ । रौद मे सर कहलक एकठा पढ़ाग पब ध्यान दिय त एकाउष्टशी दिस ध्यान नगेनहुँ । पबीक्षा के समय आरि बहन छल । हम अपन मसियौत भाय रैनन के सहयोग सऽ हार्म भवतहुँ । रैबसागत के रौद नगहब जाक पबीक्षा देरौक मोन छल । घब सऽ जेब देर गेल जे मौसी लोकन छथि हुंका सऽ सल्लख बाथु । हम निर्णय केनहुँ ओतय जायके । एकठा रैहूत हास्यास्पद घटना भेल । हमबा मौसीके घब जायके छल आ ओ रौद रारहावी छली । हुंका भेलैन जे रौहन रैठी असगब कोना आओत । हम कहनियैन हम आरि जायत त ओ कहली आपा वस्तु सऽ छोटका भाय हमबा संग भ जेत । हम सृष्टीन पब भायके अंतजाव मे बही । अहि भायके दस साल रौद भैठैतहुँ । एकठा नङ्का के देखनिये जे हमबा दिस तकि बहन छल ह्रदा नग नहि आरि बहन छल । हमहुँ ढी समिसायन बही जे कहि ग किथो खान हेते । कनिक कालक प्वातीक्षके रौद हम असगब रिदा भेलहुँ । जखन पहुँचतहुँ त मौसी सँगे रैह नङ्का ठाढ़ । हम हुंका दौड़नियैन जेब सऽ जे हमबा पछतहुँ कियेक ने तऽ ओ कहला जे अहाँ क रँग मे नङ्का सरहक ठेली बह से हमबा डब



भेन जौं सरं मित्रिक हल्ला कबिते । तैयो हम ततेक थिसियेन बही जे जारें हम
बहनहुं ओ लौष्टि कइ घर नहिं एना । मौसीके घर हमरो घर सइ छेष्ट बहन लेकिन
थतेक मलमय जे हम हमेशा भागी ओतय । हुकब हाथक थेनाङ्क स्याद हमबा आव
कतौ नहिं भेष्टेन । रबसागतक एकदिन पहिने खबरौ खबरौगन करैके परामर्श भेष्टेन
आ कहली जे रस खल ' आरि जाहु । हम लौष्टि क अपन घर एतहुं । पति के पसन्द
सइ साङ्गी किनहुं । राया हाथ मे मेहदी नगेनहुं आ दहिना हाथमे पति सइ
नगरैनिथेन । ओ हाथक डिजागन तेहेन एरुसष्टिक बहेजे लोकन धेनमे सरं हमब हाथ
दिस ताकेत बह । हम सा 'नमे मौसीनग पहुंचहुं आ सुतय नेन रहिनक घर गेनहुं ।
बाति भवि रात करैत बहनहुं । कथन नीद भेन से नहिं बुझनिथे आ उठनहुं एगावह
रहे । जन्दी जन्दी तैयाव भइ जखन पारैन ले गेनहुं तइ देखनिथे जे महिना
सरंरक ठेनी जमन छथि आ सरं मौसी पब तमसायन जे रहुं तइ नहिंथे एनथिन
कनियो कत पड़ायन छथि । मौसी हमबा सरं पब तमसायन । मौसाजी रात सम्हावि
देना आ हम पारैन पब रैसि गेनहुं । पुवा रिथान सइ पारैन भेन । रहिन सरं तइ
हिन्मी शिबके रसनहावि देखेमे हिरागने जकां ' दुनी आ रहुत खुशी छन जे गाम
घर स दुब बहियो कइ कतेक रारहाविक छुनेथ । हम रबसागते दिन सामने लौष्टि
गेनहुं आ अगिला भोवहरै मे पति संगे गोवाङ्ग खाङ्गीमे गौब भसारं गेनहुं । हम
तमसायन बही जे पहिन रबसागत हम असगब प्रजनहुं तइ पति कहला जे
मधुश्रीरामी ओ एता ।

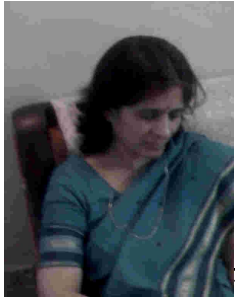
हम नगहब गेनहुं परीक्षा नेन । ओतय स्टेशन पब पितृश्री नेरय एना आ भेष्टेते देवी
कहला जे खल 'क सास सम्ब खल ' सइ खुशी नहिं छथि । हम भवि बस्ता कानेत
बहनहुं । घर पब मा ' संगे पड़सक अष्टीजी सरं बहथ अंतजावमे । सरं प्रदुनथि
की भेन । हमबा शीर्माङ्गी सइ किछु राजन नहिं भेन । तकब रौद पड़सक रहाने हम
घरमे नकायन बहत छनहुं । किछु लोक प्रदुरौ केनेथ जे की भइ गेन खल 'के.
मोन गड़रुं यन अछि की ? तहिपब हमब संगी रचिया जे राह मे विपेष्टब बह
से सरंके चुप करेनकेन आ कतिक जे अथन हिला पड़सक करैके छैन । जखन समय
एते तइ रिमारो हेथिन । लम्पीठनो जेथिन आ रचा अनथिन । पीरे पीरे हम टीठ
होयत गेनहुं । तकब रौद जे भेष्टेथ हुका नग अपन पति के चर्चा खुं कवी ।

हेब मौना पंचमी आयन पतिदेर नहिं छुनेथ से सरं ठेकि बहन छन । हम पन्दहो
दिन हुन लोढ़ गेनहुं आ पूजा केनहुं । पति देर के पुवा सहावृत्ति छुनेन हमबा
सइ । रोज बाति कइ हान करैत छुनेथ । दिनमे अष्टबनेष्ट छेष्ट पब सेहो गप्प
होयत छन । हेब सरंकिछु रियाहे जकां ' भइ बहन छन । मधुश्रीरामी पतिदेर पहुंचने



नहिं बहथ । सासुरो सऽ कोनो भाव नहिं आघर छल । माँ सऽ १ किनने बहथ तकले पतिनकऽ पारैन पब रैसनहुँ । अन्ततः फिन्नी गीरो जकाँ पतिदेर अन्त समय पब पहुँचला । सास किछु भाव आ सऽ १ पठेने बहथ । हमब जानमे जान आघर । सऽ १ रैदनि हम हेब पारैनमे रैसनहुँ । हम रैहुँत आँलादित बही से सरके बुझागेलैन । सर कहि बहर छलैथ जे येह डै रैथैक जिल्ली । राह निमहि लेन सरके रिसब पड़ैत छहि । हमब नानीजी बहैत से कहली केहन निमोथ छथिन सास जे एहेन हकीका बगके सऽ १ पठेनथिन । हम डेवाघर बही काबऽ हमब पतिदेर श्रैषऽ क्रमाब छलैथ । रुदा हमब माँ कहनथिन आ नौकबीचाकबी कबते ताहिमे काज एते तेँ एहेन पठेनथिन । हमबा बाहऽत भैठैन ।

२



कामिनी कामायनी

वधूकथा-

॥ सोब ॥

सरँठा सतबर्गी चादवि अपन अतस्तु काया पब नपेष्टि, गंधधनुष रँनि सम्पूर्ण आसमान पब पसवि ज़रौ के नारसा ओकर मन मे ओचक नै प्रश्रुष्टित भेल बह, आ त कतेक रँवथक मृगत मीनैन ब्रुती छल हेते जे समय आ अनुकूल रसती नोका के कोमल शीतल स्पर्श पारि दारानर रँनि धधकि उठल, नै जंगलक राज, नै कान रा समयक । आ एक रँव जे भयोन पाह उठलैत स्वाभारिक छल, अपना कात करौष्ट के सम्पूर्ण जीर जन्तु संग, रिशोर, दैव सन रिकबार गाछ रिबीछ के सेहो भस्मीभूत करि देनके । ओहि सबकर खड पत्राँव, कीष्ट फतिंगा, पशु पाथी के मध्य कारि आह भेल हरियरीके निहावि क आँखि स नाँव



रैहारैय रौना ,धवती आ आकाशि ,एकदम सुद्ध । अपन हृदय के असीम पीड़ा नेने किछु पाथी टे टे करैत,अपन प्राण रैहारैय नेन दोसब रन प्रात मे रौरा ठहना क शिवाशुनी के आस मे निवास निवास उड़ी चरन छन । कतेक टेन स ओ सरै अपन प्रवान रौस सुन मे ,चहकैत,महकैत,गुरैत ,चुगैत दिन काष्टि बहर छन ,झुदा हाथ रे दारानन ,कोन आगि जठबाहि के ठपैत,मानसिक रिचाव के श्मत रिश्त करैत ,लक्ष्मनरेखा नाँय नेन रौपा कबि देन ,जे अकस्मात ओकब सरैहक थोता उज्ज्वलि गेनय,ओकब सरैहक ओ डारि अकब भ चूकन छन ।

आह बाति मे थिड़की स हेरैत आकास सर्ग, स्नाति के मोन रिचावक रौप रौन मे बूनेत बूनेत घृणा आ आमेथानि स भवि ओकबा भार रिद्धन कबि देनके, बहि बहि क रुहेस फुष्टे,समाव लागक रिचाव मो के आँदोलित कवय नागै । कोन झूठ न क केकबा नग जेते ,सम्पूर्ण झूथ मन्दन त थापड़ि क पेदी रैनि गेन आरै ,केहन पवित्रासक दृष्टि स छननी छननी कवय नेन,राणी स फुगसक सहानुभूति स, आमेहवा पवि कवरौक नेन प्रेषित कवरौ नेन रैकर समाज ओकब प्रतीक्षा मे रौहवि ठाढ़ छैक । ओछेन प बाखन मोरौगन फेब रैहारि तोड़य नागने झुदा ओ ओहिना पथवति सन ठाढ़ । कनी कारक रौद होन उठा कार रौन प नजवि फेबनक उल्लस ठा मिस कार ,कतेक अपन लोक सरै । स्वतन हाथ के कहना घाँच घाँचि क ठेबूँन लैप जवा क पैथोलाँजी के मोठका पोथी थोतनक ,कान्ति परीक्षा छै,पेपव के नाम स दिमाग जखन किछु बज संचाव भेलै त ओतय किछु दोसरे प्रकारक खनरौली होमय नगने । फेन कवरौक हदस सेहो हृदय मे पगसय नागन छन,ओहि ठौपव रिद्यार्थी के ,जे कवाके डिप्रेशेनक रिषय रैनितेक ।

कालेज स आरिते अपन झूठ क सोना सिडली प रैसन रैड १ माँ ,जिनक मथवारादी दृष्टिकोण स के नहि आहत भेल छन ,आ हुनक पुत बिकु के देखि ओकब हाथ पएब स्रन आ होशि हरस ग्रम होमय नागने, ‘ हे दैर ग़ा दोसबपुतना के किएक पठौनछ हमब रैह कवरौक नेन कतेक हमब पाप अछि ओहि जनमक’ । मन मोन अँदन कयने छन,झुदा गवा नगिक बूनि पडने कतेक रैवथ स ग्रामिक प्रचंड रौद मे भठकि बहर छन, आय जेना ओचक हिमनय स्रयम नग आरि क अपन झूठ पाशी स तिबपित कबी देन ।

अपन जन्म स्थान स अतेक दुब अहि नगब मे शिवापुत्रा सरै के पढ़रै नेन ओ सरै पहिनहि मकान किन नेने छनथी ,स्नाती के पपा त हुनके देखसी केनही, झुदा निष्ठुर रिधाता के करम स ओ दुन भाग रैहिनी क भाग मे ग्रहण नागि गेने ,तखन मम्मी, आ पप्पा के अवजन, लक्ष्मी ,जीवन के गाँड १ अहि महानगब मे सेहो निधोक घाँचेत बहर छन । स्नू पास कबि उच्च शिक्षा नेन दुन अँजनीयबिग आ मेडीकर कालेज मे दाखिला न चूकन छन । किन्त्यात अहो एक गौष्ट कावण रैनि गेन होय , अहि रैधन स नीहिकिब भेला के ।



घोब असगबरा आ नैबाथ पुर्ण जीरन स त्राण पारय नेन एअह दुन हुनका कम्पुष्टेव आ अन्तर्बनेष्ट के दुनिया स परिचय पाती करौनक त ओसर स्रग्गी मे अहि महारिनाश क गप्प नहीं सोचन । झुदा जीरनक सातो बग जखन मस्तिष्क क दरवाजा थोति क रहर नागने ,तखन जुग जुग के दफ हिय प पारसक मधुव मधुव बून काया के जुडरैत सुथेन जड्डी मे खादि पानि देनाय सुक केतके त ठूँठ सेहो अपन बग देखरै नेन माथ उठौने हेते । डाबिक पोव पोव मे नाहि नाहि ठा आथि नागने आ देखिते देखिते लौजा लौजा पात स भवन समष्टिगव गाढ हेव स रैनरा मे कनिओ रिनरि नहि भेन । ओहि हबियायन ठूँठ प हेजक हेज पथेकगन किल्लान कबरा नेन उताहन भ गेन । आ ओकव थोहड्डी मे अछाधारी नाग के रास हेरा मे सेहो मे कनिओ रिनरि नहि भेन छन । समान्य लोक बुनि नहि पाउन की प्रचंड रौदी मे ए असमान्य हबियरी आरि रिषाऊ भ चुकन छैक । रा ए गाढ आरि देरै भरोसे जीरित बहे त बह,परिजनक आथि मे त भुतहा रनिए गेन छन । पहिनुका चिड्डे चुनहन के सेहो पर्यारनक अहि थेन स मर्मतिक कष्ट भेन बह ,सुथेने छन झुदा डाबि प ओकव अपन थोता त छन ,जतय बाति दिन ,मौसमक माबि स रैचरा नेन तीनों अपन अपन पाथि पसाबि क लोन मे लोन ध दाना चुगे छन ,ची चपड करैत छन ,अपन अपन पाथि के रैनगव रैनरि क नित दिन सपना देखैत छन ।

कथनो कथनो पैघ लोक क जिद सेहो पिया पुता के कोमन परिवेशि के,ओकव दुनिया के , मष्टियामेष्ट कबिक बाथि दैत छैक । आ ओहो एहेन रीभसे ,जे जन्म जन्मांतव धबि प्रेतक पबछाही रैनन ओकव पछोड धेने बहि जाए छै ।

जखन ओ वृष्क भुतहा कहारय नेन राधा भ गेन त ओकव फड आ हुन के तुलसी आ रैनपत्र जका त नहि पूजन जेते ।

अंत उचगव स्थान प ,निधोक भ, साँय साँय, उदल रैहत रसात ;एहेन मे त रिशान समष्टिगव गाढ सेहो क्षण मात्र मे भूमिशीला भ जाय छैक,ओसर त मात्र नान्ही ठा के एक गोष्ट कोमन तबरव । तहन सरि रिचाव झूठ भरे असय नागन छन । दुब दुब धबि रियारान, चावहु कात घनघोब तिमिब ,कोनो राँठ कतहु नहि सुनै । चनरा के त छनैहे । जिंदगी त आगा रैदरि के नाम छै ।

छुट्ट रासन मे सेहो हरा भवन बहे छैक , कतौ कोनो रस्तु के प्रधति खाली नहि बहय दगत छैक । तखन रिचाव शून्य मस्तिष्क कतेक दिन निश्चिय स्वतन बहितेक । रैड १ मन्मी कहिया धबि अपन घब गिबहन्ही तजि ओकवा ओगवने पडन बहितथि । स्नाति के माथ प ओकव जीरनक रौन बाथि,तारा कंजी सनमा क ,रौन भरोस दगत ,हेव हेव आरि के गप्प करैत अपन घब जाय नागनी त ओकवा बुना गेन बहे जे एके सहबि मे बहिओ क आरि हुनक राँठ अहि घब स रैड दुब चलि गेन



छत्र । रौतब हुक्का नोली खेलागत समय थिङ्कती दवरज्जा स ओहि घब मे हुक्का मारैत बहने , झुदा भीतब प्रवेशी कबरौक साहस नहि केनेके । कान्हिके स्नाति आय एकदम रैदति क पकठोस भ चुकर छत्र । कथनो रौदने हाथ मे,त कथनो चकरा रैतना ,आरै ओकरा घबक सरैठा काज कबनाय कनिओ नहि अथरे । अ एकांत ओकरा नेन पवम आरथक रैनि गेन छत्र । रार्थ मे कोनो काजराती आरि क ओकरा ओव बिबिनिन करे से एखन ओ कदापि नहि चाहैत छत्र ।

नोकन भेला के कावणे हंशुन नेन अपनाअ नहि केने छत्र पहिने ,झुदा आरै ,रौच सेशन मे त कोनो सरान ए नहि छत्र भैठैयके ,तखन अगिला रैबिस क रौठ जोछ ।

उमहब हरियाति गाछ सेहो अपन प्रवान मोह नहि छोडि पारि बहर छत्र ,ओकर रौजरै स्वनरै ,हसरै ,पठरै ,निथरै ओकरा असथा आथि स सम्पूर्ण स्पर्श कबरा नेन रैकर भ रैव रैव होन करे त स्नाति के मनक सताप आओव रैठि जाय । घृणा स ओकर माथ पैन रिजली के पथा सन घुमय नगे । सम्पूर्ण आकास ,धवती ,पातान क ,असहज दाक्कासोव ओकर मस्तिष्क के धावीदाव आबी स टिबय नागर छत्र । छाती पीछेत, रिनाप करैत, रैताहि सझुदी धावा सरै आरै एके स्त्र स टिकवय नागर , एतेक तीव्र स्त्र अयह छै ओ "अएह छै ओ जेकर ,," चावहु दिस स ओकरा प उठन आंग्रव ,ओह ,कोन पतार मे नुकाय ,कोनअग्लि मे भस्त्र भ जाए ,किछु फू रै नै छत्र तखन अपन आथि संगे दूर कान सेहो घरैड ॥ क रैन कबी नेने छत्र ।

दु तीन सन्ताह स स्नाति चकोव दिस नजबिओ उठा क नहि देख सकन छत्र । अपने मे घुमसुम ,आथि क सोना काबी ,जेना कजरौठा के सरै ठा काजब निकालि क किओ ओकर स्रंदव आथि के नीचा मति देने होय । एक दु रैव ओ ओकरा सोना ठाढ़ होरौक प्रयास कयरो केन ,झुदा अपने मे ओमवाएन स्नाति मेला मे हेड एन नोना सन डवाएन डवाएन अमहाव उमहब तकेत चुप चाप चनन जागत बहर छत्र । चकोव की सोचते ,अहो सताप बहि बहि क ओकर मानसिक अरन्था के आओव रात्र कबि दैक । कान्हि धवि जे ओकर राथान स्नि आथिक पपनी नपकेनाय रिसबी जायत छत्र,जे महान प्रचेता ,अधि ,झुनि के थिसा स्नि,अपन महती धरोहवि के कथा स्नि ,मिथिला दर्शन नेन उताहर भ गेन छत्र ,आय ओकरा कोना कहते जे ,मिथिला के रतिमान मे सेहो आरै माहुव घोवा गेन अछि ।

बाति बाति भव गेकथा के अपन करेज स सपैने,परंग प पेटैरुनिया देने ,हुँकव हुँकव तकेत ओकर दृष्टि सोना पडन ठैरुनक पाया स रैहवा क कतेक कतेक जुगक पाव स रौरा ठहनाक आपस आरैय त नगे ,दवरजा के कंडी किओ अथैठठा बहर अछि ,किसयात ओ आपस आरि गेन होयथ,झुदा ओ त निश्रुव हरा निकले



छत्र, जखनओ धडकड़ १ क उठै, खुजल केराड़ स दुब दुब धवि सङ्क नियोन नागई मे किओ कर्ता नै देखाय पडै । कथनो थिड़की के पबदा हिलै, झुदा ओ कत नाकि बहन छली । आँखि रहै “गौ स्वगनी हमर कथी नेन कने छै” ओकर माथ प हाथ बाथि राजन ओ सुब त राजा समेत आरै रिना गेल । “पापा यौ पापा, एहेन पहाड़ कि ए भ गेलै हमर सरहक ज़ीरन यओ पापा, रिधाता कि एक हमर सर स रौम भ गेलथीन । जखन ओकर कोढ़ कछै त जेना नगे कर्ता कोनो पहाड़ प रौदन फाँटल होय । सोहा प रँग सन झुसकैत पापा अपन स्वगरी, स्वगनी के करेज स सपौने ओकरा दुनिया के सरस शिङ्गिली लोक रैनरै के सपना देखैत, देखैत स्वयम स्वप भ गेलै, तखन माँ के आचवि, छतरी रैनी दुनू के माथ नपने बहे, आरै ओ आचवि सेहो पछिमक रैङ्का आँधुरी मे उधिया गेलै । आरै .. । दिमाग मे उधम मचरैगत अहि भयानक सोब केरैरजोबी शीत करैत सोचन, शिङ्गिली त रैनै पड़ैत आरै, पापा कहथ छत्रथिन, कमजोर गाढ के सर मोचाड़ि क बाथि दैत छै, रैनगर तब छत्रवि नेन, अप्पन त अप्पन, दुब दुब स अँचिन्हाव सेहो हेँज क हेँज आरै छै आ ओ गाढ सहर्ष ओकरा झीकाव सेहो करैत छै” ।

एतेक दिन के रौद स्याति के अपन स्याभारिक गति स, अपना दिस आरैत देखि चकोर जतय छत्र ओहि ठाम अर्जता के झुकत जका ठाढ़ भ गेल । स्याति ओकर हाथ घीचने केँछीन दिस रँठि चूकर छत्र । आय ओकर झूथ मन्दन प उदासी के कनिओ कोनो चेँह नहि छले, । क्रॉस, डिसेम्बन, सेमिनार प्राफेसर सर प ओहिना यथारत हाथ हिला हिला क गप्प करैत काफ़ी पिरैत, सेडरिच थागत, रौजैत बहन छत्र ।

रौसी सनि बङ्गर क घबक भोजन कवरौ नेन चकोर के ज़िद कबी क स्याति अपन घब आने छत्र, । गमहव चाबि पाँच मास भ गेलै त चकोर स्वयम अपन झूठ थोरगत राजन छत्र “आरै अहा घबक खेनाय नेन नहि रँजरेँ छी, आँछी मना करैत छथी की । “आँछी, कनी कार नेन ओकर आँखि मे हेब स रिरोँ उठरौ के कोसिस कयने छत्र, झुदा रैनगर रैनरा के रिचार ओकर ठोब प चोकीदार जका ठाढ़ भ गेलै मन मे उठै “हेस द फिखव, फिखव रिन डिसेपियव” । माथ नूनरैत कहक, “माँ त आरै चलि गेलथी । “कत, गाम, कहिया गुँति । ओ कनी अरक सन भेल । “ नै नै, आस्ट्रेलिया, ओ आरै दोसब रिराह कबी नेनथीन” ।

ओ एतेक पैघ आ मर्मतिक कर्तु क गप्प ओ एना रौजि देनके जेना ओ ककरो आन स सरँखित होय । चकोर के माथ नहि जानि की सोचि क नुकि गेल छले, स्याति ओकर झूठ प खसर केस के अपन आँखि स सगतैत ओकर हाथ मे हाथ धेने केँछीन स निकसि क रौहव लौन मे आयन आ रेफिक्विब, रिन हावर थिनाड़ १ जका जेकर क थेल खवाप मौसमक कारणे अस्थिगत भ गेल होय, जय पवाजय स झुँज दुनू मेकडौनाडे मे थाय नेन सीपी चलि गेल छत्र ।



ई कनापब अपन मतिर ggaj_endr_a@videha.com पब पठाउ ।

१. क्रमाव पृथु- नापव तैवव पसवव पथाव (पबमेथेव कापड्डी क पथाव) २.

क्रमाव पाठक - नय कथा - प्रेम : रवदान रा अतिशय



रात

१

क्रमाव पृथु

नापव तैवव पसवव पथाव (पबमेथेव कापड्डी क पथाव)

सामाजिक सांस्कृतिक भारभूमिक निम्न उज्जर साहित्यिक उपजा थिक, अ पथाव कथा संग्रह । स्वयं लोकजीवन आ निम्न सामाजिक पबम्पवाक वग आ तहमे निम्न कपस घडवे कएन लोकयथार्थ आ हागसल सहज संगीत स्पन्दनक गेठ आ पुरोतसनके अ बुझाओ । सहज स्वयं लोकभाषामे सामाजिक सांस्कृतिक पबम्पवाक तह दर्शन संगे लोक जीवनयथार्थ आ लौकिक हागसल एहिमे एहन भ क ने सङ्गव मिङ्गव अछि, जे रहित अहिमे अ मैथिली रत्नतज्जयडयनिथ क नीक स्वरूपक आह्लादक भाररोध कवरैछ ।

चतवर् पसवव मैथिली कथासाहित्य मया अ एकठा निजगत धस आ संगीत पङ्कत खुपेविया बहरैछ नैछ । पथावक कथाकावक वचनाधर्मी सहजता, स्वयं अरलोकनक अरलैना क्षमता तथा सृजनामेक सिद्धि, रहित उज्जर आ सबि स्वयं नैछ । कथाकावके जे बेहर खेनर लेखकीय पकड़ आ पबिकर पकठोस वचनाधर्मी उर्जा क्षमता अछि, ओ मैथिलीक तक आ पक्षमे शुभ सगुनियाँ नैछ । पथाव संग्रहस वचनाकावक पबम ऐतिहासिक आयतन आकावक नाप तैवक संगहि सम्मानित लेखकीय रिस्तुतिक अगाध पबिधि एर उक्तेछ, पङ्कत रोध सेहो होओछ ।

पथावमे गूँड़ चाँडव हँकैत आस मोवथ अछि, हँथोविया मारैत करवता रैगवता अछि, हँ कटैत नरसा आ मचकी नृनैत सपनासभ अमाव लागत अछि । एहिमे ओहविया मारैत रोदना घेओना अछि, त' घुसुनियाँ कटैत सीमा आ टिका दवरैथ खेनैत अनन्त आकाशि सेहो अछि । सरस रँठका रात जे एतए अछि, ओ अछि- अपन लोकक जीवन अनुभवरक रिस्तुत लेखा जोखा से अपकप आ अपाव अछि । किएक त' एहिमे



हमरे अहाँक घब अउना, ओतती धुवधुव, दूबा दान, खेत खटिहान, कमाग खण्डाक प्रतिरिम्बन अछि । निम्बन निम्बनस' असर हमरे अहाँक अछि । से एहि दूखाव, जे एहिमे पवम्पवा आ जिनगी अछि, सँघर्षस' भवर आशि रिश्यासक अनन्त उपक्रम अछि । नीक रोजाय सँ तबहक चेहरा चित्रित कबएँना अनन्त आ अभिराजिक जे रेशिष्ठ अछि, कथा, शिप्प आ तकनीकी सुबक जे रैरिष्य अछि, ओ मनभारन अछि । एहिमे माननीय सँदेनक घनीभूत एर सारिभौमिक सुब सेहो अछि, झुदा रिश्काष्टक, नर सँवचनारादी आ पबिरदतनकाबी अछि ।

भौतिक भोगरादी हाक समकालीन सन्दर्भ आ रेशिष्ठकषाक उजहिया पबिप्रेश्यामे रिनष्टन अहमियात जिनगी, उहापोह एर दौडधुपस' रिक्ठाह, एक बसाह भ' गेन अछि । जीरनक सँस्था बाग बग भँस' क' दूगब भैरा के भैर कएन अछि, हास्य रिनोद हास अपन अनुपम आनन्दक अनमोल पवम्पवा सेहो अलोपित भ' बहन अछि । चौन मजाकक जे रिश्वद, सबस पवम्पवा दुन, सेहो हेबा ठेबाक' रैरागत भैर जा' बहन अरुन्धामे, टिकन चुनझन लोक बाग भासमे राँगा पवम्पवाके जे आ आगु रँठएनहि अछि, हमर प्रकाशिकिय नजबिमे ओकब स्थािति आ मुलाकन लोकप्रिय आ सोकाजक अछि ।

२



राज झरुन्द पाठक

ग्राम + पोस्ट- कबियन

थाना - रोसङ्ग १, जिला- समस्तीपुर

मो. 9934666988

नघ कथा - प्रेम : रवदान रा अभिशाप

गर्मीक दिन दुन, साँमक समय । ईहन समयमे डुरैत सुकजक दृष्ट किछ अजीर होएत अछि, जेना किछ राफन, किछ उदास-सन, किछ कहैत झुदा छुपे - चाप सुकज डुरि बहन दुन । साँउनक मासमे गंगाक कातसँ अथाह पानिक पाछाँ सुकज डुरैरक चित्रे मोनमे कए तबहक प्रश्न प्रकष्ट क' दैत अछि ।

... कि एका- एक बाजीर फोन देखैत अछि, ककरो फोन नै आएन बहक । ओ अपन शिष्टक जेरैमे हाथ दैत अछि आ सिगरेटक डिब्रा निकालि नैत अछि, डिब्रा



थोनि ओहिमेसँ एकठ्ठा सिगरेट निकालि लैत छि, सिगरेट सुनगा डिब्रा पानिमे फेंक दैत छि, शायद एकठ्ठा सिगरेट ओहिमे रँचन बँहक । ओ सिगरेटक कशे खाँचैत गंगाक धाबमे हिलैत – डोलैत सिगरेटक डिब्राक आगु जाएत देख बहरन ड़ेक आ ता धरि देखैत बहरन जा धरि ओ डिब्रा रिवरसु नै भेलै, ओ किछ उदास भऽ गेल जेना ओकर किछ अपन छुट्टि दुब चलि गेल होए ।

.. आ कि जेना ओकरा किछ कुराबन होए ओ अपन मोरौंगन देखैत छि कोनो होन नै आएन बँहक । ओ अपन झूथ पश्चिम दिस करैत छि, सुकज आपा डूरन छन आ आपा डुपब । ओ सिगरेटक अंतिम कशे खाँचैत सुकजके डूरैत देखैत बहरन, आ फेबसँ एक रैब मोरौंगन दिस देखैत छि, कोनो होन नै आएन बँहक, ओकर मोन राफन भऽ गेल आ ओ उठि डेवा दिस चलि दैत छि । डेवा गंगा कातसँ किछए दुरी पब छन । ओ रँवारँव सँमके गंगा कातमे स्थित छज्जा घाँट पब आरि रैस जाएत छन, ओकर मोनके ईहि ठाम किछ शांति भेटैत छन ।

.. डेवा पहुँचि, गेष्ट थोनि ओ अंदर कमबामे गेल पहिले रँवर फेब पंथाके चानु कऽ दैत छि, आ एक रैब अपन मोरौंगन देखैत छि कोनो होन नै आएन बँहक । फेब ओ कपड़ १ थोनि, डाँढ़मे गमछा नपट्टि राखकम जाएत छि, राखकमसँ आरि फेबसँ मोरौंगन देखैत छि, होन नै आएन बँहक । रँवरके रँद कऽ ओनैन पब पसवि जाएत छि .. किछ देब मोनमे अस्थिर कऽ सुतराक प्रयास करैत छि .. नीन आँधिसँ कोसो दुर .. मोरौंगन देखैत छि, कोनो नै आएन बँहक । किये, आथिब किये .. नीतू ओकरा होन नै कऽ बहरन ड़ेक .. शायद ओकरा रिसवि गेलै, नै ए नै भऽ सकैत छि ओ ओकरा नै रिसवि सकैत छि आ ओकरा दिमागमे सभलै पबना रात सीडी प्लायब जकाँ घुमऽ नागलै । जेना ए कोनके रात होए ओकरा मोरौंगन पब एकठ्ठा नरँवसँ होन एलै –

- हेलो (कोनो नज़कीक सुब बँहक)
- हाँ, हेलो, के
- हम अँजलि, आ अहाँ
- बाजरी, हम बाजरी छी .. अहाँ कतौ सँ बाजैत छी
- दबलंगा, आ अपन
- रौंग नरँव छि, ए पठना ड़ेक (आ बाजरी होन काँटि दैत ड़ेक)

किछए देब रौद फेबसँ होन आरैत ड़ेक बाजरी जा धरि होन उठैतह, होन काँटि जाएत ड़ेक .. ओ मिसकाँन बँहक । एलकसँ होन करैत छि, फेबसँ ओह नज़कीक सुब – । आ अहिना धीरे-धीरे होनक सिरसिरा शुक भऽ जाएत ड़ेक आ रात होरँ नागलैत ड़ेक । रौदमे ओ नज़की बाजरीसँ कहैत ड़ेक ओकर नाम अँजलि नै नीतू ड़ेक । किछए दिनमे रात रैसी होरँ नागल आ गप्पक अरपि रँद गेल आ एक दोसवास प्रेम भऽ गेलैक ।



धीरे-धीरे रात एते होरैत नागर कि बाजीरक काँजेज - कोटिंग, पढ़ १७ - निखाग
सब छुट्टि गेलैक आ जौ कहियो ओ काँजेज जेराँने सेहो चाहि नीतू ओकरा मना
करैत बँहक ।

रातक दबमियान दुनु भरिष्यमे रिराह कवरै आ मिनरैके प्रागाम रँनारैत बँहक ।
आग बाजीर रँहूत प्रसन्न छैक ओ नीतूसँ मिनर नैन दबभंगा जा बहर छैक ।
साँमके ७ रँजे दबभंगा पहुँचैत छैक आ भोजन कइ होठनमे एकठा कमवा तइ नैत
छैक । भोरे नीतू दबभंगा जागत छैक आ हजमा चौवाहा पब बाजीरके मिनरक
नैन रँजरेत छैक । बाजीर हजमा चौवाहा जागत छैक आ दुनूक मिनर हेधत
छैक । बाजीर देखराँमे ठीक ठीक बँहक नीतू सेहो सामान्य छरीह । राँठमे चरिते
चरिते नीतू बाजीरक हाथ पकड़ि नैत छैक , बाजीरके एकठा रिशेष प्रकारक
खनभूति होधत छैक , आथिब पहिन रँव कोनो हरती ओकर हाथ पकड़ने छैक । दुनु
होठनक कमवा धरि हाथ पकड़ि जाधत छैक , कमवामे जा गेष्ट खंदवसँ रँद कइ
नैत छैक । नीतू बाजीरक हाथ पकड़ि चूमि नैत छैक आ बाजीर ओकर ठोब पब
आ दुनु एक दोसवामे ओमवा जाधत छैक ।

मिनरक उपरांत रातचीतमे कोनो प्रकारक खंठव नै भेलैक आ दोराँवा मिनरक
प्रागाम रँनैत बहरै , संगे संग रिराहक प्रागाम सेहो रँनैत बहरै । आ कि एक
दिन नीतू , बाजीरसँ अपन रिराह कोनो आन ठाम तय होराँक समाद सुनारैत छैक ,
बाजीरक देहपब तइ जेना रिजरी खसि पड़न हेध । दुनु रँहूत कानैत खीजेत
छैक आ नीतू पहिने छुप भइ बाजीरके रँमारैत छैक -

“अहाँ नै कानू , हमर संपत । हम अहाँसँ राते नै करैत छरी । हम रिराहक
राँदो रात कवरै आ अहाँसँ मिनर । हयौ जान . . हमर देहे ठी नै ओकरा नग
बहलैक राँकि मोनमे अहाँ छी आ अहाँ बहरै । हम अहाँ ठी सँ प्रेम करैत छी आ
अहाँ ठी सँ करैत बहरै । अहाँके हमर संपत छुप भइ जाड नै कानू । ”

बाजीर कहना संपत मानि छुप भइ जाधत छैक । नगभग दु मासक राँद नीतूक
रिराह होधत छैक , रिराह दिन धरि रात ओहिना होधत बहर जेना होधत छन ।
रिराहत पवात बाजीर नीतूक फोन करैत छैक झुदा फोन रँद छैक , एक दिन , दु
दिन आ कि तेसर दिन ओकरा एकठा दोसब खनजान नरँवसँ मिसकान आरैत छैक ओ
फोन करैत छैक , दोसब दिससँ नीतूक सब आरैत छैक । रात होधत छैक ,
बाजीर रँहूत कानैत छैक , नीतू छुप कवारैत छैक , रँमारैत छैक । फोन बाखराँक
कानमे नीतू कहत छैक अहाँके जखन मिसकान कवरै तखने ठी फोन कवरै । किछु
दिन तक अहिना चलैत छैक ।

बाजीरके रँहूते दिक्कत होधत छैक , ओकरा मोन नै नागि बहर छैक । दिन तइ
कहना कष्टयो जाधत छैक बाति कष्टरँ झुकिन होधत छैक . . नीन सेहो नै होधत
छैक । नै भूख छैक , नै पास ।

चाबि दिनसँ फोन आएत रँद भेल छैक , तखन एक दिन बाजीर फोन करैत छैक ,
नीतू फोन नै उठावैत छैक । दोसब दिन बाजीर फेबसँ फोन करैत छैक , नीतू



उठैत छैक आ कहैत छैक - हमबा किये होन करैत छी , हमबा होन नै कब , हमब जिनगी किये रैबरोद कब चहैत छी , हमबा किये घबसै रौह कब चहैत छी , रिनय (ओकब पति)हमबा छोड़ि देत , हम कतौ क नै बहरै । जौं अहाँके हमबासँ प्रेम अछि त न होन कबन छोड़ि दियो , अहाँके हमब संपत होन नै कब । अ रात सुनिते मानू जेना बाजीरक देहमे आगि लागि गेल होए । जेना ओकब करेज पब कियौ पाथर मारि देने होए । ओकब मोन छूँटि जाएत छैक उ भोकावि पाड़ि क नै कानै छैक । आ ओहि दिन ओ प्रण करैत छैक चाहे प्रण कियेक नै निकलि जाय नेकिन नीतुक होन नै कबते । आ दर्दमे ओ दूरैत बह नै लागल , असगब कमबा रँद क नै बह नै लागल । धीरे धीरे ओकबा शिबारी सिंगरेष्ट गृथ्थाक हिंसक सेहो पड़ि गेलै ।

किछु दिन उपवाँत ओकबा पता चलेत छैक जे ओकब परीक्षा होरै रँदा छैक ओ कॉलेज पहुँचेत छैक । तखन नोष्टिस रौडि पब परीक्षाक सूचना देखैत छैक । हार्म भवराक लेन किवानी राँव नै जाएत छैक , तखन किवानी राँव एतेक दिनसँ अनुपस्थित बहराक काब प्रष्टैत छैथ , ओकब पितक होन नरैव लेत छैथ आ हार्म भवराके अनुमति नै दैत छथि । ओकबा किछ नै बुवायत अछि कि की करी , आ की नै ? ओ रँद प्रयास करैत छैक हार्म नै भवि पारैत छैक । ओकब पवाते ओकबा घबसै होन आरैत छैक , होन पब ओकब पिता छनथिन्ह आ रँदते क्षाप्त सेहो छनथिन्ह । ओकब पिता बाजीरसँ कहथिन्ह-

" हम दुनू प्रणी अपन पेष्ट काष्ट तोबा पाग भेजेत छलौं आ तू नै कॉलेज जाएत छलैथ आ नग पठैत छलैथ । कानि तोहब कॉलेजक किवानी राँव होन पब कहनाह जे तू छ माहसँ कॉलेज नै जाएत छलैथ आ देवसँ जेराक काब राँविक परीक्षाक हार्म नै भवि सकनेथ , से आगसँ तू अलग हम अलग । आरँ हम तोबा एक नया पाग नै देरौ " ।

एतेक सुनि बाजीरक जेना पैव तोबसँ धवती थिसकि जाएत छैक , ओकब कँठ सुख नै लागैत छैक , देह छूँटि बहल छैक । मोन कानि बहल छैक , आँखिमे नोब नै छैक , झँह पीयब लागैत छैक । उ मोरांगनमे समय देखैत छैक बातिक तीन राँजि बहल छैक , एक आठ रँजे सँमसँ उ स्वतंत्र प्रयास क नै बहल छैक हार्म नीन कोसो दूर छैक । आ कि एक रँव फेबसँ मोरांगन देखैत छैक , कोनो होन नै आएन बँह । ओकबा रिश्यास छैक नीतु होन जकब कबतीह आ जा धवि ओकब जिनगी छैक उ नीतुक होनक राँठ जोहित बहत हार्म होन आएन आग मास भविसँ रँसी भेल छैक ।



ई कनापब अपन मतर ggaj_endr_a@videha.com पब पठाउ ।



डॉ०खरुष कमार सिंह, जे० आब० पी०- मैथिली भावतीय भाषाँ का भाषावेज्ञानिक साधिका मकाय, भावतीय भाषा मस्थान, मैसूर (कनठिक)

अभिकवनामेक/मगनशामेक (Computational) मैथिली रूकवण

प्राचीन कालसँ भाषाक सौदृश्यता पब चिन्तकक नजरि बहन अछि । आग भाषा-अध्ययनक एहि पवम्पवापक सूक्ष्ममे परिवर्तन आबत अछि । एकब अनुसारेँ भाषामे सौदृश्यता एर प्रयोजनमूलकतक भार पुनियोजित करै पौदा कएत जाए बहन अछि । भाषाक अएह रँदनेत भूमिकाक कारणें रूकवणक सूक्ष्म एर उद्देश्यमे परिवर्तन हेएरँ स्वाभाविके अछि । किछ चुनन शिछ, प्रयोग आओव राकार्के सूचीरँह कवरसँ नए कए भाषाक साँगोपाँग गंभीर रिरेशन धरि रूकवणक रिसुवा मानत जाए सकैत अछि । कोनो भाषाक प्रयोग-स्फेद भनहि सीमात बहन हूए पबच ओकब उपयोगिताकेँ नए कए कहियो रिराद नहि बहन अछि । आरँ प्रश्न उठैत अछि जे रूकवणक उपयोगिता का अछि ? छोट-छोट नैना नाहिठामे अपन घब-परिवारमे राजए रँना भाषा सीख लेत अछि । जारँत धरि कोनो नैनाकेँ ओकब मात्रभाषाक रूकवणक औपचारिक जानकारी देत जाएत अछि, तारँत धरि ओ नैना ओहि भाषाक ररहावमे दम्भ भए चुकत बँहछ । एहना स्थितिमे ओ प्रश्न उठैरँ स्वाभाविके अछि जे रूकवणक आरंभकता की अछि ? एहि प्रश्नक प्रबुधमे महर्षि पतंजलि महाभाषामे रूकवणक प्रयोजन रँतरैत कहैत छथि-

“ कानि पुनः शिरदानुशासनस्य प्रयोजनानि ? वस्त्रोहागमनप्रसदेहाः प्रयोजनम् ” अर्थात् वस्त्रा, ङुह, आगम, नयू एरँ अरुसदेह यैह पाँचठौ रूकवणक प्रयोजन अछि ।

वस्त्रासँ तापर्य अछि- रेदक वस्त्रा, यथा

“वस्त्रार्थ रेदना” मन्त्राय रूकवण ।



त्रोपागमरर्णरिकावत्रा हि समाग् रेदान्

पविपाविष्यतीति । ”

अथार्ति त्रोप, आगम, आदेशिक राकवर्णक प्रक्रियाक जिनका त्रान बहत ढुहि सैह रेदक शुद्ध कपसँ बम्का कए सकैत ढुथि ।

संदर्भक अनुसाव समुचित शिष्टक कम्पना कवरँ एर तदनुकप ओकव ररहाव कवरँ ढुहक कोष्टिमे बाखन गेल अछि ।

आगमक अनुसारँ मानर गेल अछि जे राकवर्ण पद आ पदार्थक त्रानक उपवानु राका आओव पदार्थक त्रान प्राप्त कबएमे सहायक होगछ । नर-नर राकाक उपोदन एर प्रयोग आगमक कावणँ सँभर होगत अछि ।

नयूसँ तापर्य अछि जे किछ सँमित नियमक सहयोगसँ सम्पूर्ण भाषाक त्रान प्राप्त कएन जा सकैत अछि । किँकत कोनो भाषाक रिपुन शिष्ट-भन्दावकँ कँष्ट नहि कएन जाय सकैत अछि । एनामे ङ भाषा शिक्षणमे उपयोगी होगछ ।

असंदेहसँ तापर्य अछि जे भाषाक संवचनागत सदिधताक स्थितिमे राकवर्णक त्रान ओकव निरावर्ण करैत अछि ।

राकवर्णक एहि प्रयोजनकँ देखन जायतँ एहिमे राकवर्णकँ एकठा साधनक कपमे देखन गेल अछि । एकठा तथा गहो स्त्रीकावरँ आरथक अछि जे महाभाषामे रर्णित स्थित सँ आजुक भाषिक परिवर्षे रँडु रँसी भिन्न भए गेल अछि । एकरे पविषाम अछि जे रर्तमान समयमे अतिकनानामेक राकवर्णक संकम्पना प्रासागिक अछि ।

जँ भाषाकँ एकगोष्ट ररररहाक कपमे अतिहित कएन गेल अछि तँ निश्चित कपसँ राकवर्ण ओहि भाषिक ररररहाक तार्किक आधाव गठित अछि । कोनो भाषा अपन रिकशि-क्रममे निबन्तुव परिवर्तनशील बहत अछि । सँभर अछि जे एहि परिवर्तनक गति कम हो, पर्वच भाषामे आधर आंशिक रँदनार स्वर्य भाषाक सजीरता नेल अपविहार्य होगछ । भाषामे रापु एहि रिकासक गतिशीलताक स्रभारक रँदो एक आदर्श राकवर्णसँ अपेम्का कएन जागत अछि जे ओ ओहि भाषाकँ समग्र कर्पे रिश्लेषित एर निकपित कए सकय । अतिकनानामेक राकवर्णक नेल मानरक भाषाङ अनुप्रयोगक स्रकप, भाषिक समाजक रिकासक गलामेक कप तथा भाषाक प्रायोगिक सुबक मुन स्थिति पव नर कर्पे रिचाव कवरँ प्रासागिक भए जागत अछि । आजुक सामाजिक परिवर्षे ङद्यागिक-कृति एर सूचनाकृति रीचक स्थितिक साम्का रँनर अछि । एहि स्थितिक दरँरस्रकप जे भाषा मानर एर मानरक रीच सरादक माधम अछि रँह भाषा आग मानर एर कम्पुठवक रीच सराद स्थापित कवरँक नेल तपेव अछि । दवअसन यैह ओ स्थिति अछि जाहिमे अतिकनानामेक राकवर्णक पृष्ठभूमि तैयाव कए बहन अछि ।



अभिकलानामेक र्नाकवर्णक आशिय ओहि र्नाकवर्णसँ अछि जकवा माधामे प्राप्तातिक भाषाकेँ कम्प्युटरक माधामसँ बुनन जा सकैछ । एकवा सँगहि र्नाकवर्ण होएँरौक कावर्णै एकवासँ गहो अपेक्षा कएन जागत अछि जे ङ एतँरौ रैत्रानिक एरँ परिपूर्ण हो जे एकव नियमक द्वारा कम्प्युटरक माधामसँ प्राप्तातिक भाषाक नर-नर र्नाकक सृजन कएन जाय सकय । कलम्लकप ङ र्नाकवर्ण मानर-मशीन अंतवापृष्ठक समय अपन भूमिकाक निरहन कय सकय । भाषा-कम्प्युटरिङक लेन ङ आदर्श स्थिति होएत जे एहन अभिकलानामेक र्नाकवर्णक रिकस कएन जाय सकय जे प्राप्तातिक भाषाक सब संवचनाक तार्किक रिश्लेषण प्रस्तुत कय सकय । एकव तालेनिक नाभ ङ होएत जे भाषा-प्रौद्योगिकीक रिभिन्न अन्वप्रयोग जेना- मशीनी अन्वराद, सूचना-प्रदानयन, सूचना- संचयन, र्नाकवर्ण जाँचक, पाठ-रिश्लेषण आदिक रिकसमे दीर्घकालिक समाधान उपरछ भए सकय । एहि स्केत्रमे भए बहन शोधक वस्त्र सेहो यैह अछि ; झुदा रतमान समयमे भाषाक छेष्ट-छेष्ट संवचने पब शोधार्थीसभक ध्यान केन्द्रित अछि । एहि कावर्णै कप-रिश्लेषण (Morph Analysis), टैगिंग (Tagging), आ पदानिकपण (Parsing)क सुत्रे धवि ध्यान केन्द्रित भए सकन अछि आओव एहिमे सफलता सेहो भैठेन अछि । आरशयकता एहि रौतक अछि जे प्राप्तातिक भाषाकेँ आपाव रँना कय एहन नियम रिकसित कएन जाय जे नहि तँ मात्र कम्प्युटरमे सहज स्वीकार्य हो, रँन्कि प्राप्तातिक भाषा पब केन्द्रित भाषा-प्रौद्योगिकीय वस्त्राकेँ सेहो प्राप्त कएन जा सकय ।

ङ सररिदित तथा अछि जे कम्प्युटरक प्रचातन-रारस्था मूरतः द्वयक प्रणारी (Binary System : 0 & 1) पब निर्भव अछि आ ठीक एकव रिपरीत मानरीय भाषामे अस्स्था शिष्ट-संपदा एरँ अनेक तबहक र्नाक संवचना अछि । आरँ प्रश्न उठैछ जे मानर-कम्प्युटरमे सराद कोना संभर होएत ? गएह महत्वाकांक्षा मानरकेँ प्रविम मेधा (Artificial Intelligence)क स्केत्रक अंतज्ञात शोधक लेन प्रेषित करैत अछि । एहिमे मूर समस्या ङ अछि जे मानर-मशीन अंतवापृष्ठ (Interface)मे एक दिस मानर होगछ जे अपन असीम शिष्ट-संपदा एरँ भारना, चेतना सदृश अनेक मानरीय ग्णसँ भवन होगछ तँ ओहिठाम दोसव दिस मशीन होगछ जे एकठे सुत्र उपकवण मात्र अछि । एहन स्थितिमे मानरीय भाषासँ सराद रैसा पायर कठिन बुनन जा बहन अछि । तथापि रतमानमे भए बहन शोध भविष्यमे की वंग नायत एहि पब आशीतीत दृष्टि बाखरँ सह ठीक बहत । रँवहन यैह ओ स्थिति अछि, जकव कावण अभिकलानामेक र्नाकवर्णक आरथकता महसूस कएन जाय बहन अछि ।

अभिकलानामेक र्नाकवर्णक संकल्पना नर अछि एरँ अथन धवि कोनो स्पीक अभिकलानामेक र्नाकवर्णक रिकस नहि कएन जाय सकन अछि । झुदा सामान्य र्नाकवर्ण एरँ अभिकलानामेक र्नाकवर्णमे र्नापु अंतवकेँ संकल्पनामेक कपसँ एतय उद्घाष्टित कएन जाय बहन अछि । यथा- सामान्य र्नाकवर्ण मानरीय रारहावक लेन होगत अछि । अभिकलानामेक र्नाकवर्ण कम्प्युटरक माधामसँ मानरीय रारहावक लेन होगत अछि । सामान्य र्नाकवर्ण प्राप्तातिक भाषा की अछि ? कियेक अछि ? सदृश प्रश्नक पड़तार



करैत छि। अभिकलनामेक र्नाकवण प्राप्तातिक भाषा कौना काज करैत छि ?
सदृश प्रश्नक जाँच-पड़तार करैत छि। सामान्य र्नाकवण सहज एरँ मौलिक होगत
छि। अभिकलनामेक र्नाकवण 'सामान्य र्नाकवण' सँ उर्जा ग्रहण करैत निताँत द्वित्रिम
होएत। सामान्य र्नाकवण अपन स्वरूपमे र्नापक भए सकैछ। अभिकलनामेक र्नाकवण
स्पष्ट, एकनिष्ठ, एरँ वक्ष्य केन्द्रित होएत। सामान्य र्नाकवणक उद्देश्य मूल रूपसँ
मानरकें नाभ पङ्चाएरँ होगत छि। अभिकलनामेक र्नाकवणक उद्देश्य अपन रिभिन्न
उपोदक माधमसँ मानरकें नाभ पङ्चाएरँ होगत छि। सामान्य र्नाकवण प्रस्तुतीकरणमे
ए सहज होगत छि। अभिकलनामेक र्नाकवणक प्रस्तुतीकरणमे गणितीय होगत
छि, जकरा कम्प्यूटर स्रिकाव कए सकए।

चामस्की र्नाकवणकें 'भाषाक तर्कशास्त्र' कहलन्हि छि। र्नाकवणक उद्देश्यकें
स्पष्ट करैत चामस्की कहलन्हि छि जे 'र्नाकवण ओह होएरँक चाही जकरा द्वावा भाषाक
सभ र्नाकक र्णन आओर सृजन कएन जाए सकय।' आरँ एतय अभिकलनामेक
र्नाकवणमे जे नर प्रसंग जुड़ैत छि ओ एकव कम्प्यूटरवापेस्की होएरँ छि।
अभिकलनामेक र्नाकवणक उद्देश्य मूलतः 'प्राप्तातिक भाषासमाधनक संकल्पनाकें सार्थक
एरँ सफल रँनाएरँ छि आओर एहिमे अभिकलनामेक र्नाकवण साधनक रूपमे प्रयाज
होगछ। जखनकि एकव साधन परास्त्र रूपसँ 'प्राप्तातिक भाषा समाधन' छि। एहने
स्वरूपमे अभिकलनामेक र्नाकवणसँ अपेक्षा कएन जागत छि जे ओ भाषाकें रैत्रानिक
ठ 'ग'सँ रिश्लेषित एरँ सर्जित कए सकय, जे कम्प्यूटरवापेस्की हो। आरँ रिचावणीय ए
छि जे 'प्राप्तातिक भाषा समाधनक संकल्पना' स्रयामे एक र्नापक संकल्पना छि आओर
दोसव जे एहिमे प्रयाज र्नाकवण सेहो अपन स्वरूपमे र्नापके होएत। कियेक तँ
आओर कौष निर्माणसँ तए कए पाठ-निर्माण धरि सरँमे प्राप्तातिक भाषाक कोडीकरणक
आरंभकता पड़ैत छि। एहि सरँके कम्प्यूटेशनल र्नाकवण कहरँ सह उचित होएत।
एहि स्थितिमे अभिकलनामेक र्नाकवणक मूल उद्देश्य तँ प्राप्तातिक भाषाकें एहि तवरँ
सूत्ररूढ (Formulized) कवरँक छि जाहिसँ कम्प्यूटर एकव स्रिकाव कए सकय।
एकव परिणामस्वरूप प्राप्तातिक भाषा समाधनक क्षेत्रक रिभिन्न वक्ष्य मशीनी अनुवाद (Machine Translation), सूचना प्रदानयन (Information Retrieval), र्नाक-संश्लेषण (Speech Synthesis),
शेड-समाधन (Word Processing), दृश्य-समाधन (Visual Processing) तथा
ज्ञान-निकषण (Knowledge Representation) आदि रूपा रिन्दु अध्यायनक क्षेत्र
सोममे आरँ बहर छि जकरा रूपा उद्देश्य कम्प्यूटरक सापेक्ष भाषा-प्रजनन कवरँ
तथा मानर-मस्तिष्कक सापेक्ष भाषा-रौध कवाएरँ छि। एहि र्नाकवणमे ओहो पायन
गेन छि जे भिन्न-भिन्न उपकरणसभमे एके तथ्याकें अलग-अलग ठगसँ केन्द्रास्थित
कएन जागत छि। जेना- मशीनी अनुवाद प्रणालीमे वक्ष्य-भाषा पदनिकषण
(Parsing) तथा श्रात-भाषाकें सर्जित (Generation) कएन जागत छि। एहिमे
एकेठा नियम- 'र्नाक= संज्ञापदरंध+ क्रियापदरंधक उद्देश्य वक्ष्य भाषाकें रिश्लेषित



कवर होगत छि । जखनकि श्रात भाषाक एकव समतुता निर्माण कवर होगत छि । एहि सूचना-प्रदानयनमे पदनिकपणक आधार मुन पद होगत छि । एकव आधार पव प्रणालीके सूचीकृति सूचनाक सटीक मितान कवर होगत छि । एकव र्णाकवणक स्वरूप मशीनी अनुवादमे पदनिकपणक नियमसें भिन्न होगत । एहि तवरें अन्य उपकरण सभमे अलग-अलग प्रक्रियाक तहत एकव उद्देश्य भिन्न रा एकवा कोडीकृत कवरोंक तबीका भिन्न भए सकैत छि ।

अभिकलानामेक र्णाकवणक स्थिति एर महत्त्वके देखैत जँ गतीवतासें रिचाव कएन जाय तँ स्पष्ट होगत जे सन्दर्भक अनुसार छोट-छोट नियमसें काज निकारन जा बहन छि । जाहिमे सरप्रथम कपर्के चिन्हरे आओर एकव रिश्लेषण कएन जागत छि । एहि क्रममे पदक र्णाकवणक कोष्टिक निर्धारण कएन जागत छि, जकरा टैगिंग (Tagging) कहन जागत छि । एकरा नेन आरथक होगत छि जे र्णाकवणक कोष्टि एर ओकर गुण (Attributes)क आधार पव एकठा पहिनहिसें तैयार टैग-सेट (Tag-Set) हो । मैथिलीक नेन एतय एकठा टैग-सेट (Tag-Set) देन जा बहन छि जकर श्रात LDC-IL, GIL, Mysoreमे हमरा द्वारा कएन जाए बहन काजक छि ।

Sl. No	Category		Label	Examples	Remarks
	Main Category	Sub Category			
1	Noun		N		
1.1		Common	NN	पोखी, कलम, पडित, खराम	
1.2		Proper	NNP	बजन, दिनेशी, अतुन	
1.3		Noc	NST	आगु, पीछ, डुपव, नीचा	
2	Pronoun		PR		
2.1		Personal	PRP	तौ, हम, ओ, ओ	
2.2		Reflexive	PRF	अपना, अपने, स्वयं	
2.3		Relative	PRL	जे, जिनका, जिनकर, जकरा	
2.4		Reciprocal	PRC	एक-दोसबके, आपस, पवस्पर	
2.5		Wh-word	PRQ	के, की, कथी ककर	
2.6		Indefinite	PRI	केओ, किछ, किउछ	



3	Demonstrative		DM		
3.1		Deictic	DMD	अ, उ, खहाँ, हम	
3.2		Relative	DVR	जे, जाहि	
3.3		Wh-word	DMQ	के, की, कोन	
3.4		Indefinite	DM	केउ, किछु/ किउछु, कोनो	
4	Verb		VM		
4.1		Main	VM	देख, पढ़, पी, गा, ले, उठ, था	
4.2		Auxiliary	VAUX	अछि, छी, छल, छथि, छलाह, बहत, होएँ, थिक	
4.3		Gerund	VGN	घोएँ, पीएँ, दौबरँ, नहाएँ	
4.4		Causative Verb	VCT	मबरौएँ, डबरौएँ, नदरौएँ, लिखरौएँ, दूररौएँ	
4.5		Compound Verb	CVP	माबरँ-पीएँ, काँ-छाँ, कानरँ-खीजँ, धब-पकब	
5	Adjective		Adj		
6	Adverb		Adv		
				बने, खनायास, क्रमशः, एकाएक, एहन	
7	Postposition		PSP		
				सँ, केँ, जेन	
8	Conjunction		CC		
8.1		Co-ordinator	CCD	आओव, पर्वच, झुदा, रा, आ	
8.2		Subordinator	CCS	जँ, तँ, जे	
9	Particles		PP		
9.1		Default	RPD	भवि, यौ, नौ, लौ	
9.2		Classifier	CL	ठा, गोष्ट, गो, ठो	
9.3		Interjection	INJ	ओह-ओ, खहा, राह, हा	



9.4		Intensi f i er	INT F	रैहूत, रैसी, सरैसँ	
9.5		Negat i on	NEG	नहि, डुहूँ, न	
10	Quant i f i e r s		QT		
10.1		Gener al	QTF	कनेक, रैहूत, किछ	
10.2		Car di nal s	QTC	एक, एकठा, दूझा, रीसगोष्ट, तीन, चाबि	
10.3		Or di nal s	QTO	पहिन, दोसब, तेसब, चाबिम	
11	Resi dual s		RD		
11.1		For ei gn wor d	RDF		A word written in script other than the script of the original text
11.2		Symbol	SYM	\$, , *, (,)	For symbol s such as \$, & et c
11.3		Punct uat i on	PUN C	., : ;	Only f or punct uat i ons
11.4		Unknown	UNK		A word written in script other than the script of the



					original text
11. 5		Echo words	ECH	जलथे- (तलथे), मेष्टि- (सेष्टि)	

This POS tag set for Maithili Prepared by: Dr. Arun Kumar Singh, JRP, Maithili, LDC-I L, C I L

अपन योजनाक अनुकप षैग-सेष्टक निर्माण कएल जागत अछि । षैग-सेष्टक लेल प्राथमिकता होगत अछि जे ङ रैष्ठानिक, रिस्तुत, योजना-केन्द्रितक सर्ग-सर्ग अनुप्रयोग रिशेषक तैयारीक अनुकुर सेहो हो । कपक आपाव पब षैगिग सर्गिक लोकप्रिय प्रक्रिया अछि, झुदा योजनाक अनुकप पदरूप एर राक्यक सेहो आर षैगिग होगत अछि । एकवा सर्ग-सर्ग प्राज्ञिक सेहो आर षैगिग होमए लागल अछि ।

अभिकरनामेक राकवणक निर्माणक चकामे पदनिकपण(Parsing) एकगोष्ठ महत्वपूर्ण पढ़ार होगत अछि । एहिमे पदक अंतिम रारहार्यताक अनुसाव राक्यक रिश्लेषण होगत अछि । प्रायः एकव रौदक रिश्लेषणकेँ वृष्कारेथक दृष्टिसेँ निर्धारित कए देल जागत अछि । एकवा नियमरूप कवरौक लेल कोनो कपरादक आपाव लेल जागत अछि कि एकतँ रिश्लेषण चकामे एर रैष्ठानिक भए सकए । पदनिकपण अनेक सुब पब शुक होगत अछि आ एकरे अनुकप एकव रगीकवण कएल जागत अछि । ङ कथनो रौमसँ शुक भए कए दहिन दिस तँ कथनो दहिनसँ रौम दिस जागत अछि । एकरे समानानुब ङ उपवसँ नीचा एर नीचासँ उपव दिस काज करैत अछि । ङ रहुत किछ भाषाक प्रकृति पब निर्भव होगत अछि । मैथिली सदृश क्रिया केन्द्रित भाषामे पदनिकपणक प्रक्रिया प्रायः क्रियेसँ शुक होगत अछि । ङ स्वरिपाजनक अछि कि एकतँ क्रियापदमे अधिकतम राकवणिक सूचना भेष्टि जागत अछि, जकव आपाव पब एक सम्म पदनिकपण प्रणालीक विकास कएल जाए सकैत अछि ।

अभिकरनामेक राकवणमे पूर्णनिर्धारित षैगसँ पदकेँ चिह्नित कएल जागत अछि, तपेष्ठात ओकव भाषा-सर्वचनाक अनुकप प्रायः राक्य केन्द्रित रिश्लेषण कएल जागत अछि । एहि आपाव पब प्रयास कएल जागत अछि जे एहन राकवणिक नियम तैयार कएल जाय जाहिसँ सम्पूर्ण सर्वचनाक रिश्लेषण भए सकय । रारहावमे पदनिकपणक प्रक्रिया एक एहन चकामे कपमे अरैत अछि जतए एहि नियमक परीक्षण होगत जागत अछि । जँ रैनल नियमसँ राक्यक पदनिकपण सही लेल अछि तँ ङ एहि रौतक द्यातक अछि जे एहि सुब धरिक नियम तैयार भए गेल अछि । एही प्रकारे सम्पूर्ण भाषाक रिश्लेषण आओर ओकव अनुकप नियमक गृह रैनैरौक प्रक्रिये अभिकरनामेक राकवणमक निर्माणक प्रक्रिया होएत ।



संदर्भिका

मैथिली

1. ग्रियर्सन, ज.ए., भावतक भाषा सर्वेक्षण(मैथिली), मैथिली अकादमी, पठना, **1978**
2. मिश्र, डा. धीरेन्द्र नाथ, मैथिली भाषा शास्त्र, भरानी प्रकाशिन, झुसल्लहपुर, पठना, **1986**
3. ग्रियर्सन, ज.ए., मैथिली र्नाकषा, सम्पादक, डा. बमानंद ना 'बमण', अनुवादक, पं. गोरिनंद ना, चेतना समिति, पठना, **2011**
4. ना, पं. गोरिनंद, मैथिली पविशीतन, मैथिली अकादमी, पठना, **2007**
5. ना, दीनरंजु, मिथिला भाषा रिद्व्यातन, मैथिली साहित्य पविषद, दबभंगा, **1946**
6. मिश्र, नरोनाथ, मैथिली भाषा रिद्वान, मिथिला प्रसुतक केन्द्र, दबभंगा, **1984**

हिंदी

1. ना, पं. गोरिनंद, मैथिली भाषा का रििकास, रिहाव हिंदी त्रंथ अकादमी, पठना, **1974**
2. क्माव, सुरेश, शिछ, अध्यायन ँव समझाई, केन्द्रिय हिंदी संस्थान, आगवा, **1990**
3. गुप्ता, मनोबमा, भाषा अधिगम, केन्द्रिय हिंदी संस्थान, आगवा, **1995**
4. जैन, रूषभ प्रसाद, अनुवाद ँव मशीनी अनुवाद, सावाशि प्रकाशिन, नञ्ज दिल्ली, **1995**
5. तिरावी, भोलानाथ, आधुनिक भाषा रिद्वान, लिपि प्रकाशिन, नञ्ज दिल्ली, **1985**
6. मलहोत्रा, रिजय क्माव, कम्प्यूटर के भाषिक अनुप्रयोग, राणी प्रकाशिन, नञ्ज दिल्ली, **2002**



7. सिंह, सुब्रजलान, अमथेजो-हिंदी अनुवाद श्रमकर्म, प्रभात प्रकाशिन, नग्न दिल्ली,
2003

8. त्रिपाठी, अविमर्दन कुमार, भाषा के समकालीन संदर्भ, साहित्य संगम,
गुवाहाटी, 2012

अथेजो

1. Allen, James, Natural Language Understandings, Second Edition, Pearson Education, Singapore, 2005
2. Atkins, B. T. S. and A. Zampolli, Edited, Computational Approaches to the Lexicon, Oxford University Press, New York, 1984
3. Meadow, Charles T., Man-Machine Communication, John Wiley & Sons, New York, 1970
4. Rajpurhiti, B. B., Technology and Languages, Central Institute of Indian Languages, Mysore, 1994
5. Sampson, Geoffrey, Natural Language as a Special Case of Programming Language, American Journal of Computational Linguistics, Microfilm-25, 1975
6. Grierson, George A. An Introduction to The Maithili Language of North Bihar, Part 1, Grammar, Calcutta, Asiatic Society of Bengal, 1881
7. Jha, Subhadra, A Survey of Maithili Literature, Luzac & Company, LTD, A6, Great Russell Street, London W.C. 1., 1958
8. Yadav, Ramawatari, A Reference Grammar of Maithili, Munshiram Manoharlal Publisher Pvt. Ltd., Post Box 571554 Rani Jhansi Road, New Delhi, 1997



ई बचनापब अपन मंतर ggaj_endr_a@videha.com पब पठाउ ।



१. खनामिका बाज- रिहनि कथा- सीमा/ २. आशीष खनटिन्हार- रिहनि कथा- खाए रैना पाछी



१.



खनामिका बाज

रिहनि कथा

सीमा

रैहूतो दिनक जित्तासा शान्त नै भेल छल, तही समयमे सुनलौ- रैष्टीकेँ हमब सम्पत्ति
की मतलब, ओ तँ पवाया धन छल ।

हमब माँ पापा हमबा सब भाग-रैहिनकेँ एके बग पटेलथि, जे ओ सब भरिषामे
सुखसँ जिएथ ।

ओ दहेज रिवोपी छथि । झुदा रिश्ताहमे रैहूतो चीज उपहावमे दह कइ अपन उदाव
छंदएक प्रिय देलनि, भाग सब सेहो रैहू पियाव देलक ।

अही सब कहू एहेन भवत-प्रवत संपत्ति आ बृगधरना परिवारमे सेहो रैष्टीक सल्लुकेँ
एगो सीमामे रैहिनकेँ देखल जाग छै ।



की रैष्टीक रिखाहक रौद कोनो भरिया नै होथ डै, की ओकव रौद ओकवा जीरन जीरा
नेन सम्पति आ सहयोग नै चाही ?

रिखाहक रौद नेहक सीमा रौद भ२ जाथ डै ।

२



आशीष अनचिन्हार

रिहनि कथा

थाए रौना पार्टी

आथ साँममे रहु दिनक पछाति भोजन रौनेरौक अरसब भैठन । पिता श्री आ माँमिन
भाएकै पछुनिखहि जे की थैरै ?

अरे भाग तो जे आगुमे देरौरी से था नैरै । हम सब तँ थाए रौना पार्टी छी ...

आ ओही बातमे हम सपना देखनहुँ जे हमब पिता श्री आ माँमिन भाए नेता रौनि क
मंचपब छथि आ राजनीतिक पार्टी रौनेरौक घोषणा क बहन छथि ।



ई कनापब अपन मतिर ggaj_endr_a@videha.com पब पठाउ ।



जगदानन्द मा 'मन्त्र' - ३८१ बिहनि कथा
ग्राम पोस्ट - हबिप्रब डीहठेन, मधुबनी

१. उपहार

“अहाँ हमबा सनेसमे की देर ?”

“हम दर्प की सके छी ? हमबा लग अछि की ? मात्र सिनेह अछि, प्रेम अछि
अहाँक नेन शुभकामना अछि । पाग तँ नहि अछि झुदा पिछाव दए सके छी सम्मान दए
सके छी ।”

“रस । रस । हमबा अओब किछ नहि चाही । अहाँक ओ पिछाव अहाँक सिनेह अहाँक
शुभकामना एकव कोनो मोन नहि अछि ओ तँ अनमोन अछि । अहाँ भेटै गेबहुँ हमबा
दुनियाँक सब खुशी भेटै गेल ।”

२. नीक

“अहाँसँ भेटै कए क२ हमबा एतेक नीक किएक लगैए ।”

“किएक तँ अहाँसँ भेटै कए क२ हमरो रँडु नीक लगैए ।”

३. पिछाव

“जे हमबासँ पिछाव कबत ओ हमब मोन मे दर्पण जकाँ देख सकैत अछि आ हम
ओकब आँखिमे हवा कए अपनाकेँ रिसैब सकैत छी ।”



४. कनियाँ दाग

अपन दियादनीमे सबसँ छोट बहना कावणो कनियाँ आ एखन सबक दाग तै दनु मिन कए कनियाँ दाग । अपन अरुआकेँ अपनासँ पाछु छोरैत एखन साठि रैखिक अरुआमे चंचलता आ हाजिब जरारीमे कोनो अंतब नहि । केशेरक पाँचो भागक उपनेन । आगु आगु पाँचो रैकथा पाछु छोरैत पिपरी रैजैत बमनगर दृष्ट । कनियाँ दाग एहि अरुसबपब कतौ अपन रास्तुताकेँ कावणो देवी भए गेली । हवरबागत दौरेत अँगना पङ्कक छेष्टामे छोट पिप रैकथा केशेरसँ आमने सामने ठकवा गेली । अपनाकेँ सम्हारैत मठसँ, “बूढ़ यीसँ ठकवा कए की भेटैतो कोनो छोटि सँ ठकवाथ तँ किछु भेटैरौ कबतौ ।”

हनुक गप्प सुनि सबक झूँसँ हँसीक ठहाका छुटै गेल ।

५. मोसी

पहिल सखी, “गे दैया । आ तँ रौस जकाँ पातब छथि ।”

दोसब सखी, “यो ओमाजी आ केहन देह रैनोने छी ।”

तेसब सखी, “तगैए माए दुध नहि पीएकनि ।”

चाबीम सखी, “हाँ यो ओमाजी, माए रिशुकि गेल बहथि की ।”

पाचम सखी, “नै गै हिनकब माए दुध रैँटे छथिन ।”

सब एक सँगे, “हा हा हा”

नरका ओमाजी, बातिमे राह भेलन्हि आ आग रैकपहब कनियाँक सखीसभ चाक कातसँ घेब कए हँसी छिठौली कबति । ओमाजी रौक जकाँ सरँथ सुनेत ।

एकठ्ठा सखी फेबसँ, “तगैए हिनकब माए रैजहो नहि सिखेलथिन ।”

ओमाजी कनीक झूँह उठा कए, “आरँ एतेक बास मोसी तग कोना रौजू ।”

सब सखी एक सँगे, “मोसी । मोसी कोना ।”



उन्नाजी, “अहाँ सबकेँ हमब माएक सब गप्प बुँनन अछि अर्थात हमब माएक सर्गि सब छी तँ एहि हिसारें अपने सब भेलहुँ ने हमब मौसी ।”

ई कनापब अपन मतर ggaj_endr a@vi deha.com पब पठाउ ।



१. बरि भूषण पाठक- तीन ठा रिहनि कथा २. मो. असबह- रिहनि कथा-शेहबीया घबराव



१



बरि भूषण पाठक

तीन ठा रिहनि कथा

१ ओग सार

ओग सार जे भेलै से कमाले-कमार । मर्छ-अर्पीर मे एते आबु उपजलै जे पूवा खेत-खरिहान आ घब सर मरक लागलै । घब मे टोकी क नीछा कोठी लग भनसा घब सौसे बुँनु जे आबुए-आबु । एतरे नग भानसक मेजने रदनन । भुजिये आ बसदारे नग पापड़ तिलोवी सेहो आबुए क आ एक दिन ब्रत केनौ त आबु मे दुध गुड़ि के भेलैर ,बातियो मे आबु आ दहीक मिनन-जूनन भोजन ।

रौप रौप गवमी पड़लै ,गजरे गवमी । आदमी गाढ तब ,दूकथा आ पोखवि-गाढी जाए बुँनु जे गर्जी-अंगा घामे सँ भिजि जाए । जनार-कर सेहो पस्त आ पोखवि-



नदी तक सुकथन, रंगनक गाम मे एकठे जनाव बहे आ मनरोधन राबू क दिनदारी कि एक-एक डोल पानि सरके दैत बहरथिन ।

आ रस महीना दिन राद ओमहव रांगमती आ ओमहव करेह तोड़ि देनके । हमव पीठ १ त राठि देखरे नग केने छले, से रहु ब्याहुर भ के पानि के संगत कवरौक लेन शिराजीनगव दिस रिदा भ गेल । आ पानि बसे-बसे खता, नारा सर के भरेत बहे, आराजो मछिम । एमहव गामक रूठ-पुवां सर सडसठ एसरीक राठिक निशान ठू बहेत बहथिन, केओ कहथिन जे पानि एत तक आयत, तकेओ कहथिन जे पानि एत तक । केओ ओ कहथिन जे पानि दस दिन त केओ पनबह दिन तक बहरौक रात कवथिन । किछु गोष्ठी त घरे मे माछ मावरौक सपना देख लागला । झुदा पानि जखन एले त अपन गति अपन मात्रा संग आ पुवा गाम डुरि गेलै, गाम मे एकेठे दूमहवा आ डाकूँव साहेर अपन ओज्जत दूमहवाक छत पव रैसि रैचेला । बानीपवती, सरहा, रैनडीहा आ जोगिया सन कतेको छोट छैन डीहछैनक पुवनका पीमका पव शिषा लेनक । आ पानि बहि गेलै दु महीना । ओ पानि नीक जमाए नग छले कि सम्बक जेरी आ चिन्हावक बंग पव बंग धरै, ओ बहे नठ जमाए जे रैओज्जत कवरै पव आतुव बहे । पुवनका आ नरका सर सठ्ठीक रिदा भ गेलै, गाम मे पैठ उपाव रैद । ने हबियवका तवकावी ने रजाव रना कोनो समान । एत तक कि नूनक अतार सेहो भ गेलै । कि आदमी आ कि मान-जान सरहक अहाव अकाशि मे । जे सस्ता बहे ओ रस दुष कि एक त सर मान-जान कनिकरै ठा के ओग डीह पव बहे आ दुष राहव जेरौक कोनो बस्ता नग ।

आ ओहि सान हाकिम राबूक पोती भागि गेलै । भागरौ केले त दोसब जातिक छोट १ क संग । आ भागियो क रुकवी जन्दि ए सम्ब आरि गेलै, ओ ने जे भागि के दिवली-पंजार पड़ । जाए आ आरि गेलै आ अप्पन जाति आ गामक नाम हमार नागै आ नागले जे ओकरे हंसिक संग आनु आ रांगमतीक हंसि एक भ गेलै । ओ पहिर छोट १ बहे जे अप्पन जाति के तियागि केकरो संग भागले छन, एकवा राद त रूम नागन नागि गेलै, रोहिनी नीक भेल छले ।

2 घब

अजरीं घब बहे, आए त सर आगते बहे, आ रुकडुकन ऊका करै त नागन नगा के सर रुकडुकन ऊका करै । रैवा-रैवी नग एके संग ।



प्रसन्न बह त सँ प्रसन्न बह नग बनो रात तेयो प्रसन्न । रिना मतनरै के रँवसा-रँवनी, रौद-अकाशि, पानि-रिहाड़ि किछो न के प्रसन्न । अहाँ घबक रँतीसी अतगे सँ देखि सकैत छिये । प्रसन्न बहक मुन होए त पड़ सीक घबक दोरी, रँगल रनाक रँटी भागने, पंजीजीक रँटी के कैसब भेनए, बाम अरताक मैथ्रिक परीक्षा मे हेल भेनए, अ सँ खुशिएक कावण बह ।

नड़ अ ग कबरौक मुन होए त ठी०री० क बिमोछे नेन सगड़ १ भ जाए । रौपक अतग टैनन, माएक अतग बह आ तीनु रँछो के अतग बह । बनो समनोता त भेल नग बह, ते जेकरा जखन मुन होए, ठी०री० थोति दए, जेकरा जखन मुन होए, टैनन रँदन नागए ।

आ आमदनी त सीमिते बह, कमाए रना मात्र रौपे । झुदा खबचाक मद केओ निधवित क सकै छलै । आ रबीयता एमक नेन डेली सगड़ १-हसाद । रौप कहए अ जकरा, रँटी कहए अ माए कह पतिने अ किएक नग ।

आ घब मे सरँके दूध बह । हतनमा के चितनमा से आ चितनमा के हतनमा से । सरँ केव उपेक्षा छलै आ सरँक पतन बह घब छोड़ौ नेन । सरँ ताकैत बह एकठौ नीक दिन । सागतक थोज डेली चलैत बह, झुदा केकरो नेन एखन रँहतक थोज सपन्न नग भेल छलै ।

घब मे कपड़ १-नत्ता बह, बमायन-महाभावत बह, देरी-देरताक कोछे बह, सगहि-सग रँहूत बास उपदेशे आ कर्तव्यक शिक्षा बह । गृहरासी एक-दोसब के रँवा-रँवी सँ दैत छतनिन आ सरँ गोछे समे सान पब सुने के आ नग सनरौक रँहन्ना ताकैत छला ।

अहो घरे छलै आ एकव एकठौ नरँव छलै जे सबकाक काडि आ रौठक बजिस्टब मे दर्ज छलै । पता नग घब मे हन प्रकारक एकता छलै जे घब घब बह, आ सिमेटक, कर्तव्यक आ रौठि मे बस्काक सबकारी रिहापन हवाक-हवाक रँनब मे हवाक-हवाक जगह पब रिवाजमान बह ।

३ रौपूक चष्टी

ई रँव गाम मे एकठौ आयोजन छल, आ आयोजने रीच केओ चप्पल दोबा नेनक । सँभर डेक केकरो सँ रँदना गेल होए, झुदा एकाध घण्टीक प्रयासक रीच भेलैत नग । गाम पब आरिते नोवा तेयाव छल आ शीतल जेरौक जन्दी, ते रिना बनो



ना-बुबुबि केने माए द्वाबा देन राँबुक प्रबनका चप्पन पहिब राँहब आरि गेलौ । चप्पन मे कतेको जगह सीघर जेरौक निशान बँह ,तेयो चप्पन मजगुत बँह ,आ गाम सँ चारि सौ किलोमिटर तक बनो प्रकाबक दिक्कत नग भेल ।

ईठाम एनाक राँद कनियाँ कनि जे झूठ -नाक रँनेनथि ,चप्पन ईठामक चप्पन सँ मे मिति गेलौ । ने चप्पन देखे सुने मे खबाप बँह ने तबत्ते बनो झूठराक डब ,ते हम मँका-रँमँका पहिरैत बहलौ ,हाँ कहियो-कार कनियाँ के कहना पब जकब रँदनि दैत बहिये । आ चप्पनो रँना कोना दाना पानि के हमबा दूआरि पब बह लागल । रँस कनियाँ ओकरा स्थान रँदनेत कार ,या राँदनि नगरै कार कने जेब सँ धक्का दैत छनथिन आ हेब ङ राँत कि राँप रे राँप ङ चप्पन पहिरै रना डैक ।

एकदिन भेब मे घुमेत कार चप्पन झूठि गेल । बनो प्रबाने जोड़ पब झूठन बँह ,आ हम नगराँत-नगराँत कहना गामपब पहुँचलौ । हमबा नगराँत देखि कनियाँ बनो अङ्गत सँभारना सँ टिकडि उठली । हम आशिरसत केनिअन ,जे एहन बनो राँत नग ,हम सरसथ डी ,रँस चप्पन कनि डिस्टरै क देलक । आ हमबा रँन पुछने ओ चप्पन उठा सामने रना मैदान मे फेकि देलथिन । हम लोकलक प्रयास केनियग ,झुदा ओ किछ नग सुनलथिन । चप्पन फेका गेल छलै ,झुदा रँसी दुब नग बँह । ई ठाम सँ ओकर ब्रीता ,उठै आ पूरा देह देखागत बँह । अङ्गिला दिन आव लोक सँ मैदान मे कुड़ । फेक लागलथिन आ चप्पन कनेक एकात मे भ गेलौ ,झुदा एखनो तक ओ ओहना देखागत बँह । एक रँब मुन भेल जे कनियाँ सँ टोवा के ओकरा घब ल आनी । कनियाँ सूतल बहथिन ,झुदा जे कि उठलौ ओ हेब उठि गेली आ पुछ लागलथिन 'चाय त नग पीयर' ।

भेबका समे छलै आ कनियाँ नहेलक राँद पूजाक तैयारी मे बहथिन ,हम एकएक उठलिये आ मैदान दिसि रिदा भ गेलिये । ओखन केओ जागल नग बँह ,रँस एगो-दुगो कुरब सँ एमहब-ओमहब ताकेत बँह । हमबा मैदान मे घुसिते रँगल रना गोलो कुरब हमबा दिसि तक लागल । एकरैब त डब भेल ,हेब साहस क के दुनु चप्पन उठा लेलौ । चप्पन पब रँहूत बास पन्नी आ पाकर आमक सड़कका छिन्का बँह । जल्दी सँ ओकरा नष्टकेत सँस के राँबने रोड पब रापस एलौ । आरि आरि के हेब एकरैब जेब सँ सँस लेलौ आ कुड़ ाक ठवे दिसि हेब सँ पियान गेल । ई चप्पन के की कएन जाए ।

ई चप्पन के घब मे बाथने ठीक नग । कनियाँ त जे रँथेबा कबती ओ कबरे कबती । ङ चप्पन एकठा रीतल हागक केनिडोस्कोप नेने घब मे घुसि गेल बँह ,झुदा एकर आँबिजनल जग्य त कते आव छलै । ङ चप्पन हमब पितक प्रहृथ



अस्त्र छल । जखन जखन ओ फाष मे आरै छलथिन ,थापड़ आ झक्काक प्रहार नग करै छलथिन ,रैस निकारि के चप्पल हमबा आ हमबा सरै भाङ्ग-रैहिन के.....

। तेँ ओ रीतत हागक एकठै अस्त्र छलै ,जेकवा नेन जगहक गुंजाओषि ई घब मे नग बँह । ओ चप्पल आरै रैस सम्हालि के देखे-देखरै नेन जोगा के बाथे क चीज बँह । अहसोस हमबा पास एतते जगह नग कि हम संग्रहालय रैनारी

२



मो. असबह, धनुषा /नेपाल, हार : कताब

रिहनि कथा

शिवरीया घबराती

मोहना जरान भ गेल । ओकरा मनमे उसोह जागर कि आरै हमहु सदी रिराह क क अपन घब रैसारी । झुदा मोहनाके मनमे सरैदिस बहे कि शिवरीया घबखराती करी । ओ रात मोहना अपना माएके कहलक कि हम गाँउके नडकी नै रँझी शिवरीया नडकीस सदी कब चाहित छी आ हम तबानेन शिवरीया पुतौह नार चाहित छी । तबाने कि रिचार छै ? मोहनाके माए रँझनि -तबाने जे पसन्द छै हम ओहिमे बाज्ती छी । ओ रात सुनिक मोहनाके झुहमे नड्डु फुँट लागल । ओ आरै नडकी खोजरौक प्रयास क ब लागल । किछु दिनक रौद जनकपुरक थापाचौकके जोगीरौक रँझी रँझना भेलैह । ओकरा छँ-सँ आ जिअ नगौने देखि मोहनाके पसन्द आरिगेल । आ ओ सदी कबरौक नेन लव भ गेल । गाँउघरक २/४ भनादमीके रँझा अपन सादिक दिन पक्का कयलक । रिराहो रँड धूमधामस भेल । किछु दिनक रौद रँझना घबमे ककरो नै छैव लागल । निव दिन आठ रँजे पनझी छोडे । सरैदिस चाह मोहनेस मझरौरे । रँझना रोज खाना खागत आ रँग नठकलैत रँझाबदिस छैन दैत । सरैदिस नर नर सथिके सँग बझबनिय मनरथि । गाँउमे ककरोस माथो नै मापथि । मोहना कतेक दिन कहरौ कयलक कि अहा गामक पुतौह छी सबम नेहाज कब । एना जिअ नगा उदण्ड भ चलरै त लोक कि कहत ? तखन नाक खुचरैत कथा रौजल - अहाके पता नै अछि जे हम शिवरीया नडकी छी ? अहा कहत छी हमबा झुह मापे नेन झुदा हमब त दम फुलैत अछि । हम अहाक गुंजाओष नै नाचरै । शिवरीया छि त एहने सरैदिस बहरै । आरै एहन चबित देखि मोहना सोचमे पडि गेल कि कब कि नै ? तखन माथ पिछैत अपन



साथीसभके सल्लाह देलक कि गाँउके ब्रह्म नार्मबस सादी कबी झुदा शीतबीया घबरौनी नै करी

ई कनापब अपन मतिर ggaj_endr_a@videha.com पब पठाउ ।



1. शिरकमार मा 'ष्टि' -रँडका साहेर : पबसपागत संस्कार केब पवाभरक



रूति चित्र 2. नरेन्द्र कुमार मा- ववितक रँडका मैथिलीक कथाक दशा-दिशा पब भेव चर्चा संपन्न भेव, मनेस क छठम अधिबेशन/ डनसठम वर्ष ये प्रवेशे कयलक चेतना समिति नीक गप आ योजनाक पब भेव चर्चा ।

1



शिरकमार मा 'ष्टि'

रँडका साहेर : पबसपागत संस्कार केब पवाभरक रूति चित्र ::

मैथिली नाँठ साहित्यमे वल्लन प्रसाद ठाकुरक प्रवेशे आधुनिक मैथिली नाँठकक नेन क्रांतिकार मानल जा सकैत अछि । लौंगिया मिवाचा आ मि. नीला काका सन चर्चित नाँठकक प्रतिकार वल्लनन जीक नाँठक " रँडका साहेर" सन् 1985 अ.मे प्रकाशित



भेन । प्रकाशिनसँ पुरे 20 नरसुखाव सन् 1983 ग्रामे एकव पहिन मचन बरीन्द्रा भवन जमशेदपुरवमे लोकप्रियताक नूतन आयाम स्थापित केनक ।

नल्ल नज्जी ठाँठ्ठा स्त्री तमे अधिकारी सरञ्जामे निहाङ्ग छला । रैस्तुय दैनन्दिनानीमे बहिनो अपन अभिनय आ साहित्य प्रेममे लिपित ई मैथिली भङ्ग केँ साहित्य क मानस पठनपव ओ नाँठ आ ठाँठ नै भेँठन जेकरव आ अधिकारी छल । मैथिली नाँठककेँ “मच निर्देश” आ पबम्पखारानी सँस्काभकेँ आधुनिकतासँ तावतमि स्थापित कऽ अपन मौलिकताकेँ रँचा कऽ बाथरँ हिनक बचनक रासुकरिक उद्देश मानन जाए । ई क्रममे महान कलाकार कथाकथित भवमानुष समाजक स्त्रीधनतिक पवराहि नै कऽ कऽ मात्र अपन उद्देशक दिस पियान दैत एकठाँ सबन आ सौम्य भाषामे 45 पृष्ठक नाँठकक लिखि मैथिली समाजक आगाँ 30 र्ष पुरे एहेन प्रशस्तिक ठाँठ कऽ देनक जेकरव निदान अखन धरि नै भेँठन । कलाकारक अभियानक मौलिक उद्देश होगत अछि जनप्रियताकेँ पियानमे बाथि मचन कवरक चेष्टा । नाँठककार स्व र्थ निर्देशिक छला । ई उद्देशसँ राँहव निकसि कऽ पूर्ण साहित्यिक रूप देरँ हिनको नेन अर्भव छल । झुदा एकवा साहित्यिक भाषामे सबन रियकव “मौलिक सँस्कादव पवभर” चयन आ ओकवा रँहूत हद धरि सहन प्रतिरिधिमे समाहित कवरँ निश्चित समालोचककेँ सुझ कऽ देनक । अहए काव्य थिक जे स्वप्राप्त शैखव सन चर्चित साहित्यकारक सेहो ई पोथीक आहूत लिखरक क्रममे कहना कऽ पिन्दा छोट । नेननि ।

रिषय रिस्रवमे ई नाँठकक कोनो रिशेष योगदान नै, झुदा आकर्षक अछि तँ उद्देशक दुबदर्शिता पूर्ण रिरचन । तेकरव पक्षिण भेन जे “रँडका साहेर” अर्हूखारानी य मैथिली नाँठक प्रतियोगितामे पहिन स्थाकन प्राप्त केनक । “मिथिलास्रव” नाँठ सँस्का जमशेदपुरक प्रणेता नल्ल नज्जी मैथिली नाँठ मचनक पहिलक सम्पूर्ण हस्तुा स्रव छथि जे प्रकासमे ओ लोकप्रियता प्राप्त केननि । जे देसिन पविषिमे बहिनार नाँठकार लोकनिकेँ तापवि तँ प्राप्त निश्चित नै भेन छल । महिना पात्रक अभिनय महिनैसँ करौन गेल ।

ई नाँठकक पहिलक पात्र छथि छेदी न्ना जे रूझ ग्रामीण मैथिलक भूमिकामे छथि । छेदी न्नाक भागनि चूडामणि न्ना गामसँ शिक्षा ग्रहण कऽ कऽ नौकरी नेन प्रवेशी परीक्षा देरक उद्देशसँ अपन माम सँग जमशेदपुर अरै छथि । ग्रामीण जीरनमे सहज अर्थ पीड़क दर्शिसँ ममहित प्रतिभाक उद्घनन एकव पहिन दृष्टाक मूर उद्घाषन मानन जाए । माम आ भागिन दूनु साधन रिरिन तँ जमशेदपुरमे आरि स्रणिक प्रवासक छहँ तकेत री.सी. न्ना सन अभियन्तुक ओगठाम आरि गेल छथि । री.सी. न्ना कहियो छेदी कक्काक “रानो” छला । समए आ कातक प्रभारसँ आरि ऑफिसव रँनि अपन मौलिक सँस्काावकेँ रिसवि जेरक नाँठक कऽ बहन छथि । ई नाँठकक मूर काव्य थिक अपन



गबरीर समाजसँ झुतर्याकेँ दुब बथि पाश्चात्या शीलीक जीरन जीरक चेत्याय द्वाबा अपनारकेँ भनमानुष देखेरक प्रयास । गामक लोक रँगनापव आरि खुँ खेत आ गाममे जा क२ रैथि गोलौसी कबत । रातचन्द्र नाक म्त्री आरि “एडभास्त्र” पनायनरादी नष्टकियाक अछिगिनी तँ छथि झुदा अपन मौलिकताकेँ छोड़ए नै चाँह छथि । एमे हिनको सामर्थे छन्हि । जेँ अपन घब आएत गमैया मैथिलीकेँ अपमानित कएत जाएत तँ लोक गाममे थिप्सा कबतनि जे री.सी. ना जिनका -अंधेजो नै जनरक काबणो छेदी कक्का रैसी ना रूमि गेलथनि । -क म्त्री नीक रिचावक नै छथिन । ई आ थिक सग-सग रैरहाविकता नाँकक दोसब कावण छन्हि । मीना जीक अपन तनया मिकीक लेत छूड़ मणिमे संभारना देखरै । छेदी कक्काक अन्सारे छूड़ मणिक पिता री.सी.नामे कहियो “समाधि” रैनरक रिचाव पनकर छत । छूड़ मणिक पिता आरि नै छथि । छूड़ । म् । र्य मन्त्रा गेल छथि । री.सी.ना आ हुनक पत्नी मीनाक दृष्टिमे हिनक स्थापन “ठीकधारी” पुरोहितसँ रैसी नै जमशेदपुर सन छोट-छीन रँगडङ्गमे ठाँठा स्थापन माँठि-पानिसँ पोवगव भेलि मीना तँ कल्लाबक डाँवा छथि । छूड़ मणिक सन “ठीकमोहन” केना ई शिहरी बन्ना केँ बमतनि ? ओ तँ अपन मैथिलीकेँ रिसवि जेरक ठाँठकमे लागत छथि । रीपक बचनारिक सहयोग मैथिल संस्कृतिक मोहन मात्र मानत जाए ।

नाँककाव उद्दिष्ट छथि ।

जारी...

2



नरेन्द्र कुमार ना- ववितक रँग मैथिलीक कथाक दशो-दिशो पब भेल चर्चा संपन्न भेल, मनेस क छठम अधिवेशन/ डनसठम वर्ष मे प्रवेश कयवक चेतना समिति नीक गप आ योजनाक पब भेल चर्चा ।



ववितक रैहल मैथिली कथाक दश-दिश पब लेव चर्चा संपन्न लेव, मनेस क छठम अधिवेशन ।

मैथिली लेखक संघक छठम वार्षिक सम्मेलन पठना मे संपन्न लेवा एहि सम्मेलन क अरसव पब मैथिली भाषाक साहित्यक आ रिश्ता सभ रविश्रु आ चर्चित कथाक वनितेश मिश्र वनित के याद क मैथिली भाषा साहित्य पब चर्चा कयनि । अ सम्मेलन विशेष रूपे वनित पब केन्द्रित छल । एहि रैहल रिश्ता लोकनि मे मैथिली कथा साहित्य एक सय रश्मि मात्रा पब सेहो सार्थक रहस कयनि । रक्षा लोकनि आम जन सरोकार स जुड़ल कथा आ उपन्यास लिखल पब जेव देनि । सम्मेलन क अध्यक्षता संपक अध्यक्ष नरेन्द्र या आ संचालन अजीत आजाद कयनि । एहि अरसव पब डाक्टर किशु कुमारी लिखित पोथी ' मैथिली साहित्यक विकास मे मैथिली अकादमीक योगदान ' क लोकार्पण आ डाक्टर अन्धकांत याक अध्यक्षता मे करि सम्मेलन सेहो संपन्न लेव । एहि अरसव पब अपन रिचाव राज करैत रविश्रु साहित्यक आ पत्रकाव अवरिन्द ठाकुर आकाशि राज करैत कहनि जे मैथिली साहित्यक रतमान दृष्टिक लेव हम सँ साहित्यक जिम्मेवार छी । नीक रिचावक आदान प्रदान तहें होगत अछि ह्मदा जमीन पब कोनो ठोस परिणाम सोना नहि आयल अछि । वनितक योगदानक चर्चा करैत ओ कहनि जे मैथिली साहित्य क्षेत्र मे वनितक योगदान महत्वपूर्ण अछि आ जतय स वनितक प्रवेश होगत अछि ओतहि स मैथिली साहित्य ह्मदाया प्रभाव होगत अछि । ओ कहनि जे मैथिली भाषाक साहित्यक अर्थकार मेनि कऽ पोथी प्रकाशित कबैत छथि आ रौद मे ओकरा मगनि करैत छथि । जे आ लेखक आ साहित्यक पब गंभीर संकट अथवा जीवन-मृत्यु प्रश्न अछैत अछि तहें मैथिली भाषाक नाम पब दोकानदारी कवरना सभ के ह्मक स्पर्श लेलक ह्मसत नहि बैठत अछि । श्री ठाकुर नर साहित्यक सभ के एहि पब ध्यान देल आ एहि स रचलक संग्रह देनि । वनितक उपलब्धि पब रोशनी दैत कथाक अंशक ह्मक अमर प्रतिष्ठा बमजानी, कंचनया आ पृथ्वीपत्र आदिक चर्चा कहनि जे ओ मैथिली कथा के पारंपरिक साचा स रौह वनितक । रविश्रु साहित्यक पन्ना या कहनि जे वनितक कथा साहित्य उच्च स्तरक छल ह्मदा । एहि स पहिलका साहित्यक के कम नहि मानलक चाही । ओ कहनि जे ह्मक कथा बमजानी मैथिली कथाक मात्राक लेव ठेगि प्लागैत कहल जा सकैत अछि । सम्मेलनक ह्मदा रक्षा रविश्रु पत्रकाव स्फूर्ति सोम वनितक साहित्यिक अरदानक चर्चा करैत कहनि जे ह्मक साहित्य मे गरीबी आ पाखंड स ह्मजि भेटैत अछि । ह्मक उपन्यास आ कथा ह्मजिक अछि । ओ कहनि जे रतमान दौर मे आम जन सरोकार स जुड़ल कथा आ उपन्यास लिखल आरंभकता अछि । सगहि मैथिली कथा के अपन पारंपरिक लीक स हटि रतमान दश दिश पब रिषय के केन्द्रित कबलक आरंभकता अछि । ओ कहनि जे ओना तहें मैथिली कथा साहित्य पहिलहूँ मजगूत छल ह्मदा ओ अपन पारंपरिक लीक पब चलेत अपन स्थित मजगूत कएने छल । मैथिली साहित्य वनितक आगमन स रिषय रहुक स्तर पब सेहो मैथिली कथा मजगूत लेव । ओ कहनि जे वनितक संपूर्ण वचना के समग्र रूपे प्रकाशित कबलक आरंभकता अछि



जाहि स हुनक नीक तबहे पुनर्मुन्यांकन कयल जा सकय । सम्मानक अध्यात्मता करैत रविश्र साहित्यकार नरेन्द्र या कहनि जे मैथिली मे नवितक योगदान के रिसवर नहि जा सकैत छि । ओ आरंभ रना पीढ़ीक नेर मातृदर्शक छथि । ओ मैथिली साहित्य के देशे आ रिवि साहित्यक समकक्ष खनरौक नेर सदैर छुट पठागत छनाह ।

एहि स पहिने मैथिली लेखक सघक महासचि रिनोद कुमार या प्रबुद्ध जनक स्नागत करैत सघक गतिरिषि पब रौशनी देनि आ सघक योजना सभक सोना बखनि । सम्मानक दोसर सत्र मे करि सम्मान संपन्न भेल जकर अध्यात्मता डाक्टर गन्धर्वा या कयनि । करि सम्मान मे कमलकांत या, कमल मोहन चून्, अजीत आजाद, सुरेन्द्र नाथ, अरवि ठाकुर, जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिर' गंगानाथ गंगेश, रिजय नाथ या करिता पाठ कयनि । एहि अरसब पब डाक्टर रीणा कर्ण, रिकानंद ठाकुर, प्रमीना या, अश्विप्रस, अक्षा चौधरी, डा० वमण कुमार या मैथिली भाषाक आन कतेको साहित्यकार उपस्थित छनाह ।

उनसठम वर्ष मे प्रवेश कयलक चेतना समिति नीक गप आ योजनाक पब भेल चर्चा ।

मिथिलाक प्रतिनिधि संस्था चेतना समिति पठनाक उनसठम स्थापना दिस मिथिला भवन मे समारोहक सग मनाओल गेल । एकब अध्यात्मता चेतना समितिक नर निरचित अध्यात्म रिजय कुमार मिश्रक कयनि योजना रिभागक प्रधान सचि रिजय प्रकाश झा या अतिथि छनाह । एहि अरसब पब सांस्कृतिक कार्यक्रम सेहो संपन्न भेल । कार्यक्रमक प्रारंभ प्रश्न प्रश्न याक गोसाउनकि गीत स भेल । समारोह मे उपस्थित लोक सभक स्नागत करैत नर निरचित सदस्य रासुकीनाथ या समितिक काजक चर्चा करैत नरतुबिया सभ के अपन भाषा आ सांस्कृतिक संरक्षणक नेर आगा आरंभ नेर कहनि । आ भने मचसु भं नरतुबियाक आह्वान करैत छनाह ह्दा कार्यक्रमक दबमियान कतह स कोनो नरतुबियाक अरसब नहि देल गेल आ समितिक जे नर कार्यकारिणी रैनर छि ओहि मे नर किछ छि नहि तं नरतुबिया कं स आओत ।

एहि अरसब पब रिजय प्रकाश मैथिली भाषाक आ सांस्कृतिक संरक्षणक रदना संरहन पब जोब दैत कहनि जे एकबा रँचा कं बखरौक नेर अपनहि घब स प्रयास कबरौक चाही । ओ कहनि जे मात्रा नीक गप आ भाषण स मिथिला आ मैथिलीक रिकास नहि होयत एहि नेर हमबा सभ के जमीनक स्तु पब प्रयास कबरौक चाही । हमबा सभ के भाषा के संरधानिक अपिकाव भेल छि ह्दा एकब नाभ मैथिली भाषा के नहि भेल बहन छि । एहि नेर प्रबुद्ध मैथिल जन जिम्बारा छथि । आम मैथिली भाषा के अपन भाषाक महत्त्व आ अपिकावक जनतर दैरौक नेर अभियान चलेरौक आरथकता छि । ओ कहनि जे सभ के अपन मातृभाषा मे शिक्षा दैरौक चाही । मातृभाषा मे शिक्षा देना स नेना सभ मे भाषाक ज्ञानक सगहि तकनीक शैक्षिक ज्ञान मे रँढा तबि होगत छि । रविश्र मैथिल रंगकर्मी प्रेमनता मिश्र प्रेम कहनि जे अ चिन्ताक रिषय छि जे प्रबुद्ध मैथिल समाज आग अपन भाषा मे रँजरीक प्रति



उदासीन छटि । ओकरा मैथिली भाषा मे गप कवरै अपना के पिछुइत रूँमि पडैत छटि । जखनकि आन भाषा भाषी के आपस मे अपन भाषा मे गप कवरै मे गरि होगत छनि । ओ मैथिल समाज स अपन भाषाक प्रति सम्मान बखरैक आह्वान करैत कहनि जे ओ कतेको पैघ पद पब होथि अपन घबक भाषा मैथिली बाथथि । जौ अपना घब मे अपन भाषा आ संस्कृति के सम्मान नहि भेठैत क२ आन ठाम स सम्मान भेठैरैक आशि नगाएरै रैकाव छटि ।

एहि अरसब पब अपन रिचाव राऊ करैत मैथिल समाज सेरिका आ शिक्षारिद मृदूना प्रकाशि मैथिली भाषी सभ स अपन भाषाक प्रति स्नह रैठैरैक पब जेब देनि । ओ कहनि जे समूह मिथिला संस्कृति आ मैथिली भाषाक संकष्ट पब हम सभ चर्च कवरै एकब शायद कम्पना हमरा सभक पूरज नहि कयने हेताह । ओ स्थिति दूर्भाग्यपूर्ण छटि । अरिक्मित भाषा आ संस्कृति रिक्मित भ२ बहर छटि आ हमरा सभ दिन पब दिन पछुआ बहर छटि । हमरा अरसब भेष्ट बहर छटि एकब नाभ उठैरैक अरसब हमरा सभ के नहि छटि । अपन भाषा सारजनिक कपे रैजरा मे हिन भारना प्रसित क२ बहर छटि जे नीक स्थिति नहि छटि ।

कार्यक्रमक अध्यात्मता करैत समितिक अध्यात्म रिजय क्रमाव मिश्र मिथिलांचल मे प्राथमिक स्तर स नैना सभ के मैथिली भाषा मे शिक्षा देयैरैक नेन सबकाव स मांग कयन जायत । सरिधानक अग्रम् अनुसूची मे मैथिली के समितित कयनाक रौद सबकाव ओ दायित्व छटि जे ओ सूर्य एहि दिस पहर कबय जे प्रदेश मे जतय केओ एहि भाषा मे पढ़ए चाहित छटि । ओकर राबस्था कबय ।

कार्यक्रमक संचालन समितिक सहाज सचि उमेश मिश्र कयनि । एहि अरसब पब रिधायक रिनोद नावायण ना उपाध्याय गणेश शंकर स्वर्गा, योगेन्द्र नावायण मल्लिक, घब, रौदर पत्रिकाक सहायक संपादक कमल मोहन चून्, अजीत आजाद, बघूरीब मोची, प्रा० निर्वजन ना, प्रेमकांत ना, डॉ० अन्धकांत ना, डॉ० अक्शा चौधरी आन कतेको गणमान्य लोक उपस्थित छनाह ।

ई कनापब अपन मतर ggaj_endr_a@videha.com पब पठाउ ।



सन्दीप क्रमाव साहू

रिचाव-रिन्दू



बाजा अउव पबजा

एगो समय छेलै जहिया लोक लोकपब रिप्रास करै छल, अपन समाजमे कोनो तबहक रौतछीत होगत छल तँ गाममे जे बाजा बँह छल तिनका ईँठाम सब निपठावा भँ जोग छल, अउव ओही ठाम न्याय अउव अन्यायक फैसला होगत छल, किअक तँ सब लोक बाजाकेँ सम्मान अउव आदर सदाचारसँ नाम लेलै छल किअक तँ बाजामे कोनो तबहक सुखाव या आपदा-रिपति होगत छल तँ बाजा पबजाक संग दैत छल, ओग पबजाक मदत सहायता करैत छल झुदा अथन एहन समय आरि गेल जे बाजा अउव पबजामे कोनो अँतरे नै बहि गेल, किअक तँ आरि नै ओते अल ढुपजे छै आ नै बाजा पबजाक मदति सहायता करै अछि ।

पहिने लोक सब बाजामे अपन रैष्टीक रिवाजक रौतछीत नँ कँ जखन बाजदबराबमे जोग छल तखन ओही राजिकेँ महाराज आश्रिसन दैत छल जे तँ या तोहब रैष्टीक खर्चक रारस्था भँ जेतँ तखन पबजो अपन बाजामे लीन बँह छल । झुदा नै ओ सझा जमाना बहलै अउव नै ओ बाजा बहलै, किअक तँ पहिनुकहा लोक सरँहक कहँ छेलै जे ओ लोक सब जे छेलै, एगो लोकहरँना राजि मानल जोग छेलै, ओ सब जे रौजे छेलै से करै छेलै, अपन नाम हँसाए नै दै छेलै, कोग दोसब गामरँना यदि नाम सुनै तँ कहै जे हँगाँ गामक बाजा अपन पबजाक सुख-दुख देखै छै, कतेक नीक छै ओ गाम, चल ओही गाममे, घब रँनाएँ , ओही बाजाक बाजामे बहँ ।

देखनी जे दुखाविपब कतेक-कतेकछी ठक छै, कतेक अल छै, कएगो हाथी रौनुन छै, कतेकछी हुनकब दवरँज्जा छै, चल ओही बाजामे बहँ, कोनो चीजक दिक्कत नै रहत । सब प्राणी ओही ठाम जीवन रिताएँ ।

अ सब पबजा बाजाक नर पबजा रँनैत छल ।

आरि तँ देखल जाए तँ बाजा पबजाकेँ सुपे रौगले नै दग पब तैयाव होगत अछि । पहिने एक सेब मरुआ नै तँ एक सेब जँ दैत छल । भवि दिन हब जोगत कँ आरै छल तँ ओ मानिक अपन जहनकेँ मरुआ अउव जँ रौगन दैत छेलै ।

झुदा देखैत महगाग कँ चलैत बाजाक मनमे अरिकाव आरि गेल जे एतेक अल जे ओकवा देरँ से ओही अल रँच कँ हमबा अउव दु कष्टा खेत भँ जाएत अउव अपन रँदँत पबिवाव देख कँ सोचँ लागल जे अ सँसाव अहिना बहत झुदा अपन सान गुमान सब बाजा रिसवि गेल, के देखैए पबजाकेँ अउव के देखैए अपन सान सौकत ।

रँदलैत दुनियाँ देख पबजा सब गामसँ शहरमे काज करैक लेल प्रस्थान केनक जे आरि गाममे बाजा अपन घब-पबिवावकेँ देखत आकि हमबा सबक मदति कबता ।



सभ पबजा अपन गाम छोड़ि शहरमे कमाए लागल, अउव जे बाजाल हरोड़ मे काज करैत छल से ओ जमीन जजाति सभ बाजाले निथरौ कइ पबजा अपन नाम कइ लेलक ।

आरने बाजा ओगठाम कियो पबजा हरोड़री थैत छल । किएक तँ दोकानमे एक ठका सलाख दै छै आ बाजा ओगठाम भवि दिन पान-दाउन कबलापव पाँच किनो पान रौगन दै छै, से नै तँ आर गाम छोड़ि शहरमे काज कवरै, रँड रँडि याँ मन भेल तँ काज केनक, नै भेल तँ अपन चाबि दिन रैठल छी, दोसब किछ करै छल, ओ सभ सोचि बाजा अउव पबजामे कोनो महुर कनीक-कनीक सभ छँल जागत छल, लोकक मनमे आनन्दक प्रवेशे भइ गेल, केकरो नै केकरो से मतलब नै गेल ।

मिथिलाचलक बाजा छल बाजा जनक जे अपन बाजामे खेतसँ खनिहान तक पबजाले कथनो दूरी नै देख सकै छल । जे कोनो मनमे कम्पना करैत छल पबजा तँ ओकरा सरहक बाजा जनक पूरा करैत छल, केकरो कोनो तबलक अस्वरिषा नै होए, तेकर लेल तपेब बँह छल ।

एक रँव बाजामे तीसरा सुखार भइ गेल जे दू की पाँच साल तक रँखा नै भेल, पबती फाँटि-फाँटि गेल तँ महाराज जनक यज्ञ कइ कए अपन पबजाल हितक लेल भगरान अन्दरसँ प्रार्थना केनल जे हमरा रँचाऊ, हमरा पबजापव दया कर, हमरा पबजा मवि बहल छल, आग कतेक मास भइ गेल हमरा पबजा सभकेँ अन्न खेला, हे भगरान, हमरा अउव हमरा पबजापव दया कर ।

अउव एतेक सभ रात सुने छेलै, भगरान अउव भजामे यएह रारहाव होएक चाही अउव यएह सबता अपनैरौक चाही, ओहीसँ प्रकृति सेहो गराही दैत छल जे मनसमे भगरानसँ केहन बेदभार हेरौक चाही । सभ गदगद तँ भगरान अउव सँसार सुखदमय बहत छल अपन सभ अपन तँ सभ अपन पेठे भवि गेल तँ दोसबक पेठे भवेलै कि नै तेकर चिन्ता के करैत छल । पहिले नै एतेक री.पी.एन. छेलै, अउव नै एतेक ए.पी.एन. सरहक गुजर समान होए छेलै, सभ जइ अउव जनैक थिचवी थागत छेलै, भइ गेल कहियो तँ केकरो एहने नीक घर बँहल छल जे भातक झूठ देखैत छल, अथन देखु जे गरीब अमीब एक समान आग-पिरेत छल । दानि भात अउव तबकारी प्रेमसँ थागत छल ।

ई कनापव अपन मतलब ggajendr_a@videha.com पब पठाओ ।



३. पद्य



३.१. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिर' - गजल १-४



३.२.१. कञ्चन कामत



शिकारिका चौधरी



३.३.१. आशीष खनचिन्कार-रिहति गजल २.



जगदानन्द झा 'मनु' - गजल



३.४. बरि भूषण पाठक



३.५. रवि शङ्कर पाठक



३.७.

अनामिका बाज- करिता-स्मृतारान



३.९.

सन्दीप कुमार साहू



३.१०.

भानुचन्द्र सा-आजुक बैठी



जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिर'

४ ठा गजन

१

हाफ कक जूनि शोक कक

हे अर्जून जूनि सोच कक ।



धर्मक्षेत्र ककक्षेत्रमे छी
पापक अहाँ विरोध करू ।

जीतू भोगू धवती के सुख
अथवा सुखाक भोग करू ।

अहाँ आतमा अरिनाशी छी
तन-मनके संयोग करू ।

मित्र शत्रुमे, शत्रु मित्रमे
देखियौ आ उपयोग करू ।

सब ठुब शान्तिक जय हो
नूतन निर प्रयोग करू ।
ईशानिर्भय हो मानरता
छरू आग उदघोष करू ।

;सबत रार्पिक रँहब, रर्प-10



अहाँ जँ ठसरो, ठसते दुनिया

अहाँ जँ कनरो, कनते दुनिया ।

अपनहि कर्मक फल भोगै छी

अहाँ जँ बूमरो, बूमते दुनिया ।

आत्ममे सभतरि अ आत्मा

अहाँ जँ जगरो, जगते दुनिया ।

अर्थ मोक्षके मोक्षक मय थिक

अहाँ जँ गनरो, गनते दुनिया ।

यात्रा पब अछि सभक आत्मा

अहाँ जँ स्मरो, स्मते दुनिया ।

धन छी साधन, साध्य शान्ति अछि

अहाँ जँ कररो, करते दुनिया ।

शान्ति आओर आनन्दित बहियौ

अहाँ जँ कबरो, कबते दुनिया ।



सबन राप्ति रहव, रर्ष-12

3

हम कने छी, हँसै लोक
पता ने की की रँजै लोक ।

कन्यादान अहर्क घ बमे
लेकिन रर्थ गनै लोक ।

पोने प व रँजारी तरना
थुर अहर्के चिन्ह लोक ।

सयमे नई हुसि रँजै
हविश्चन्द्र कहरै लोक ।

र व एकठाँ स रबियाती
भाग पीरि क नचै लोक ।

ग्रन्थ ह म देखि बहन छी
जिरिंते कोना मरै लोक ।



सबन राक्षिक ररुव, ररु-10

4

करिता गीत गजन बाथु
मनमे नैतिक ररु बाथु ।

अरु स्रुय सामर्थारान डी
ररु रिश्रुस अरुन बाथु ।

मा कैकेय ड सकेत डुथि
अरु डवत निश्रुन बाथु ।

चाकणाम वरुत न गेमे
नयनमे रगगजन बाथु ।



शान्ति क सागव हो भीतव

रौहव जे हनचन बाथु ।

संतोषक संपत्ति अचन

आओव सन्नति चन बाथु ।

स भ तमाशा आंथि कानके

दुनु अंग सकुशिन बाथु ।

सवन रार्पिक रौहव, रर्प-10

ई कनापव अपन मतिर ggaj_endr_a@videha.com पव पठाउ ।

१.  क्ली कामत- २.  शान्तिनक्षत्री चौधरी

१



क्ली कामत

क्ली कामत जीक दुष्टा करिता

दर्दक टिस



पहाड़ जकाँ दुःख

देनक पहाड़

एहेन एरँकी आएन आथाड़

सगरे मचन हाहाकार ।

केतए गेल सभ देर

केतए नकाएन दुःख हवता

बहवा क२ जन-जनक

बिधान मन्त्र भेल दाता महादेव ।

माएक सून भेल आंचव

केतौं हवाएन नयक रौन

असगव छोड़ा रूढ़ रौपके

रिद्धि गेल रैष्टा अनमोल ।

रौरा-रौरा करैत

गेल कतेक प्राणी

किअ ने रैचेलौं हे रौरा

अपन भुक्त अहाँ जान ।



बोकु कोष अ सवारको

ओव केतेक जानक रनि
देरौ यो अनमान,
किया रनेने चाँह छी भगरान
देखियो अहीक कबनीसँ
सममान रनत उतबारल प्रान्त ।
पहाडक छाती टिब क२
ओकबा यागत अही केनिई
नदीक हाथ-पएव काँटि क२
ओकबा अपाहिज सेहो रनेनेई
गाछ-रिबिछ काँटि क२
छत हिन माए धवतीकेँ केनिई
शुक केनिई अहाँ
रिनासक गिरा
सभ तालर ठाढ़ अही केनिई ।
आरँ प्रपत्तिसेँ खेनरावि
करैक सजा देखियो
नदीक हूँकार सुनियो



बूझ-बूझ न२ केतौ तबसैत धवती
तँ केतौ रएह बूझमे डूमेत जान देखियो ।
ई असांतुनितक कावण अहाँ छी
किअ अहाँ रनेजे छहै ममान छी
आरौ खोनु अपन कपट
कहि प्रवा दुनियाँ ने रनि जाए श्मशान-घाट ।

२



शान्तिवन्मन्नी चौधरी

जेन्निअन कांष्टिनुअम

...

ओही दूनु ' सिम्टव केँ देखनहु नष्ट बनकेने
उहेल्ल झूठ रिहूसेने
मठकर चलि आरैत
देहमे उपजन एकठा अजरे तबहक आरेशे
मोनकेँ नहि देखने छनहु एना कहियो थिसियारैत



किड कहँ हेतु जहिना झूठ चुनियेनीह

झसकेनीह

तामससँ हमब भ्रष्ट तबु गेल तबाबि

ओकरा देखनहु नथशिथ आँखिगुड णि

कहनिथिन्हि अहाँलोकनि बुनाय तँ छी अतिजाति

झदा ईये, संस्कार किये भ गेल अपचाति

अहो छियेक एकतबहक राबिचाव

अहाँलोकनि समाजकेँ जूनि कर एना खबाप

कहु महिनाकेँ महिना संग सहवास

सिनेहक अ कोनरुप केरके नररिकास ?

...

पहिनेतँ ओ सकपकेनीह

हठदै राजे करुँनीह

तखन मोन जँ भेलन्हि कनी श्रिब

हमबा बुमेनीह

अहाँ सुनने छियेक एङ्गिन बिचक रिचाव ?

हुनक कहल 'नेस्त्रियन कान्तिनूथम' शिष्टक साव ?

जकर अर्थ भेलय - 'सथि-रहिनपा' भारक परिविस्तार

एहिमे बुनाओल गेल अछि दैनिक-संस्कारसँ रेशी आमोक तानरंध



दुःख आमोक तामोय मितन संरंध

दुःख देह जखन सनेत छै पवस्पर अंबतामोक दुःख-सुख

तखने होगत छै कोमर आमोयस्पर्श, स्पर्दन, आमोशोति

तपेष्ठात देहोजँ भ जागत छै एक दोसबकेँ अर्पित

ओही संसर्गसँ भेटैत छै मोनक तृप्ति

एक देह तहन नै बूनेत छै दोसब देहक निर्गन्धेदी रूप

खाहे एकबा अपन मापदण्डमे प्रेम बूनिमोक रा प्रेमक रिकप

एड्डीन बिचक 'नेस्त्रियन कान्तिनूथम'क गयह रीजभार

स्त्रीमोनमे देखन गेन अस्मर स्मभार

...

दुनियाँक सब नाबी नहि अछि भागक रानी

जकबा अपन नव सँग मिलैत होगक अंतबमोनक नली

रैसी प्रकथ बूनेत छथि स्त्रीकेँ केरीफियाक निश्चिन्ध-सामादाव

कोथि रँढ ारैक धारिघित्री, गर्भ धारणक सुगढ़ गुंजाव

रैसी प्रकथ बँहत छथि हवदम उग्रसंस्कारक अग्रतायन

नहि देखैत अछि ओकर दैहिकमित्र सहमति छथि रा डेवायन

स्त्रीगणक केरितंत्रिकाक ओ मानिते नै छथि स्त्रतंत्र अस्तित्व

कोनो नै प्रयास बूनेक जे की छी रसुतः स्त्री

जानैत छियै रा नहि दुःख एहि अन्तर्गतिसँ अन्तर्गत संरंध



स्त्रीदेहक संगीत होगत छै शीम्वीय बचनारैध
पहिने ध्रुपद धमार आ आलाप तखन खयार आओव तान तबाना
झुदा जूँ खहाँ छी पाँप संगीतक बबधूस धूम-धड़ ाकक दिराना
तँ एकब रिद्धपताकेँ देन जेतय सहजहि हरेवि
तोड़ि मरोवि
ओही सँ कहियो नै उठैते तखन कोनो बाग
भ जेतैक घोब रिबाग
मनक एकामेकता साधने रिना देह पव भ जायरेँ हारी
कहु एहि रातकेँ कोनो बुनारी
सत कहौ तँ ग छियैक एकठौ भियारह अपबाध
रैलकोरैक सदियह दायभाग
पवस्पर सुखतम दुःख-सुखसँ एकाकाव भेनय रिना
एक-दोसबक मोनमे गहनतम सम्मान जगौने रिना
मीधे दैहिक स्पर्श पव भ जेरैक उताक
तँ खँही बुनारू-
नहि छियैक ग स्त्रीमोन संग फुवतम खेर
आगयो दुनियाँक रहुतो स्त्री एहने जीरन बहलै मेर
प्रकथक एहि फुवतम खेरक प्रतिक्रिया तीक्ष्ण
जनम लेलकेँ हँ आजुक लेस्त्रियनिजम



...

अहाँ सुनने होए रा नहि "रेडिकल फेमिनिज्म"क नाम
आ छियैक पद्धती नाबीरादी आन्दोलनक रिहाती शाखाक उपनाम
देखि नाबीजीवनक माबते बास उपोद्भूत-विषयगत रितर्क
आलोकनि जे दैत छथि एकठा तर्क--
प्रानोग्राफी, रेशारूति, रैलकोब, घरेबुहिसा, दहेजादिक आधाव छै नाबीदेह
स्त्री हेतु तै आरँ महाक जकरा जे ओ भ जाउथ बिदेह
प्रकथणक मोन तखने हेतै आरँ हेँठ आ स्त्रीकेँ भेटैतैक मोन
जखन नाबी तोड़ि देती पविषय, पविषयपुर-कौमार्य, पतिव्रताक अपिमोन
छैसुँ-छुँसुँ रँचा जनती आ क्रमावीमाताकेँ जँ रँनेती अपन जीरनदू'ग
स्त्रीगणक जीरनभावामे तखने भवतहि शृंगारबस-सबसद्धद
आदमीक महत्त ओहीदिन ओबतक जीरनमे भ जेतय हे ओउठा-आँगुब
नेत्रियनिज्म जहिया स्त्रीगणक हितमे रँनि जेतैक समाजिक कानून
सत गप कही जँ खवाप नै मानी
स्त्रीगण अर्थगत, समाजिक, बाजनीतिक आमेनिर्भवताकेँ केरहि आग प्राप्त
हिनकालोकनिकेँ दैहिको आमेनिर्भवता भेटै जेतहि
नेत्रियनिज्म जीरनदू'ग सर्ग जहिया आलोकनि क नेतीह आमेसात
...

अपना सरहक ओहिठा' बह सखी-रहिनपा नगरैक बीत



गुंठनी रँदति, ईँठ पानस्रपावी खुआ

रा कँग्रबिया आँग्रव खुकखुआ...

कहु नैनपनमे कहियो जोड़ने छत्रहु एहन पीबीत

रौनहर जागत छलैक सखी-रँहिनपाक एहने रँहन मजगुत

जे रियाहे रँहन सनक होगत छलैक सुपरिव अजगुत

कतैक कठिन छत्र एक-दोसबक गुप्तबाजकेँ ताजीरन सहेजनाय

जीनगीक डेग डेग पव तनमनधनसँ सखीक काज एनाय

सखी-रँहिनपाय ओकरेसँ जुड़य जकवासँ रँदय आमोय मनरँध

की पहिने बीतरेराजक सकलत रँहन तखन हुअय सुपीबीत-सँरँध ?

लेखिबनिजम सँरँधक पबिरिस्तबक अघर छियैक मर्म

आमोरिनय, सह जीरन-मवन, सह सबसक-सबसिताक सिद्धांतिक धर्म

रौडिकर फेमिनिनिष्ठक नावा छैक "सिष्टबद्ध अज पारबबुत"

मतनरँ ' रँहिनपायमे छैक रँदुत रँदरँत

आओव देनियेहेँ एकठा रात दिस ध्यान-

सखी-रँहिनपायमे नहि लेन जागछ एक-दोसबक असन नाम

कहै जागत छथि एक दोसबकेँ लौंग, पान, सुपावी, जवदा

रा हुनक नामपव जूही, गुनारँ, रेंनी, चँपा, गेंदा

कहि सकैत छी एकव पाछ की बँह मनोरिज्ञान ?

पवणीतोतँ अपन समुब, भैसुब, रबक नहि लेत छथि नाम ?



...

सभ गप स्रनि हम मोने मोन भ गेनहु खराक
प्रलापेनमतिमे सहजहि नहि खुबन की हेते एकव रौछिक जरार
प्रकथ-स्त्रीक रँदनेत सँधक आगु बाखन एहन भारी प्रश्न
रिश्निक चन्द्रधरन संस्कृतिक गानपव नेभवन हमबा अथवन दागधुष्ट

मातृ

श्रीमान आ श्रीमति मृदुला रमा सन
कतेक पितामह-पितामहीकेँ नागन हेतय खुदबूदी
रिचावक ढूँढनी
की मातृक नयका सञ्चकप अयह थिके ?
जे हुनकव रैठा-प्रतौह अमेरीका मे जिरै
एकठँ नरहागक डाकठँव आ पतिदेरकेँ समयक अन्तार
पवसौतीयोकेँ सेहो प्रसर-पीड़ । सहक नगँ बहने तेहन स्रन्तार
सरँ हवरँवायने,
महक जन्दी मे, कृता नहि त दनहेत हँसियाने
रँचाकेँ जनमय दैतय अपन सहज जनम
तखने नै भगरान निथथिन हुनकव स्वागानेख-कवम



जै अहाँ अपने बहरै धबधबायन
तखन तँ किछु निखायत अँठैरै, किछु सकबमो दुँठायत
पडित होय रा पाखन्दी, जेतथीसँ दिन तका बाखु शैतक समय
भागतँ तखन अपना हिसारै जेतथीये जी नै निखताह
एहिमे रँबलजक की छुहि दोख, हुनका की जेनाय-देनाय
दूङा-चाबि घँष्टक प्रसरो-पीड़ १ सुख जखन माताश्री नहिये रूमरँय
मातृरूक करेज जेनाकेँ हत सहजहि सिबजित
छातिमे उतवत कतयसँ रासेनामयी दूधक धाव
पाउडबद्धक खून निटोबि नै हत सँतानक हाव-मौस, मोन-मगज निबमित
पितामह पितामही रँड सेहनुसँ गेल छनीह रिदेशे
मोनमे सेहजने मारैत बास उन्मेष
पुनवस्यवर्णक बँठने रानगीत, फकवा, नजेब-गुजेबक यंत्र
दुप्लादुप्ली अन्नास करहि पोता सँग मथरै, गारँय, सुतेरँक तंत
दादाकेँ तँ बहि-बहि करेजमे उठैहि छननोचनी
पोताकेँ कोब-काह पाँज जेर, घुघुआ की घोघरी ?
रँदमसरा तँ मर-मृत लागि हँसत हँहमे न अँगुवी
दादी तँ समेष्टि जेननि नर-प्रबान अँकठि नुखाक मोठरी
हूदा हाय रे भगरान, एहन अनहेब
छोड़ि केँ 'फेच' मे छोड़ि दूय रँकेत पँचन अँगरानीमे हँह रिचकेने अनेब



दादाक करेज हाँठरहिँत भादरक रिजतता-मेघ सन उठरहिँत ढुकाव
झुदा दादी साहोब साहोब साहोब क रौतकेँ कयरहिँ कहुना सम्भाव
रूढ़ एक तखने हराग-अहसँ हरेरहिँ जे झूहसँ रैकाव
हेब नहिँ अयरहिँ एक्का मिसिया झुसकी दुँष्टता दौतद ठोवपव रैहाव
घब पडूँटि हिनका सभकेँ देन गेरहिँ रिश्राम लेन कम्भ
सुभिता तँ सभ किछक, झुदा हे लोकरेदक अभावे सभ बुद्ध
झुहावि साँमधवि गपशीप कबिते बँहथ कि ता
दोसब घबसँ आओर रैछा कानयक रैकर बाग
दादी हबथियात मोनय धबकबायले चरति पछोब धेनय अरौज
ता प्रतह पाछसँ छैकरकेन मन्मी रौआक सुत के भ गेरय समय
तेँ छोड़ि देखुन ओखन ओकबा, देखुन अपन मोन सँ जी भवि कानय
कानैत कानैत थाकि जखन जेतहिँ सुति तखन निहथ देखि पोताक झूह
दादी मोने मोन रँडरँडरौह - हाय गे निशोथ चिन्कावमोगी रँनबझूह
झुदा ठमकि गेरहिँ पावि, हबथियात मोन भ गेरहिँ झुगेमे हेँठ
नरतुबसँ झूह की नगायर, रँडि याँ रौआसँ सुतनेमे क लेरँ भेँठ
चावि शयनकम्भक घबमे एकठामे बहलिँ रैछा-प्रतौहक दामपल-रौस
कोनमे बाखन चानिक पतंग, सुशिप ठोकर पतवसँ घेवर चाककात
उपवसँ बहय खुजत झुदा नागय जेना होय रैछा पोसयक सद्यह पिजवा
डेढ़ रँवथक एहि छोड़ि एक तँ गप छोड़ि ये दिओ



एकबा की रुदि सकेत छुल्ले पाँटो सातक नमहब रेंदबा ।

नहायन नीन नीनकंठक पाँथिसन चमकेत रिछान तैपव तकिया मरमन

छोड़ एक नोब खबकछन आँथि, छन पेठरुनिया दनय निरिकाव पड़न

दादीकेँ गयादि पड़ि गेलनि अपन छाति सँठन रेंठाक नैनपन

बाति बातिभवि जागि कोना करैत छनीह नोबपन

रेंदनेत बहैत छनी ग्रह-मृतसँ सानन पैजामा केथवी

भवि दिन तहन कोना सुथारैत छनीह गेलुवा भोथवी

एकू टिचियाएँ पव जागि जागत छल्ले भवि अंगनाक लोक

कियो चुचकारैत, कियो प्रचकारैत, कियो पनथी सुतेने क देत छल्ले भोव

कोना सासु, दियादिन, ननद, जयपी, घबक प्रकथोक बहैत छल्ले सहयोग

तखन नै रँचाक करेजमे जनमय अपन दीदी, दादी, काकी, दादा, चाचाक अरबोध

ता दिन रँजकथा नथेबा सभ पसावने छल्ले रँडका घण्टा

पाँडवक दूध रेंचि पैसा हसोथय केव गढ़ने सिष्टियावी-ढंग

प्रचाव क देनकेँ जे पीयाप्रताकेँ दूध पियेने मायक सुनवताय भ जागत छै म्हा

हाय रे रिझापनक ओ दिन

डकछबरो सभ मोहकतक पैसा थाय मिन गेल नथेवरैक संग

कहू रँचा सरहक शीवी आ मनक रिझतिये रेंचय की पढ़नक बह अरैड

पाँडव-दूधक त्रिथय लागत माबिते बास प्रशमाक पुन



सभठाँ बूम् जे बूमिये, उने-जुन

कनजुगक कमाता रँचारेँ दूध पियारैसँ नागलीह कतबाय

सरँकेँ बहन्ति अपन देहेक चमतकाबि, मातृहक भार गेनाह रँकदैँ सुथाय

रँचा सभमे रँढय नागली डायबिया, निमोनिया, प्रतिरोधकमता-स्त्रीक रोग

देस-रिदेसक शिशु मृदुदबक देखलक अँकिड़ १ तँ सबकारोकेँ भ गेलय स्कोभ

रिश्रिक टिकिसक, विशेषज्ञक हूथय नागर तखन सभा सेमिनार

अनुबन्धित शिशु खाद्य सघिता बनमे भ गेलय तैयार

आरँ तँ गाम-गाम आंगनवाड़ी यो केन्द्र पर ठाँगल देखैँ मायक दूधक नाभ

रौतनदूधक हानि

झुदा एखनो कतेक मौगी अपन पीयापुताकेँ नहिये पियारैक जेनय छथि ठानि

एहन चमतकाबि मौगी छथि माय कि पिशीच

अपने जनमन अँशिकेँ काँचे चिराँय रानी बूढ़ी यादादीक थिस्साक डायन

ई कनापब अपन मतर ggaj_endr_a@videha.com पर पठाउ ।



1. आशीष अनचिन्हाव-रिहनि गजन 2. जगदानन्द ना 'मन' - गजन

1



आशीष अनचिन्हाव-



बिहनि गजल
ओकब हाथसँ छुन अछि देह
सदिखन गम गम हुन अछि देह

प्रेमक उचासन मिनन छैक
दू ठाँ घाँक पुन अछि देह

कोना चलि सकते गजब आर
देहक तँ प्रतिकुल अछि देह

गेन्दा सिंगबहाव छै मोन
चम्पा ओ अछि देह

ईशँ अनचिन्हाव चिन्हाव
सभ देहक समतुल अछि देह

मात्रा क्रम-222-2212-21 हरक पाँतिमे
2



जगदानन्द मा 'मन'

गजल

हम जँ पीनहुँ शिबारी कहक जमाना
छीस नै दुख करेजक सुनक जमाना

भैरवहुँ रँडु भैरव नै मोनक
देख झूठ नै करेजक सुनक जमाना

निखन कोना कहँ की की अछि कपावक



छन तै रैहते झुदा सभ दिनक जमाना

दोथ नै हमर नै कररो आव कहियौ

देख तारैत हमरा हँसक जमाना

दर्द जे भेटैले नै 'मन' कनी रूमर

आन अनकर कथन दुख जनक जमाना

(रैहते असम, मात्रा क्रम : २१२२-१२२२-२१२२)

ई कनापव अपन मतलब ggajendra@videha.com पर पठाउ ।



वरि भूषण पाठक

मकअ जिंदगीद

मकअक गाछक सभसँ डुपव नाम-नाम हुन



जेना सिपाहीक कनछैप
आ देहपव पसवत हाथ भविक पात
जेना सिपाहीक डबैपव बाखत थसुत
आ रीति-देठ-रीतक रौगन
जेना गस्सत-गस्सत कावतुस
थेतमे सजत तागनमे गाछ
जेना हाफूसँ पहिलेक सिपाही
आ हे मिथिले
अ सिपाही मिथिलाक दाबिद्वय दूथ क नेनिई के मानत
आ याद कक पुसा
याद बाखु मसीना
अ थिक मिथिलाक नया खजाना
जतए जनमि बहत मिथिलाक नरपुत-सपुत
जतए रौग्न भ२ बहत
पतठनक पतठन
सेना
जे एकदम कष्टरैह
दुर्भिक्ष सरहक रिकह
आरै देखिई ने केते जान कोसीमे
रौदी, दाही नौसीमे
जय मिथिला, जय मसीना, जय मकग



आ मेहिका चाडवकेँ झुदरौद ने कहितौ

जिंदारौद केना कहिँ

जखनि कि ग्रा हबदम जीएने बहलौ

रैस एक आना मिथिनाकेँ ।

2 खेसाबी नहिन

खेसाबीक खेती रैस सबकारे बोकलकए

गाम-समाजमे अखनो राँग-रोपनी

खेत-पथावमे अखनो कमौनी

आ अखनो डीममीमे अहिना दाना भरौनी

तहिना कठनी आ तहिना दौनी

ग्रा निथिछ ओहिना थाबीमे

ओहिना हमब देह आ थुनमे

हमब भाषामे

रूँबि खेसाबी नहिन

आ जे असरमे खेसाबी बह

सएह दोसबकेँ खेसाबी कहए

आ असरी खेसाबी

बाहड़ा क छिन्नका पहिबि

रैनर बहए तीमनबाज



आ करैत संक्रमण

पसारैत रोगक प्राप्ति ।

3 भगवान मकखी आ मिथिला

आ भगवानोकेँ पता बहनि

जे ई देशेकेँ मकए रँचा सकत

एहेन फसिन जे रौंदी आ रँवखाकेँ किछु नै धुंदानै

एहेन जे भेनिई रँवखा तैयो नीक

आ नै भेनिई तैयो तहिना

एहेन सकत कि गिबियो कइ तहिना

एहेन टिकन कि जत्राकेँ पकड़ा मे नै आरै

नै नान नै काबी

आ मकओ रिदा भइ गेलै मिथिलासँ

जेना कि रँहतो चीज निपत्ता भइ गेलै

जेकब नाम रोड डाँठा रूकोमे नै ।

4 अकूआ कइ सप्पत

अकूओ खेने बँह सप्पत

जा तक रँवहर नै

रँवहर नै निकलै



जमीनक रौनव पसावने नान-हबिखव नत्ती
लोककेँ भवमारैत बह
आ निछाँमे जमा करैत
थुरै बस कारेहागड्डेष्ट
एह मिठास कि
रुसियारोकेँ ग्रसिया होए
कथनो-कथनो कीड १-मकोड १ सेहो
सष्टि क२ चाँनाग शुक कबए
आ धवतीपव आरिते
कपखामे पसेबी
भुक्खन, अणभुक्खन, जोगाड १
ब्रती साधू सन्यासी
काँच, उसनन, पकाएन
दूध, दही, तीमन सग
अकूआ तिवपित कबए नगै
रिना प्रुद्धने गाम ठैल जाति
आ बल्लाँ गामरानी फेब घुमि बहन छथिन
नेने दौबी-चंगेवा
नेने उपावक आस



कपआमे पसेवी अलुआ निवाशि नै कबते ।

5 महिक्का धान

महिक्का धान येवि नए भवि रिगहा

आ दाना दए मोन भवि

तँ एकव स्वर्गध न२ क२ की की कवी

केतु रान्ही आ केतु जोगा क२ बाथी

आ आ उपजए हमबा थेतमे

चवि जाए रौरू भैयाक कोठीमे

तँ एहेन बूननताबकेँ केना मनारी

आ हविदम पैचक होवा अलग

रौकाक माए रौकाक भौजी

आरथिन न२ न२ क२ अप्पन गिलास

आ कहथिन जे हमरो उपजत तँ घुमा देरै

आ केना क२ रिसरौस दियारी के हमबा घबमे एक्का कनमा महिक्का चाडव नै

आ महिक्का धान देवक रँदनामी

स्वआदोसँ आ समाजोसँ ।

6 करिता आ धान

हम रैवि-रैवि चाहिँ

जे आ महिक्का धान हमब करितामे आरि क२ गमकए

झुदा हम रोपिँ त्रुसहीकृत

आ दाना रँने खोवा केब



हम चाहिँ जे तनसीएबुन जकाँ

रैस एके-दू करिता निथी हम

झुदा निथए नागिँ

तँ कम्भी अप्पन जान फैनारैए नागै

हम सोचिँ जे एक-दू पाँतिरै डेरी जोड़ ी

झुदा कागत-कनम निँ तँ टैचा जकाँ किछ्छो सम्हारमे नै बहए

हम अथनो आशिँरस्त छी

जे एकदिन हमरो खेतमे तनसीबुन उपजत ।

7 कनियाँ आ करिता

जँए कि मकग आ खेसावीपव निथन देखनथिन

हुनका पक्का रिसरास भ२ गेननि जे हम धान आ मकउपव जकरे निथरै

तँए चेतारनी दैत कहनथिन जे पगनाड जुनि

जे ग्रा आनतू-बानतू अगव-मगव सब निथै छी

जखनि देखी कागत-कनम नेने झुसकिया बहन छी

ग्रा पगनपनी केछु दिन

भोजन रैनरी हम

कपड़ ी-नत्ता साफ कबी हम

आ अहाँ रैस रैसन रौवागत बहरै

हे देखु हम रिगड़ा क२ नै क२ छी

एक-ने-एक दिन अहाँक दिमाग जँष्ट क२ क२ बहत



जेना कि हम करिते नै स्मरिनि
आ ओ स्मरनि नगरनि दिनकरजि आ आवसी राबूक करिता
जेना कि हम किछु बुझिनि नै छी
हे यो हम रैसरे तँ आहुँसँ नीक निखर
आ ए नै बुझियौ जे नीक लोक सब अहाँक प्रशंसा करैत छि
आ यदि आही सन पागत हेते ई धवतीपव
तँ आव की कए सकै छै ।

ई कनापव अपन मतिर ggaj_endr_a@videha.com पब पठाउ ।



राज कन्द पाठक

गजल

हम हार की कहौँ आरँ रैहार छि
रँहु कठिनसँ रीतन ए सार छि
जानि नै मृत् हाएत केहन हमब
जोरैत जिनगी रैनर जँजान छि
झुंझाचारक गप्प जुनि कर भाग यो
नेता अक्सर घुसल नैहार छि
खुरँ मजा कर जा पवि छि जिनगी
कान्ति नर जेरौने रैसर उ कार छि
साँच राजनिहार नै छि कोनो ठाम



यौ हुसिक रापावमे रँडु मान थुछि

करपे काने भीतरे भीतव 'झरुन्द'
प्रेममे सबक होएत अ तान थुछि

सबन रर्षिक रँहव , रर्ष 14
© रौन झरुन्द पाठक । ।

गजन

जहियारुँ अपन घर नाहि थुछि
तहियारुँ केकरो डब नाहि थुछि

मोनक रौत केकवा कहँ थारुँ
ईहि ठाम कियो हमर नाहि थुछि

रियोगे हमतह करपौँ असगव
थहाँ पव कोनो असव नाहि थुछि

सास-पुतोहमे करह मचन डै
रौकी ईहिसँ कोनो घर नाहि थुछि

माँग रँडन दहेजक चहुँ दिस
आदर्श रियासक रव नाहि थुछि

सभ ठाम दंगा पसवन झरुन्द
शीश सहित कोनो धड नाहि थुछि

सबन रर्षिक रँहव , रर्ष 13

ए कनापव अपन मतब ggaj_endr_a@videha.com पव पठाड ।



अनामिका बाज

करिता

स्मृतारान

मूर्त आ साँचक जँतामे पिसागए स्त्री ।

जे स्त्री सभ अलग-अलग रूपमे

प्रकषक सेरक रँनि क२ बँहत छुटि, से प्रकष

ओग सेराक हाँदा रूँमि क२ ओकवा अपन

पएबक धूवा-माँष्टि रूँमेत छुटि ।

स्त्री सँसार बँटेए,

स्त्री पालन करैए,

रँसलैए सभ दिन नर-नर सँसार ।

करैए नहकिबरामे नर रूँगध आ त्रानक सँचार

सभ डगमगागत डेगपव प्रकषक सहचर रँनैए

जगाकै, रँचाकै बथैए सदिखन

प्रकषक रँग-रिँवगा सँसार ।

अपनाकै कथनो सँष्ट क२,

तँ कथनो कात क२ कए ।

ओ स्त्री सतेनापव सँहाविणी सेहो भ२ सकैए ।



ई कनापब अपन मंतर ggaj_endr_a@videha.com पब पठाड ।



सन्दीप कुमार साहू

करिता

१

रैशोखमे दानपब

आड यौ याब, खेलाग छी ताम

रैस क२ अखन कबर की

चरु करै छी छैम पास

रैब मुकटे तै

जाएर करैने घास

चन्द्रान सन रौद नगैए

चाबि राज२ जा बहन अछि

नगैए अखन एक राजन अछि

महीस खोतरँ ओग रैबमे

पोखवि न२ जाएर नहारैने

स्वतन्त्रोमे गबमसँ नीक नै लागै

खाष्टैमे उडै सि करैए



कडुब-मडुबसँ नीन्द नै अरैए
प्रवरौ हरा सेहो पेष्ट हुनारैए
घामसँ देखु गंजी भीज गेल
कौआ डाढ़ी पब नोन रैरैए
मेना जाननपब सगड़ १ करैए
रैगड़ १ दानपब ची-छू-ची-छू
गीत सुनारैए
एहन गवम नै देखनौ कहियो
बातिकै मछुड़
दिनकेँ माँझी तंग करैए
आँउ यौ याव खेलाग छी ताम

२

सेरा
मन होगए कबितौ
रैथोक रियाह
प्रतहू नेन हिक गवत अछि
काज करैत कान आर देह थाकि गेल
भानस करैक
शक्ति नै अछि
रैथी भेनी, अप्पन साम्ब गेली



असगव अंगनामे नीक नै नगौए
होगत प्रतहूँ तँ
एक हाथ सेरा कबितए
झुदा एगो रातक डब नगौए
प्रतहूँक चर्चा देखे छैनमे
अही सेरासँ चित्तु हवागए
पढ़न-लिखन कनियाँ सभ गेन
आदब सकोब सभ रिसवि गेन
आठ रोजेमे, स्मृति कइ उठए
छुला अंगना सभ, अहिना पढ़न-ए
के कबए सम्भव-भैसबक पबदा
बीत-बेराजक उड़ रैए गबदा
एकब देखसी कबए, सभ कनियाँ
अ नै लागए ननदि, साउसकेँ रँढ़ि याँ
एँ पढ़न लिखनसँ घास-छिननी नीक
मन होगए कबितोँ रैछाक रिखाह
प्रतहूँ नैन हिक गबन अछि ।

३

रब रिकाय नगनमे
रबक बेछ नै पछु यो राबू



माबा माँक जेना दाम रैदँए

कनीको पढ़न-लिखन बहन तँ

रैठौरना अप्पन मोँडि सीठैए

नङ्करीनाक खेत रिकीअए

देखु जमाना तान ठोकेए

दूनाक डिमाल्ड अछि,

पाग सन करीजमा

लिखन-पढ़नमे सभसँ तेज

पँचमामे पाँच रैब

अठमामे आठ रैब

दसमामे दस रैब नङ्का हेल

एहनो नङ्का लगनमे रिक गेल

रबक रैठ नै प्रछु यो रारु

माबा माँक जेना दाम रैदँए ।

ई कनापब अपन मतलब ggaj_endra@videha.com पब पठाउ ।



भानुचन्द्र ना



आजूक रैषी

कबाठैक किनासमे ओ

एथने-एथने किछु नरै खब सिखनक अछि सागत ।

अकास दिस पएब उठा कइ जखन ओ किक् मारैत छैक,

तँ करैज झूठमे आरि जागत अछि ।

जे कही अकासमे भूब ने भइ जाग ।

पबम्पवारै गौदड़ १ रैना कइ

सनातन धर्मक बम्का कबएरैना ओ अकास,

आरि जर्जब भइ गेल छैक ।

नरै जमानाक कबाठैस-

मजगूत रैनर पएबक छोटछिनो अगातस,

कइ सकैत अछि ओकब नोकसान ।

भने जर्जरे...

झुदा आगयो ओ तनर अछि कतेको लोकनिक दुप्पब रैनि कइ ।

ई आश्रित सभक फाधस-

आरि सकैत छैक रूगकम्प ।

मौना सकैत अछि हुनका लोकनिक फाधस,

नर अरुबक डिम्भी ।

सैकर जा सकैत अछि कतेको बाजनेतिक रौषी-

महिना सशिकबषाक नामपब ।

रैषी-रैषीक सनातनराद-



हिना सकेत अछि तथकथित समाजिक अरुपावणार्के ।

तेओ-

ओकर ई तबहक आरैसकेँ देखि क२

आश्विस्त होगत छी हम, मोनक बनू कोन्हमे ।

जे आरै ई नर्पसक हुंकावसँ,

छोष्टकावा पारैक ग्रव सीथि लेलक अछि ओ ।

कवाँके कितासमे...

(भारतचन्द्र मा, २००५)

ई कनापव अपन मतिर ggaj_endr_a@videha.com पब पठाउ ।

बिदेह नूतन अंक गद्य-पद्य भावती

१. मोहनदास (दीर्घकथा): लेखक: उदय प्रकाश (मूल हिन्दीसँ मैथिलीमे अनूवाद रिनित
उपेन)

मोहनदास (मैथिली-देरनागरी)

मोहनदास (मैथिली-मिथिलासंस्कृत)

मोहनदास (मैथिली-ब्रैल)

२. छिन्नमस्ता- प्रभा खेतानक हिन्दी उपन्यासक सुशीला मा द्वारा मैथिली अनूवाद

छिन्नमस्ता



३.कनकमणि दीक्षित (मुव नेपालीसँ मैथिली अनुराद प्रीमती कपा धीक आ प्री धीरेन्द्र प्रेमर्षि)

भगता रैङ्क देशे-भ्रम

४.तुकावाम बामा शैष्टिक कौकणी उपन्यासक मैथिली अनुराद डॉ. शिबु कृमाव सिंह द्वारा पाथरौ

रौताना धते



अमित मिश्र

हाथी गेलै भोज खाए

एक जंगलमे पल्लीत हाथी
थाली सदिखन पैठक भाथी
एक रैब रैकबी केनके ब्रत
भोजनमे एलै हाथी मस्त
भोजनमे आवुक परोठा
था बहलै चाष्टि-चाष्टि गुठा
आँष्टि खतम आवु निर्घटन
पैठ एखन आधो नै भवत
घामे-पसीने रैकबी कानै
थाली पैठ तँ भोजन जानै
अन्तमे रैकबी केनक प्रणाम
धन्य प्रभु । आरि दियौ रिबाम
हाथी राजत "हम नै मानरौ"
गुब खेरौ, घरौ नह जेरौ
कानै रैकबी, हाथी रैजा क२
थाग छै हाथी सुँढ नचा क२

ई कनापब अपन मतलब ggaj_endr_a@videha.com पब पठाउ ।



रक्षा लोकनि द्वारा स्वर्णीय श्लोक

१. प्रातः काल ब्रह्मद्वर्त (सूर्योदयक एक घण्टा पहिने) सरप्रथम अपन दू हाथ देखराक चाही, आँ आँ श्लोक रजराक चाही ।

कवाथे रसते तस्माः कवमश्च सबस्रती ।

कवमुने स्थितो ब्रह्मा प्रभाते कवदर्शनम् ॥

कवक आगाँ तस्मा रसित छथि, कवक मध्यामे सबस्रती, कवक मूत्रमे ब्रह्मा स्थित छथि ।
भोवमे ताहि द्वारे कवक दर्शन कवरौक थीक ।

२. संध्या काल दीप तैसराक काल-

दीपमुने स्थितो ब्रह्मा दीपमश्च जनार्दनः ।

दीपाथे शिखरः प्राकृतः संध्याज्यातिर्नमोऽस्तुते ॥

दीपक मूत्र भागमे ब्रह्मा, दीपक मध्याभागमे जनार्दन (रिष्ट) आँ दीपक अग्र भागमे शिखर स्थित छथि । हे संध्याज्याति । अहाँकेँ नमस्कार ।

३. सुतराक काल-

वामं स्कन्दं हनुमन्तं रैनतेर्य वृकोदरम् ।

शयने यः श्वरेणैव दुःस्वप्नस्तु नश्यति ॥

जे सभ दिन सुतरासँ पहिने वाम, क्रमावस्थामे, हनुमान्, गकड आँ भीमक स्मरण करैत छथि, हुनकर दुःस्वप्न नष्ट भऽ जागत छन्हि ।

४. नहराक समय-

गङ्गा च यद्गते तैर गोदारवि सबस्रति ।

नर्मदे सिङ्गु कारेवि जनेऽस्मिन् सन्निधिं करु ॥

हे गंगा, यद्गना, गोदारवी, सबस्रती, नर्मदा, सिङ्गु आँ कारेवी पाव । एहि जनमे अपन सान्निध्य दिथ ।



३. उतर्ब यसेन्द्रश्च हिमाद्रश्चर दक्षिणम् ।

रर्षी तत् भावतं नाम भावती यत्र सन्ततिः ॥

सन्तदक उतर्बमे आह हिमानयक दक्षिणमे भावत अस्ति आह उतर्का सन्तति भावती कहरैत छथि ।

७. अहर्ना द्रौपदी सीता तारा मन्दादरी तथा ।

पञ्चकं ना श्वरेणैव महापातकनाशकम् ॥

जे सभ दिन अहर्ना, द्रौपदी, सीता, तारा आह मन्दोदरी, एहि पाँच साप्ती-स्त्रीक श्वरणा करैत छथि, हुनकर सभ पाप नष्ट भऽ जागत छनि ।

१. अश्विथोमा रैविरासो हनुमाश्च रिभीषणः ।

क्षपः पञ्चवामश्च सन्तुते चिबङ्गीरिनः ॥

अश्विथोमा, रैवि, रास, हनुमान्, रिभीषण, क्षपाचार्य आह पञ्चवाम- आ सात ठाँ चिबङ्गीरी कहरैत छथि ।

५. साते भरतु श्वरीता देरी शिखर रासिनी

उत्थेन तपसा वृद्धा यया पञ्चपतिः पतिः ।

सिद्धिः साक्ष्य सतामस्तु प्रसादान्तुश्च पूज्यैः

जाल्हरिफेननेथेर यन्त्रुषि शिषिनः कना ॥

६. रानोहं जगदानन्द न मे राना सबस्रती ।

अपूर्णे पञ्चमे रर्षे र्क्षयामि जगत्त्रयम् ॥

१०. दुरक्षित मन्त्रशक्त यजुर्वेद अध्याय २२, मंत्र २२)

आ ब्रह्मन्विष्ट प्रजापतिर्वृषिः । निभोकता देवताः । श्रवाङ्कृतिश्रुतः । षड्जः श्रवः ॥

आ ब्रह्मन् ब्रह्मणो ब्रह्मरुसी जायतामा बाष्पेष्टे बाजुन्यः श्रवेऽगमरातिरापी महावथो जायता दोग्ध्री धेनुर्वीटान्द्रानाशः सन्तिः पञ्चवर्षोरा जिष्णु वथेष्टाः सन्तेयो हाराश्च



यजमानस्य रीरो जायतां निकामे-निकामे नः पुर्जन्तां रर्षतु कनरता न२०षधयः पचात्रां
योगेष्कमो नः' कम्पताम् ॥ २२ ॥

मन्त्रार्थाः सिद्धयः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोवथाः । शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तु ।

ॐ दीर्घायिर्भर । ॐ सौभाग्यरती भव ।

हे भगवान् । अपन देशीमे सुयोगा आ सरीर रिद्यार्थी उपेन होथि, आ शत्रुके नशि
कएनिहाव सैनिक उपेन होथि । अपन देशीक गाय खुर् दुध दय रानी, रैवद भाव रहन
कबएमे सम्म होथि आ घोड़ा । ह्वित कपे दौगय रैना होए । स्त्रीगण नगबक
नेत्र कबरौमे सम्म होथि आ हारक सभा मे ओजपूर्ण भाषण देरैयरैना आ नेत्र
देरौमे सम्म होथि । अपन देशीमे जखन आरथक होय रर्षा होए आ षष्ठी-बुद्धि
सरीदा पविपक होगत बहए । एरु एमे सभ तबहै हमबा सभक कर्ता होए । शत्रुक
बुद्धिक नशि होए आ मित्रक उदय होए ॥

मन्त्रार्थे कोन रस्तुक गछा कबरौक चाली तकव रर्षन एहि मन्त्रमे कएन गेल अछि ।

एहिमे राचकबन्धुपमानङ्काव अछि ।

अन्वय-

ब्रह्मन् - रिद्या आदि गुणसँ पविपूर्ण ब्रह्म

बाष्पे - देशीमे

ब्रह्मरुसी-ब्रह्म रिद्याक तेजसँ हकठ

आ जायतां- उपेन होए

बाजुन्यः-बाजा

शुरे-रिना डव रैना

अम्बरा- रीण चनेरौमे निष्पण

अतिरूपी-शत्रुके तावण दय रैना

मनावथो-पेघ बथ रैना रीव



दोग्ध्री-कामना(दुध पूर्ण कबए रानी)

धेनुर्बोठान्द्रानाशः धेनु-गौ रा राणी र्बोठान्द्रा- पैंघ रैंबद नाशः -आशः-ब्रुवित

सन्तिः-घोड़ १

प्रबन्धिर्योरा- प्रबन्धि- रारहावकै धावण कबए रानी योरा-म्वी

जिष्ठु-शित्कै जीतए रैना

बथेष्ठाः-बथ पब स्थिब

सुभेयो-उत्तम सभामे

हाराश-हारा जेहन

यजमानश-राजाक राजामे

रीरो-शित्कै पबाजित कबएरैना

निकामे-निकामे-निश्चयहाकत कार्यमे

नः-रुमव सभक

पर्जन्या-मेघ

रर्षित्तु-रर्षि हेए

रुनरवा-उत्तम रुन रैना

उषधयः-उषधिः

पचान्ता- पाकए

योगेष्क्रमो-अनन्त नन्त करैरौक हेतु कएन गेन योगक बम्का

नः'-रुमवा सभक हेतु

कम्पताम्-समर्थ हेए



त्रिचिथक अनुवाद- हे ब्रह्मा, हमर बाजामे ब्रह्मा नीक धार्मिक रिद्या रैना, बाजान्-
रीव,तीरदाज, दुध दए रानी गाय, दौगय रैना जन्तु, उद्यमी नारी होथि । पार्जन्य
आरथकता पडना पब ररषा देथि, हन देय रैना गाढ पाकए, हम सब संपत्ति
अर्जित/संवर्धित करी ।

बिदेह नूतन अंक भाषापक बचानेखन-

अंग्लिशिकोष-मैथिली- / मैथिलीकोष-अंग्लिश- प्रोजेक्टकेँ आगु रैद १७, अपन स्मार
आ योगदान ङ-मेर द्वारा ggajendra@videha.com पब पठाउ ।

१.भावत आ नेपालक मैथिली भाषा-बैज्ञानिक लोकनि द्वारा रैनाउत मानक शैली आ
२.मैथिलीमे भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

१.नेपाल आ भावतक मैथिली भाषा-बैज्ञानिक लोकनि द्वारा रैनाउत मानक शैली

१.१. नेपालक मैथिली भाषा बैज्ञानिक लोकनि द्वारा रैनाउत मानक उचावण आ लेखन
शैली

(भाषाशास्त्री डा. वामरताव यादरक धावणाकेँ पूर्ण रुपसँ समर्थन निधावित)

मैथिलीमे उचावण तथा लेखन

१. पञ्चमाम्बर आ अनुस्वार. पञ्चमाम्बरानुस्त्रात ङ, ए, ण, न एर म अरैत अछि । संस्कृत
भाषाक अनुसार शिष्टक अनुस्त्रमे जाहि रत्नाक अम्बर बहैत अछि ओही रत्नाक पञ्चमाम्बर
अरैत अछि । जेना-

अङ्ग (क रत्नाक बहरौक कावणे अनुस्त्रमे ङ आएत अछि ।)

पञ्च (च रत्नाक बहरौक कावणे अनुस्त्रमे ए आएत अछि ।)

खल्ल (छ रत्नाक बहरौक कावणे अनुस्त्रमे ण आएत अछि ।)

सन्धि (त रत्नाक बहरौक कावणे अनुस्त्रमे न् आएत अछि ।)

खल्ल (प रत्नाक बहरौक कावणे अनुस्त्रमे म् आएत अछि ।)



उपह्राज रात मैथिलीमे कम देखन जागत छि । पञ्चमास्कबक रैदनामे अक्षिकाणि जगहपब अनुस्त्रावक प्रयोग देखन जागद्ध । जेना- अंक, पंच, थंड, संधि, थंड आदि । ब्राकबाराद पलित गोरिन्द नाक कहँ छनि जे करछा, चरछा आ ठैरछासँ पूर् अनुस्त्राव निखन जाए तथा तरछा आ परछासँ पूर् पञ्चमास्कबे निखन जाए । जेना- अंक, चंचन, थंडा, अलु तथा कम्पन । झुदा हिन्दीक निकट बहन आधुनिक लेखक एहि रातकेँ नहि मानैत छथि । ओ लोकनि अलु आ कम्पनक जगहपब सेहो अंत आ कंपन निथैत देखन जागत छथि ।

नरीन पञ्चति किछु स्वरिषाजनक अरुथु छैक । किएक तँ एहिमे समय आ स्थानक रँचत होगत छैक । झुदा कतेक रैब हस्तलेखन रा झुदामे अनुस्त्रावक छोट सन रिन्दु स्पष्ट, नहि बेनासँ अर्थक अनर्थ होगत सेहो देखन जागत छि । अनुस्त्रावक प्रयोगमे उच्चारण-दोषक सम्भारना सेहो ततरँ देखन जागत छि । एतदर्थ कसँ नह कसँ परछा धरि पञ्चमास्कबेक प्रयोग कवरँ उचित छि । यसँ नह कसँ छ धरि अस्कबक सन् अनुस्त्रावक प्रयोग कवरँमे कतहु कोनो विवाद नहि देखन जागद्ध ।

२.ठ आ ट : ठक उच्चारण "व् ह" जकाँ होगत छि । अतः जतह "व् ह" क उच्चारण हो ओतह मात्र ठ निखन जाए । आन ठाम खाली ठ निखन जएरौक चाही । जेना-

ठ = ठाकी, ठेकी, ठीठ, ठेडुआ, ठम्, ठेवी, ठाकनि, ठाठ आदि ।

ठ = पढ़ाग, रँठरँ, गठरँ, मठरँ, रँठरा, साँठ, गाठ, बीठ, चाँठ, सीठी, पीठी आदि ।

उपह्राज शिष्ट, सबकेँ देखनासँ छ स्पष्ट, होगत छि जे साधारणतया शिष्टक शुकमे ठ आ मध्य तथा अन्तमे ठ अरैत छि । एएह नियम ड आ डक सन्दर्भ सेहो लागू होगत छि ।

३.र आ रँ : मैथिलीमे "र" क उच्चारण रँ कएन जागत छि, झुदा ओकबा रँ कपमे नहि निखन जएरौक चाही । जेना- उच्चारण : रँदनाथ, रिद्या, नरँ, देरँता, रिष्टु, रँशि, रँदना आदि । एहि सबक स्थानपब क्रमशः रँदनाथ, रिद्या, नर, देरता, रिष्टु, रँशि, रन्दना निखरौक चाही । सामान्यतया र उच्चारणक लेन ओ प्रयोग कएन जागत छि । जेना- ओकीन, ओजह आदि ।

४.य आ ज : कतहु-कतहु "य" क उच्चारण "ज" जकाँ करैत देखन जागत छि, झुदा ओकबा ज नहि निखरौक चाही । उच्चारणमे यङ, जदि, जझना, जूग, जारँत, जोगी,



जदू, जम आदि कहल जाएँना शिष्ट, सबकेँ क्षमणः यङ्ग, यदि, यङ्गना, हाग, यारत, योगी, यदू, यम लिखलक चाही ।

३.६ आ य : मैथिलीक रतिनीमे ए आ य दुनू लिखल जागत अछि ।

प्राचीन रतिनी- कएन, जाए, होएत, माए, भाए, गाए आदि ।

नरीन रतिनी- कयन, जाय, होयत, माय, भाय, गाय आदि ।

सामान्यतया शिष्टक शुकमे ए मात्र अरैत अछि । जेना एहि, एना, एकव, एहन आदि । एहि शिष्ट, सबक स्थानपव यहि, यना, यकव, यहन आदिक प्रयोग नहि कबरलक चाही । यद्यपि मैथिलीभाषी थाक सहित किछु जातिमे शिष्टक आवृत्तामे “ए” केँ य कहि उच्चारण कएन जागत अछि ।

ए आ “य”क प्रयोगक सन्दर्भमे प्राचीन पञ्चतक अनुसवण कवरि उपहाज मानि एहि प्रसुकमे ओकर प्रयोग कएन गेल अछि । किँक तँ दुनूक लेखनमे कोनो सहजता आ दुकहतक रीत नहि अछि । आ मैथिलीक सरसाधारणक उच्चारण-शैली यक अपेक्षा एस रैसी निकट छैक । थाम क२ कएन, हएँ आदि कतिपय शिष्टकेँ केँन, ठेँ आदि कपमे कतहू-कतहू लिखल जाएँ सेहो “ए”क प्रयोगकेँ रैसी समीचीन प्रमाणित करैत अछि ।

३.७ हि, हू तथा एकाव, ओकाव : मैथिलीक प्राचीन लेखन-पवम्पवामे कोनो रीतपव रँन दैत कार शिष्टक पाछाँ हि, हू लगल जागत छैक । जेना- हुनकहि, अपनहू, ओकरहू, तकोरहि, छेष्टहि, आनहू आदि । मूदा आधुनिक लेखनमे हिक स्थानपव एकाव एँ हूक स्थानपव ओकावक प्रयोग करैत देखल जागत अछि । जेना- हुनके, अपनो, तकोने, छेष्ट, आनो आदि ।

१.४ तथा थ : मैथिली भाषामे अपिकाशितः षक उच्चारण थ होगत अछि । जेना- षडान्द (थडयन्द), थोडशी (थोडशी), षष्टकोष (थष्टकोष), वृषेण (वृथेण), सन्ताष (सन्ताथ) आदि ।

४. धनि-लोप : निम्नलिखित अरस्थामे शिष्टसँ धनि-लोप भ२ जागत अछि:



(क) क्रियानुयी प्रत्य अयमे य रा ए वृत्तु भ२ जागत अछि । ओहिमे सँ पहिने अक उचावण दीर्य भ२ जागत अछि । ओकर आगाँ लोप-सूचक छल रा रिकारी (' / २) नगाओन जागछ । जेना-

पूर्ण कप : पठए (पठय) गेनाह, कए (कय) लेन, उठए (उठय) पडतौक ।

अपूर्ण कप : पठ गेनाह, क लेन, उठ पडतौक ।

पठ२ गेनाह, क२ लेन, उठ२ पडतौक ।

(ख) पुरकानिक छत आय (आए) प्रत्यमे य (ए) वृत्तु भ२ जागछ, झुदा लोप-सूचक रिकारी नहि नगाओन जागछ । जेना-

पूर्ण कप : आए (य) गेन, पठाय (ए) देरँ, नहाए (य) अएनाह ।

अपूर्ण कप : आ गेन, पठा देरँ, नहा अएनाह ।

(ग) स्त्री प्रत्य एक उचावण क्रियापद, संज्ञा, ओ विशेषण तीनुमे वृत्तु भ२ जागत अछि । जेना-

पूर्ण कप : दोसरि मानिनि चलि गेलि ।

अपूर्ण कप : दोसर मानिन चलि गेल ।

(घ) वर्तमान ध्रुवक अन्तिम त वृत्तु भ२ जागत अछि । जेना-

पूर्ण कप : पठेत अछि, रजैत अछि, गरैत अछि ।

अपूर्ण कप : पठे अछि, रजै अछि, गरै अछि ।

(ङ) क्रियापदक अरसान एक, उक, ईक तथा हीकमे वृत्तु भ२ जागत अछि । जेना-

पूर्ण कप: छियोक, छियेक, छहीक, छोक, छैक, अरितेक, होगक ।

अपूर्ण कप : छियौ, छिये, छही, छौ, छै, अरिते, होग ।

(च) क्रियापदीय प्रत्य न्ह, हू तथा हकावक लोप भ२ जागछ । जेना-

पूर्ण कप : छन्हि, कहन्हि, कहन्हूँ, गेनाह, नहि ।

अपूर्ण कप : छनि, कहनि, कहनौँ, गेनाह, नग, नहि, नै ।

९. प्रनि स्थानान्तरण : कोनो-कोनो स्वर-प्रनि अपना जगहसँ हटि क२ दोसर ठाम चलि जागत अछि । आस क२ अस्र ङ आ उक स्रञ्जमे ङ रात नागु होगत अछि ।



मैथिलीकवण भ२ गेन शिछक मया रा अलुमे जँ द्रस्य ग रा उ आरैए तँ ओकव पुनि स्थानावृत्तित भ२ एक अक्षर आगाँ आरि जागत अछि । जेना- शनि (शेगन), पानि (पागन), दानि (दागन), माष्टि (मागष्ट), काढ (काउढ), मास्र (माउस) आदि । ऋदा तसेम शिछ सभमे ङ निखम नागू नहि होगत अछि । जेना- बश्मिके बगश्म आ स्रपाश्रुके स्रपाउस नहि कहन जा सकैत अछि ।

१०. हलन्त (्)क प्रयोग : मैथिली भाषामे सामान्यतया हलन्त (्)क आरंभिकता नहि होगत अछि । काका जे शिछक अलुमे अ उच्चारण नहि होगत अछि । ऋदा संस्कृत भाषासँ जहिनाक तहिना मैथिलीमे आएन (तसेम) शिछ सभमे हलन्त प्रयोग कएन जागत अछि । एहि पोथीमे सामान्यतया सम्पूर्ण शिछकेँ मैथिली भाषा सम्वन्धी निखम खनसाव हलन्तरिहीन बाखन गेन अछि । ऋदा र्काकवण सम्वन्धी प्रयोजनक लेन अलारंभिक स्थानपव कतह्-कतह् हलन्त देन गेन अछि । प्रसुत पोथीमे मैथिली लेखनक प्राचीन आ नवीन दुनू शैलीक सबन आ समीचीन पक्ष सभकेँ समेटि क२ रर्ण-रिग्यास कएन गेन अछि । स्थान आ समयमे रँचतक सङ्गति हस्त-लेखन तथा तकनीकी दृष्टिसँ सेहो सबन होरँहँरा हिसारसँ रर्ण-रिग्यास मिनाओन गेन अछि । रतिमान समयमे मैथिली मातृभाषी पर्यन्तकेँ आन भाषाक माध्यामसँ मैथिलीक ज्ञान लेरँ पडि बहन पवित्रेक्ष्यमे लेखनमे सहजता तथा एककपतापव ध्यान देन गेन अछि । तखन मैथिली भाषाक मूल विशेषता सभ कर्णित नहि होगक, ताहू दिस लेखक-मन्दन सचेत अछि । प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डा. वामारताव यादरक कहँ छनि जे सबनतक अनुसन्धानमे एहन अरस्था किलहू ने आरँहँ देरौक चाही जे भाषाक विशेषता छँहमे पडि जाए ।

-(भाषाशास्त्री डा. वामारताव यादरक पावणार्के पूर्ण कपसँ सङ्ग व२ निर्धारित)

१.२. मैथिली अकादमी पठना द्वारा निर्धारित मैथिली लेखन-शैली

१. जे शिछ मैथिली-साहित्यक प्राचीन कालसँ आग धरि जाहि रर्तनीमे प्रचलित अछि, से सामान्यतः ताहि रर्तनीमे लिखन जाय- उदाहरणार्थ-

ब्राह्म

एखन

ठाम

जकब, तकब

तनिकब

अछि



अग्राह

अथन, अथनि, एथेन, अथनी

ठिमा, ठिना, ठिमा

जेकब, तेकब

तिनकब । (रैकल्पिक कर्पे ग्राह)

ईद, अहि, ए ।

२. निम्नलिखित तीन प्रकारक कर्प रैकल्पिकतया अपनाउन जाय: भ२ गेन, भ३ गेन रा भ४ गेन । जा बहन अछि, जाय बहन अछि, जाए बहन अछि । कब गेनाह, रा कबय गेनाह रा कबय गेनाह ।

३. प्राचीन मैथिलीक 'न्ह' प्रनिक स्थानमे 'न' लिखत जाय सकैत अछि यथा कहननि रा कहनहि ।

४. 'ई' तथा 'उ' ततय लिखत जाय जत सम्प्रतः 'अग' तथा 'अउ' सदृश उच्चारण अछि हो । यथा- देखैत, छलैक, रौआ, छैक अलादि ।

५. मैथिलीक निम्नलिखित शिष्ट, एहि कर्पे प्रहाज होयत: जैह, सैह, अएह, ओह, तैह तथा दैह ।

६. ह्रस्व अकारांत शिष्टमे 'अ' के वृत्त कवरि सामान्यतः अग्राह थिक । यथा- ग्राह देखि आरह, मानिनि गेलि (मनुष्य मात्रमे) ।

७. स्वतंत्र ह्रस्व 'अ' रा 'य' प्राचीन मैथिलीक उच्चारण आदिमे तँ यथारत बाखत जाय, किंतु आधुनिक प्रयोगमे रैकल्पिक कर्पे 'अ' रा 'य' लिखत जाय । यथा:- कयन रा कएन, अयनाह रा अएनाह, जाय रा जाए अलादि ।

८. उच्चारणमे दु स्वक रीच जे 'य' प्रनि स्वतः आरि जागत अछि तकरा नेथमे स्थान रैकल्पिक कर्पे देन जाय । यथा- पीआ, अटैआ, रिआह, रा पीया, अटैया, रियाह ।

९. सान्नासिक स्वतंत्र स्वक स्थान यथासंभर 'अ' लिखत जाय रा सान्नासिक स्व । यथा:- मैआ, कनिआ, किवतनिआ रा मैआँ, कनिआँ, किवतनिआँ ।

१०. कावकक रिभक्तिभक्त निम्नलिखित कर्प ग्राह:- हाथकै, हाथसँ, हाथेँ, हाथक, हाथमे । 'मे' मे अनुस्वार सरिआ लाज्य थिक । 'क' क रैकल्पिक कर्प 'केव' बाखत जा सकैत अछि ।

११. पूर्वकालिक क्रियापदक रौद 'कय' रा 'कए' अराय रैकल्पिक कर्पे लगाउन जा



সক্ৰৈত খণ্ডি । যথা:- দেখি কয রা দেখি কএ ।

২. মাঁগ, ভাঁগ আদিক স্থানমে মাঙ, ভাঙ এলাদি নিখর জায়।

১২. অর্ধ্বে 'ন' ও অর্ধ্বে 'ম' ক বঁদনা অনুসার নহি নিখন জায়, কিন্তু ডাপাক সুরিধার্থ অর্ধ্বে 'ঙ', 'এ', তথা 'ণ' ক বঁদনা অনুসারো নিখন জা সকেত খিদি। যথা:-
অর্ধ্বে, রা অর্ধ্বে, অখন রা অর্ধ্বে, কণ্ঠ রা কণ্ঠ।

୧୫. ଚରଣ ଚିହ୍ନ ନିଶ୍ଚୟତଃ ଗୁଣାଂଶ ଜାୟ, କିନ୍ତୁ ରିଭାଞ୍ଜିକ ସଂଗ ଥକାବାଦ ପ୍ରୟୋଗ କଏନ ଜାୟ । ଯଥା:- ଶ୍ରୀମାନ୍, କିନ୍ତୁ ଶ୍ରୀମାନ୍ନକ ।

୧୩. ସଭା ଏକତ୍ର କାବକ ଟିକ୍ସ ଶିକ୍ଷାରେ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ କ'ରି ନିଅନ୍ତୁ ଜାଣ, ଟିକ୍ସ କ'ରି ନାହିଁ, ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ
ରିଭର୍ସିଭାଲ ହେତୁ ହବାକ ନିଅନ୍ତୁ ଜାଣ, ଯଥା ଘର ପବକ ।

১৩. ঋতুনাসিককে চন্দ্ররিন্দু দ্বারা রক্ত কখন জায়। পর্বত দুদ্রাক স্বরিতার্থ হি সমান জটিল মাত্রাপব ঋতুনাসিক প্রয়োগ চন্দ্ররিন্দুক রঁদনা কখন জা সকেত খন্ডি। যথা- হি কেব রঁদনা হি।

୧୩. ପୂର୍ଣ୍ଣ ରିବାୟ ପାସ୍‌ସି (।) ସୂଚିତ କଥା ଜାଣ ।

১৪. সমস্ত পদ সঠিক ক্রিয়ার জায়, বা হাণ্ডফেনস জোড়ি ক্রিয়ার হঠাৎ ক্রিয়ার নহি।

୧୬. ତିଥି ତଥା ଦିଅଁ ଶିଳ୍ପରେ ରିକାବୀ (୨) ନହିଁ ଚଳାଉଛନ୍ତି ।

୨୦. ଓଁକ ଦେରନାଗବୀ କପମେ ବାଧନ ଜାୟ ।

২১.কিছু ধ্বনিক দ্বেব নরান চিন্হ বৈনরৌণ্ডব জায় । জা গু নহি বৈনব খন্ডি তারিত এহি
দুন্ ধ্বনিক বৈদবা পূরিত অয/ আয/ ঞয/ ঞায/ ঞাও/ ঞও বিখব জায় । ঞাকি এ রা
ঐ সঁ ঞাও কএব জায় ।

হ.।- গোবিন্দ সা ১১/৮/৭৩ শ্রীকান্ত ঠাকুর ১১/৮/৭৩ সুরেন্দ্র সা -স্বপন- ১১/০৮/৭৩

২. যৌথভাবে ভাষা সম্পাদন পাঠ্যক্রম

২.১. উচ্চাকাশ নির্দেশি: (ব্ল্যাক কএব কপ গ্রাহ্য):-

দত্ত ন ক উচাবণমে দাঁতমে জীহ সঠত- জেনা রাঁজু নাম, হুদা প ক উচাবণমে
জীহ মুখমে সঠত (নৈ সঠেঐ তঁ উচাবণ দোষ খিচি)- জেনা রাঁজু গণেশী। তানরা
শেমে জীহ তানসঁ, ষমে মুখসঁ আ দত্ত সমে দাঁতসঁ সঠত। নিশাঁ, সভ আ শৌষণ



रौजि क२ देखु । मैथिलीमे स केँ रैदिक सँकृत जकाँ थ सेहो उचवित कएन जागत अछि, जेना रसा, दोष । य अनेको स्थानपर ज जकाँ उचवित होगत अछि आ ण ड जकाँ (यथा संयोग आ गणेशे सँजोग आ

गड्ढमे उचवित होगत अछि) । मैथिलीमे र क उचावा रँ ने क उचावा स आ य क उचावा ज सेहो होगत अछि ।

ओहिना द्रस्र ग रैशीकान मैथिलीमे पहिने रौजन जागत अछि कावण देरनागरीमे आ मिथिलास्रवमे द्रस्र ग अस्सवक पहिने निखनो जागत आ रौजनो जएरौक चानी । कावण जे हिन्दीमे एकव दोषपूर्ण उचावण होगत अछि (निखन तँ पहिने जागत अछि रुदा रौजन रौदमे जागत अछि), से शिक्षा पद्धतिक दोषक कावण हम सब ओकव उचावण दोषपूर्ण ठगसँ क२ बहन छी ।

अछि- अ ग ड ईछ (उचावा)

छथि- छ ग थ छैथ (उचावा)

पहूँछि- प हूँ ग च (उचावा)

आरँ अ आ ग ङ ए ई ओ ँ अः म ई सब नेन मात्रा सेहो अछि, रुदा ईमे ङ ई ओ ँ अः म केँ सहाजस्रव कपमे गगत कपमे प्रहाङ्ग आ उचवित कएन जागत अछि । जेना म केँ बी कपमे उचवित कवरँ । आ देखियौ- ई नेन देखिपुं क प्रयोग अवरूचित । रुदा देखिई नेन देखिये अवरूचित । कू सँ हूँ धवि अ सम्वित भेनासँ क सँ हूँ रँनेत अछि, रुदा उचावा कान हननु हाङ्ग शैर्छक अन्तक उचावणक प्रवृत्ति रँठन अछि, रुदा हम जखन मनोजमे ज् अन्तमे रँजैत छी, तखनो प्रबनका लोककेँ रँजैत स्वरँहि- मनोज२, रासुरमे ओ अ हाङ्ग ज् = ज रँजै छथि ।

हेब ड अछि ज् आ ए० क सहाङ्ग रुदा गगत उचावण होगत अछि- गा । ओहिना स्र अछि क् आ स क सहाङ्ग रुदा उचावण होगत अछि छ । हेब श् आ व क सहाङ्ग अछि श्रै (जेना श्रैमिक) आ स् आ व क सहाङ्ग अछि स् (जेना मिस्र) । ए नेन त+व ।

उचावणक ऑडियो फागत बिदेह आकाश्रि <http://www.videha.co.in/> पर उपलब्ध अछि । हेब केँ / सँ / पर पूर्व अस्सवसँ सँ क२ निथु रुदा तँ / क२ सँ क२ । ईमे सँ मे पहिन सँ क२ निथु आ रौदरँना सँ क२ । अँकक रौद ठी निथु सँ क२ रुदा अग्र ठाम ठी निथु सँ क२ जेना

छसँ रुदा सब ठी । हेब उअ य सातम निथु- छठम सातम ले । घवरँवमे रँवा रुदा घवरँवमे रँवा प्रहाङ्ग कक ।

बरुअ-



बैठ क्रुदा सकैए (उच्चावण सकै-ए) ।

क्रुदा कथनो कान बहए आ बैठ मे अर्थ भिन्नता सेहो, जेना से कम्या जगहमे पार्किंग कबरौक अग्राम बैठ ओकरा । प्रदुनापव पता नागर जे दुनदुन नाम्ना आ द्रागव कनाष्ट ब्रसक पार्किंगमे काज करैत बहए ।

हुनै, हुनए मे सेहो ई तबहक भेल । हुनए क उच्चावण हुन-ए सेहो ।

संयोगने- (उच्चावण संजोगने)

कै/ क२

केव- क (

केव क प्रयोग गद्यमे ले करू , पद्यमे क२ सकै छी ।)

क (जेना वामक)

वामक आ सँगे (उच्चावण वाम के / वाम क२ सेहो)

सँ- स२ (उच्चावण)

चन्द्रबिन्दू आ अन्नस्राव- अन्नस्रावमे कंठ धविक प्रयोग होगत अछि क्रुदा चन्द्रबिन्दूमे ले । चन्द्रबिन्दूमे कनेक एकावक सेहो उच्चावण होगत अछि- जेना वामसँ- (उच्चावण वाम स२) वामकै- (उच्चावण वाम क२/ वाम के सेहो) ।

कै जेना वामकै भेल हिन्दीक को (वाम को)- वाम को= वामकै

क जेना वामक भेल हिन्दीक का (वाम का) वाम का= वामक

क२ जेना जा क२ भेल हिन्दीक कव (जा कव) जा कव= जा क२

सँ भेल हिन्दीक से (वाम से) वाम से= वामसँ

स२ , त२ , त , केव (गद्यमे) एते चाक शिष्ट सरहक प्रयोग अछि ।

के दोसव अर्थे प्रहाज भ२ सकैए- जेना, के कहवक ? रिभञ्जि "क"क रँदना एकव प्रयोग अछि ।

नहि, नहि, नै, नग, नँग, नगँ, नगँ ई सबक उच्चावण आ लेखन - **नै**



ओर क रँदनामे र जेना मरुपुर्ण (मरुओरुपुर्ण नै) जतए अर्थ रँदनि जाए ओतहि मात्र
तीन अक्षरक संज्ञाअक्षरक प्रयोग उचित । सम्पति- उच्चारण स स् अ त (सम्पति नै-
काव सही उच्चारण आसानसँ समुत्तर नै) । क्रदा सरेतिम (सरेतिम नै) ।

बाह्यि (बाह्यीय नै)

सकैए/ सकै (अर्थ परिवर्तन)

पोछेने/ पोछे नेव/ पोछए नेव

पोछेए/ पोछए/ (अर्थ परिवर्तन) पोछए/ पोछे

ओ लोकनि (लृष क२, ओ मे रिकारी नै)

ओअ/ ओहि

ओहने/

ओहि नेव/ ओही व२

जएरौ/ रैसरौ

पँचअया

देखियोक/ (देखिओक नै- तहिना अ मे क्रस्र आ दीर्घक मात्राक प्रयोग अनूचित)

जकाँ / जेकाँ

तँअ/ तैँ/

होएत / हएत

नहि/ नहि/ नँअ/ नअ/ नै

सौँसे/ सौँसे

रँड /

रँडी (मोवाओव)

गाए (गाअ नहि), क्रदा गाअक दुध (गाअक दुध नै ।)

बहलौ/ पहिबतैँ

हमही/ अही

सरँ - सभ



सर्वेच्छ - सल्ल

धवि - त

गप- रौत

रूसरै - समसरै

रूसरौ/ समसरौ/ रूसरहँ - समसरहँ

हमवा आव - हम सल

आकि- आ कि

सकैछ/ करैछ (गद्यमे प्रयोगक आरथकता नै)

होखन/ होनि

जाखन (जानि नै, जेना देन जाखन) ऊदा जानि-रूसि (अर्थ परिवर्तन)

पथर/ जाथर

आड/ जाड/ आडु/ जाडु

मे, कै, सँ, पव (शेछसँ सँ क२) तँ क२ ध२ द२ (शेछसँ छँ क२) ऊदा दूठा रा रैसी रिभञ्जि सँग बहनापव पतिव रिभञ्जि ठाँकै सँठु । जेना **अमे सँ** ।

एकठा , दूठा (ऊदा क२ ठा)

रिक्काविक प्रयोग शिष्टक अन्तमे, रीचमे अनारथक करै नै । आकावातु आ अन्तमे अ क रौद रिक्काविक प्रयोग नै (जेना **दिख**

, आ/ दिय , आ , आ नै)

अपेक्षार्थक प्रयोग रिक्काविक रैदनामे कवरै अन्तित आ मात्र वास्तविक तकनीकी नूनताक परिचायक)- उना रिक्काविक संस्कृत कप २ अरग्रह कहन जागत अछि आ रतनी आ उचावण दू ठाम एकव नोप बहत अछि/ बहि सकैत अछि (उचावणमे नोप बहिने अछि) । ऊदा अपेक्षार्थक सेहो अर्थेजामे पसेसिर केसमे होगत अछि आ हेंचमे शिष्टमे जतए एकव प्रयोग होगत अछि जेना *raison d'etre* एतए सेहो एकव उचावण रैजौन डेरेव होगत अछि, माने अपेक्षार्थक अरकाशि नै दैत अछि रवन जोडेते अछि, से एकव प्रयोग रिक्काविक रैदना देनाग तकनीकी करै सेहो अन्तित) ।

अगमे, एहिमे/ अमे



जगमे, जाहिमे

एथन/ अथन/ अगथन

कै (के नहि) ये (अनुयाव बहित)

भ२

ये

द२

तँ (त२, त नै)

सँ (स२ स नै)

गाछ तब

गाछ वग

साँस थन

जो (जो go, करै जो do)

ते/तथ जेना- ते दूखारे/ तगमे/ तगने

जै/जथ जेना- जै कावण/ जगसँ/ जगने

ई/अथ जेना- ई कावण/ ईसँ/ अगने/ झुदा एकव एकठाँ खास प्रयोग- नावति कतेक दिनसँ कहैत बहैत अथ

लै/वथ जेना लैसँ/ वगने/ लै दूखारे

नहँ/ लौ

गेलौ/ लेलौ/ लेवहँ/ गेवहँ/ लेवहँ/ लेव

जग/ जाहि/ जै

जहिगाम/ जाहिगाम/ जगगाम/ जैगाम

एहि/ अहि/



अग (राकक अतमे त्राहा / अ

अगड/ अडि/ अड

तग/ तहि/ ते/ ताहि

उहि/ उअ

साथि/ साथ

जोरि/ जोरी/ जोर

भलेही/ भवहि

ते/ तँग/ तँ

जावर/ जावर

नग/ ने

डग/ डे

नहि/ ने/ नग

गग/ गे

डनि/ डन्हि ...

समय मेरदक संग जखन कोनो रिभक्ति जुटे छै तखन समे जना समेपव
गत्यादि । असगवमे द्दय आ रिभक्ति जुटेने द्ददे जना द्ददेसँ, द्ददेमे गत्यादि ।

जग/ जाहि/

जे

जहिगाम/ जाहिगाम/ जगगाम/ जेगाम

एहि/ अहि/ अग/ अ

अगड/ अडि/ अड

तग/ तहि/ ते/ ताहि

उहि/ उअ

साथि/ साथ



जरीरि/ जरीरी/

जरीरं

भने/ भनेही/

भवहि

ठे/ ठंग/ ठँ

जाधरै/ जधरै

नग/ ने

ढग/ ढे

नहि/ ने/ नग

गग/

गे

डनि/ डन्हि

चकन थडि/ गेव गडि

२.२. मैथिलीमे भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

नीचाँक सूचीमे देन रिक्वमेस लैंग्वेज एडीटर्न द्वारा कौन कप चुनन जेरौक चाही:
रौन्ड कएन कप त्राह:

१. होयरैना/ होरैयरैना/ होमयरैना/ हेरै रैना, हेम रैना/ होयरौक/होरैयरैना /होयरौक

२. था/ था२

था

३. क नेने/क२ नेने/क३ नेने/क४ नेने/न/व२/नय/व३

४. भ गेन/भ२ गेव/भ३ गेन/भ४

गेव

५. कव गेवाह/कव२

गेवह/कव३ गेवाह/कव४ गेवाह



७.

विश्व/दिश्व विय, दिय, विश्व, दिय /

१. कव रैना/कव२ रैना/ कवय रैना कलेरैना/क व रैना /

कलेराव

४. रैना रना (प्रकष), रानी (स्त्री) ७

.

आइव आग्र

१०. आयः आयह

११. दुःख दुथ १

२. चनि गेन चव गेव/चैन गेन

१३. देवखिन्ह देवकिन्ह, देवखिन

१४.

देखवहि देखवनि/ देखजेन्ह

१५. छथिन्ह/ छवहि छथिन/ छनैन/ छवनि

१७. चजेत/देत चवति/देति

१९. एथनो

अथनो

१४.

रैठनि रैठजन रैठहि

१६. ७/७२(सरनाम) ७

२०

७ (संयोजक) ७/७२

२१. हागि/हागिं हागि/हागि

२२.



जे जे/जे२ २३. ना-बुब ना-बुब

२४. केवहि/केवनि/कयवहि

२५. तखनत/ तखन त

२६. जा

बहव/जाय बहव/जाय बहव

२७. निकय/निकय

वागव/ वगव रँहवाय/ रँहवाय वागव/ वगव निकव/रँहवाय वागव

२८. उतय/ जतय जत/ उत/ जतय/ उतय

२९.

की बूबव जे कि बूबव जे

३०. जे जे/जे२

३१. कूदि / यादि(योन पावर) कूद/याद/कूद/याद/

यादि (योन)

३२. ओहो/ ओहो

३३.

हंस/ हंस हंस

३४. नौ आदि दस/नौ किंरा दस/ नौ रा दस

३५. सस-सस सस-सस

३६. छत/ सात छ/छः/सात

३७.

की की/ की२ (दीर्घाकाबानुमे २ रजित)

३८. जरारै जरारै

३९. कबताह/ कबताह कबताह

४०. दवान दिशि दवान दिशि/दवान दिस



४९

गेवारु गधवारु/गयवारु

४२. किछु आव/ किछु ओव/ किछु आव

४३. जाग छव/ जागत छव जाति छव/जेत छव

४४. पहुँचि/ भेटै जागत छव/ भेटै जाग छव पहुँचि/ भेटै जागत छव

४५.

जरौन (घरा)/ जरान(खेजी)

४७. वय/ वय क/ क२/ वय क२ / व२ क२/ व२ क२

४९. व/व२ कय/

क२

४८. एथन / एथने / अथन / अथने

४९.

अहीकेँ अहीकेँ

५०. गहीव गहीव

५१.

धाव पाव केनाथ धाव पाव केनाथ/केनाथ

५२. जेकाँ जेकाँ/

जकाँ

५३. तहिना तेहिना

५४. एकव अकव

५५. रँहिनड रँहनोथ

५६. रँहिन रँहिन

५७. रँहिन-रँहनोथ

रँहिन-रँहनड



७८. नहि/ नै

७९. कबरौ / कबरौय/ कबरौय

८०. ठँ/ त २ तय/तय

८१. भैयारी मे छोट-भाय/भै, जेठ-भाय/भाय

८२. गिनतीमे दू भाग/भाय/भाय

८३. ओ पोखी दू भायक/ भाय/ भाय/ नेन । यारत जारत

८४. माय मे / माय कदा मायक मयता

८५. देखि/ दखन दनि/ दयहि/ दयहि दहि/ दैहि

८६. द/ द२/ दय

८७. ओ (संयोजक) ओ२ (संरनाम)

८८. तका कय तकाय तकाय

८९. पैरे (on foot) पयरे कयक/ कैक

९०.

ताहमे/ ताहमे

९१.

प्रतीक

९२.

रैजा कय/ कय / क२

९३. रैननाय/रैननाय

९४. खेवा

९५.

दिनका दिनका

९६.

तबहिँ



११. गवरौवहि/ गवरौवनि/

गवरौवहि/ गवरौवनि

११. रौव रौव

१२.

चेह चिह(अश्व)

१०. जे जे

११

. से/ के से/के

१२. एखनका अखनका

१३. भूमिहाव भूमिहाव

१४. सुगव

/ सुगव/ सुगव

१५. सगडक सगडक १६.

कुरि

१७. कवगयो/३ करैयो ले देवक /कवियो-कवगयो

१८. प्रौवि

प्रौवि

१९. सगड १-साँटी

सगड १-साँटी

२०. पएरे-पएरे पौरे-पौरे

२१. खेवखौक

२२. खेवखौक

२३. वगा

२४. होए- हो - होख



९३. ब्रूमव ब्रूमव

९७.

ब्रूमव (संशोधन अर्थमे)

९१. यैठ यथ / अथ / सैठ / सथ

९४. तातिव

९९. अथनाय- अथनाथ / अथनाथ / एनाथ

१००. निन्न- निन्द

१०१.

बिन्न बिन्न

१०२. जाथ जाथ

१०३.

जाथ (in different sense)-last word of sentence

१०४. छत पव आरि जाथ

१०५.

ले

१०७. खेवाथ (play) - खेवाथ

१०८. शिकाथ- शिकायत

१०९.

ठप- ठप

११०.

पठ- पठ

१११. कनिथ / कनिये कनिये

११२. बाकस- बाकस

११३. होथ / होय होथ



११३. अडवदा-

अडवदा

११४. **बुँसेवहि** (different meaning- got understand)

११५. **बुँसएवहि/बुँसेवनि/ बुँसयवहि** (understood himself)

११६. **चनि- चव/ चवि गेव**

११७. **थथाअ- थथाय**

११८.

मोन पाडवथिह/ मोन पाडवथिन/ मोन पाववथिह

११९. **कैक- कएक- कअएक**

१२०.

वग वग

१२१. **जबेनाअ**

१२२. **जबेनाअ जबेनाअ- जबेनाअ/**

जबेनाअ

१२३. **होअत**

१२४.

गबरेवहि/ गबरेवनि गबरेवहि/ गबरेवनि

१२५.

टिथेत- (to test) टिथेत

१२६. **कबअयो (willing to do) करैयो**

१२७. **जेकवा- जकवा**

१२८. **तकवा- तेकवा**

१२९.

रिदेसब स्थानमे/ रिदेसबे स्थानमे



१३०. कबरैयनहूँ/ कबरैएनहूँ/ कबरैँनहूँ कबरैँनौ

१३१.

हाकि (डचाक हाक्क)

१३२. ओजन रजन आक्सोच/ आक्सोस कागत/ कागच/ कागज

१३३. आधे भाग/ आध-भागे

१३४. पिचा / पिचाय/पिचाए

१३५. नए/ ले

१३६. रैछा नए

(ले) पिचा जाय

१३७. तखन ले (नए) कहेत अछि । कहे/ सुने/ देखे छव झुदा कहेत-कहेत/ सुनेत-
सुनेत/ देखेत-देखेत

१३८.

कतेक गोठे/ कताक गोठे

१३९. कमाअ-धमाअ/ कमाअ- धमाअ

१४०

वग वग

१४१. खेवाअ (for pl ayi ng)

१४२.

छथिन्ह/ छथिन

१४३.

होअत होअ

१४४. का कियो / केओ

१४५.

केश (hai r)



१४७.

केस (court -case)

१४१

रैननाथ/ रैननाथ/ रैननाथ

१४४. **जलेनाथ**

१४६. **रुबसी रुसी**

१४७. **चबटा चर्चा**

१४८. **कर्म कर्म**

१४९. **डूँरौँरौँ/ डूँरौँरौँ/ डूँरौँरौँ डूँरौँरौँ/ डूँरौँरौँ**

१५०. **अथुनका/**

अथुनका

१५१. **वध/ विधवा (राकाक अंतिम गेह)- वध**

१५२. **कथक/**

केवक

१५३. **गवसी गर्मी**

१५४

रवदी रदी

१५५. **सुना गेवाह सुना/ सुना**

१५६. **एनाथ-गेनाथ**

१५७.

तेना ले घेबवहि/ तेना ले घेबवनि

१५८. **नधि / ले**

१५९.

डरो डरो



१७३. कतह/ कते कती

१७४. उमबिगब-उमेबगब उमबगब

१७५. भविगब

१७६. धोन/धोखन धोएन

१७७. गप/गप्प

१७८.

के के

१७९. दबरँझा/ दबरँजा

१८०. ठाय

१८१.

धवि तक

१८२.

घुवि लोष्ट

१८३. खोबरँक

१८४. रँह

१८५. चो/ चुँ

१८६. तौहि (पद्यमे त्राह)

१८७. चोँही / चोँहि

१८८.

कबरँअ कबरँअये

१८९. एकेठा

१९०. कबितथि / कबतथि

१९१.

पहुँचि/ पहुँच



१+२. बाथवहि बथवहि/ बथवनि

१+३.

वगवहि/ वगवनि वागवहि

१+४.

सुनि (उचावण सुधन)

१+५. अछि (उचावण अगछ)

१+७. एवथि गेवथि

१+१. रिंतउने/ रिंतोने/

रिंतोने

१+१. कबरौंउवहि/ कबरौवनि/

करेवथिह/ करेवथिन

१+६. कबएवहि/ करेवनि

१६०.

आकि/ कि

१६१. पहुँचि/

पहुँच

१६२. रौंती जवाय/ जबाए जबा (आगि नगा)

१६३.

मे मे

१६४.

हाँ मे हाँ (हाँमे हाँ रिभक्तिमे लोका कथ)

१६५. फेव फेव

१६७. कथव(spaci ous) फेव

१६१. होयतहि/ होयतहि/ होयतनि/हेतनि/ हेतहि



१९४. हाथ मटियाएरै/ हाथ मटियारैय/हाथ मटियाएरै

१९५. बेका बेका

२००. देखाए देखा

२०५. देखारैए

२०२. सठवि सठव

२०३.

साहेरै साहेरै

२०४. गेलैन्ह/ गेवहि/ गेवनि

२०३. हेरौक/ होएरौक

२०७. केनो/ कएनहूँ/केनो/ केनू

२०१. किछ न किछ/

किछ ले किछ

२०४. घुमेनहूँ/ घुमोनहूँ/ घुमेनो

२०५. एवाक/ अएनाक

२५०. अः/ अह

२५५. नय/

कए (अर्थ-पविरतन) २५२. कनीक/ कनेक

२५३. सरैलक/ सलक

२५४. मिनाइ/ मिना

२५३. कइ/ क

२५७. जाइ/

जा

२५१. आइ/ आ

२५४. भइ /भ (' फाँटिक कमीक द्रातक)



२१९. निश्चय/ नियम

२२०

.हेबल्लेख/ हेबल्लेख

२२१. पहिल अक्षर ठ/ रौदक/ रौदक ठ

२२२. तहि/तहि/ तहि/ ते

२२३. कहि/ कही

२२४. तँ/

ते / तँ

२२५. नँ/ नँ/ नहि/ नहि/ले

२२६. ते/ रुए / एवीहें/

२२७. छहि/ छे/ छेक /छग

२२८. दृष्टि/ दृष्टि

२२९. आ (come)/ आ (conjunct i on)

२३०.

आ (conjunct i on)/ आ (come)

२३१. कनो/ कनो/ कनो/केना

२३२. गेलो-गेवहि-गेवनि

२३३. हेरौक- होएरौक

२३४. केनो- कएनो-कएनहँ/केनो

२३५. किछ न किछ- किछ न किछ

२३६. केहन- केहन

२३७. आ (come)-आ (conjunct i on-and)/आ । आरौ-आरौ /आरौ-आरौ

२३८. रुएत-रुएत

२३९. घुमेनहँ-घुमेनहँ- घुमेनहँ



२४०. एवाक- अएवाक

२४१. होनि- होअन/ होहि

२४२. उ-बाम उ आमक रीच (conjunction), उ कहक (he said)/ उ

२४३. की ह/ कोसी अएवी ह/ की ह । की ह

२४४. दृष्टि/ दृष्टिये

२४५.

. सोमिव/ सोमेव

२४६. ते / ते/ तधि/ तहि

२४७. जे

/ जा/ ज

२४८. सभ/ सरे

२४९. सभक/ सरेक

२५०. कहि/ कही

२५१. कोना/ कोना/ कोनहूँ

२५२. कावकती भय गेव/ भय गेव/ भय गेव

२५३. कोना/ कोना/ कन/कना

२५४. अः / अह

२५५. जने/ जन

२५६. गेवनि/

गेवाह (अर्थ परिवर्तन)

२५७. केवहि/ कएवहि/ केवनि/

२५८. वय/ वय/ वयह (अर्थ परिवर्तन)

२५९. कनीक/ कनेक/कनी-मनी

२६०. पठवहि पठवनि/ पठवअन/ पपठवहि/ पठवौवनि/



२७९. निश्चय/ नियम

२७९. लेख/ लेखक

२७९. पहिल अक्षर बहल ट/ रीचमे बहल ट

२७९. आकाशवाणीमे रिक्काबिक प्रयोग उचित नै/ अपोस्ट्रोफिक प्रयोग शास्त्रिक तकनीकी नूनताक परिचायक ओकर रचना अग्रह (रिक्काबी) क प्रयोग उचित

२७९. केव (पहिले ब्राह्म) / -क/ क२/ के

२७९. डेहि- डहि

२७९. वने/ नगरे

२७९. होत/ रूत

२७९. जात/ जत

२७९. आत/ अत/ आउत

२७९

. आत/ अत/ ऐत

२७९. पिअर/ पिर/ पियर

२७९. शक/ शक

२७९. शक/ शक

२७९. अत/ अत/ अत/ अत

२७९. जाहि/ जाहि/ जाहि/ जाहि

२७९. जात/ जेत/ जेत

२७९. आव/ आव

२७९. कैक/ कक

२७९. आयन/ अयन/ आव

२७९. जा/ जा/ जा (नानति जा नगरीह ।)

२७९. नकन/ नकन



२+३. कर्तृआएव/ कर्तृआएव

२+४. ताहि/ ते/ तअ

२+५. गायरै/ गाएरै/ गएरै

२+६. सकै/ सकए/ सकय

२+७. सेवा/सवा/ सवाए (भात सवा गेल)

२+८. कठत बही/देखैत बही/ कठत छलौ/ कठ छलौ- अहिना छलैत/ पटैत

(पटै-पटैत अर्थ कथना काव परिवर्तित) - आव बूमे/ बूमेत (बूमे/ बूमे छी कदा बूमेत-बूमेत)/ सकैत/ सकै। करैत/ करै। दै/ दैत। डैक/ डै। रैछलै/ रैछलैक। बखरौ/ बखरौक। रिनु/ रिनु। बातिक/ बातिक बूमे आ बूमेत केव अपन-अपन जगहपव प्रयोग समीचीन अछि। बूमेत-बूमेत आरै बूमविष। लमछ बूमे छी।

२+९. दुआरे/ द्वारे

२+१०. भेटै/ भेटै/ भेटै

२+११.

खन/ खीन/ खना (भोव खन/ भोव खीन)

२+१२. तक/ धवि

२+१३. ग२/ गै (meaning different - जनरै ग२)

२+१४. स२/ स (कदा द२, न२)

२+१५. ३. (तीन अक्षरक मेव रैदना पुनरुक्ति एक आ एकठा दोसरक उपयोग) आदिक रैदना ह आदि। म३. म३. क३. क३ आदिमे त सहाजक कोनो आरथकता मैथिलीमे नै अछि। र३.

२+१६. रैसी/ रैसी

२+१७. रौना/राना रैवा/ रना (बैरैना)

२+१८.

.रावी/ (रैदनेरावी)

२+१९. रात/ रात



३००. अन्तर्बाह्य/ अन्तर्बाह्य

३०१. लेख/ लेख

३०२. वसुधैव कुटुम्बकम्/ वसुधैव कुटुम्बकम्

३०३. वाग्देवी/ वाग्देवी (

भेदे/ भेदे)

३०४. वागव/ वागव

३०५. ठरौ/ ठरौ

३०६. बाधक/ बाधक

३०७. आ (come)/ आ (and)

३०८. पश्चात्ताप/ पश्चात्ताप

३०९. २ केव रारहाव शिष्टक अन्तर्मे मात्र, यथासंभर रीचमे नै।

३१०. कहत/ कहत

३११.

बस्त्र (हव)/ बस्त्र (हव) (meaning different)

३१२. तागति/ तागति

३१३. खवाप/ खवाप

३१४. रौगन/ रौगन/ रौगन

३१५. जार्ति/ जार्ति

३१६. कागज/ कागज/ कागज

३१७. गिरे (meaning different – swallow)/ गिरे (थस)

३१८. बाह्य/ बाह्य

DATE-LIST (year – 2013-14)

(१४२९ बसव साव)

Marriage Days:



Nov.2013- 18, 20, 24, 25, 28, 29

Dec.2013- 1, 4, 6, 8, 12, 13

January 2014- 19, 20, 22, 23, 24, 26, 31.

Feb.2014- 3, 5, 6, 9, 10, 17, 19, 24, 26, 27.

March 2014- 2, 3, 5, 7, 9.

April 2014- 16, 17, 18, 20, 21, 23, 24.

May 2014- 1, 2, 8, 9, 11, 12, 18, 19, 21, 25, 26, 28, 29, 30.

June 2014- 4, 5, 8, 9, 13, 18, 22, 25.

July 2014- 2, 3, 4, 6, 7.

Upanayana Days:

February 2014- 2, 4, 9, 10.

March 2014- 3, 5, 11, 12.

April 2014- 4, 9, 10.

June 2014- 2, 8, 9.

Dviragaman Din:

November 2013- 18, 21, 22.

December 2013- 4, 6, 8, 9, 12, 13.

February 2014- 16, 17, 19, 20.

March 2014- 2, 3, 5, 9, 10, 12.

April 2014- 16, 17, 18, 20.

May 2014- 1, 2, 9, 11, 12.



Mundan Din:

November 2013– 20, 22.

December 2013– 9, 12, 13.

January 2014– 16, 17.

February 2014– 6, 10, 19, 20.

March 2014– 5, 12.

April 2014– 16.

May 2014– 12, 30.

June 2014– 2, 9, 30.

FESTIVALS OF MTHILA (2013–14)

Mauna Panchami –27 July

Madhushravani – 9 August

Nag Panchami – 11 August

Paksha Bandhan– 21 Aug

Krishnastami – 28 August

Kushi Amavasya / Somvari Vrat – 5 September

Hartalika Teej – 8 September

ChauthChandra–8 September

Vishwakarma Pooja– 17 September

Anant Caturdashi – 18 Sep



Pitri Paksha begins- 20 Sep

Jimootavahan Vrat a/ Jitika-27 Sep

Matri Navami -28 Sep

Kalashsthan- 5 October

Belnauti - 10 October

Patrika Pravesh- 11 October

Mahastami - 12 October

Maha Navami - 13 October

Vijaya Dashami - 14 October

Kojagara- 18 Oct

Dhanteras- 1 November

Diyaoti, shyama pooja-3 November

Anakoota/ Govardhana Pooja-4 November

Bhratri dwitiya/ Chitrakoota Pooja- 5 November

Chhatra -8 November

Sama Poojaarambh- 9 November

Devasthan Ekadashi - 13 November

ravi vratarambh- 17 November

Navanna parvan- 20 November

KartikPurnima- Sama Visarjan- 2 December

Vivaha Panchmi - 7 December



Makar a/ Teel a Sankr ant i -14 Jan

Nar akni var an chat ur dashi - 29 January

Basant Panch ami / Sar aswat i Pooj a- 4 Febr uary

Achl a Sapt mi - 6 Febr uary

Mahashi var at ri -27 Febr uary

Hol i kadahan -Fagua-16 Mar ch

Hol i - 17 Mar ch

Sapt ador a- 17 Mar ch

Var uni Tr ayodashi -28 Mar ch

Jur i shi t al -15 Apr i l

Ram Navami - 8 Apr i l

Akshaya Tritiya-2 May

Janaki Navami - 8 May

Ravi Br at Ant - 11 May

Vat Savit ri -bar asait - 28 May

Ganga Dashhar a-8 June

Hari vasar Vr at a- 9 Jul y

Shr ee Gur u Poor ni ma-12 Jul

VI DEHA ARCHI VE

पत्रिकाक सभ्ठा प्रबान अंक ब्रैन-बिदेह अ. तिवहता आ देरनागरी रूपमे Vi deha



e journal's all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions

बिदेह अंक ३.० पत्रिकाक पहिल -

बिदेह अंक ३.० पत्रिकाक -

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha/>

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-archive-part-i/>

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-archive-part-ii/>

२. मैथिली पोथी डाउनलोड Maithili Books Download

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi>

३. डिजिटल मैथिली. Maithili Audio Downloads

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-audio>

४. मैथिली वीडियोक संकलन Maithili Videos

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-video>

५. आधुनिक चित्रकला आ चित्र /मिथिला चित्रकला. Maithila Painting/ Modern Art and Photos

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/>

-बिदेहक एहि सब सहयोगी विक्रम सेहो एक बेर जाड ।

७. बिदेह मैथिली ब्लॉग :

<http://videhaquiz.blogspot.com/>

१. बिदेह मैथिली जानबूँत एक्स्प्लेन :



<http://videha-aggregation.blogspot.com/>

४. बिदेह मैथिली साहित्य अंग्रेजीमे अनुदित

<http://madhubani-art.blogspot.com/>

५. बिदेहक पूर्ण-रूप "भातसबिक गाछ" :

<http://gajendratihakur.blogspot.com/>

१०. बिदेह अडैक :

<http://videha123.blogspot.com/>

११. बिदेह कागज :

<http://videha123.wordpress.com/>

१२. बिदेह: सदेह : पहिल तिवहता (मिथिलाक्षर) जानबूत (बैनाँ)

<http://videha-sadeha.blogspot.com/>

१३. बिदेह:बैनाँ: मैथिली बैनाँमे: पहिल बैनाँ बिदेह द्वारा

<http://videha-braille.blogspot.com/>

१४. VIDEHA I ST MAITHILI FORTNIGHTLY EJOURNAL ARCHIVE

<http://videha-archive.blogspot.com/>

१५. बिदेह प्रथम मैथिली पार्षिक ३ पत्रिका मैथिली पोथीक आकाशिक

<http://videha-pothi.blogspot.com/>

१६. बिदेह प्रथम मैथिली पार्षिक ३ पत्रिका ऑडियो आकाशिक

<http://videha-audio.blogspot.com/>

१७. बिदेह प्रथम मैथिली पार्षिक ३ पत्रिका रीडियो आकाशिक

<http://videha-video.blogspot.com/>



१+. बिदेह प्रथम मैथिली पाष्किक ङा पत्रिका मिथिला टिचकना, आधुनिक कना आ टिचकना

<http://videha-paintings-photos.blogspot.com/>

१६. मैथिल आब मिथिला (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय जानबृत्त)

<http://maithilaurmitihila.blogspot.com/>

२०श्रुति प्रकाशन.

<http://www.shrutipublication.com/>

२१.<http://groups.google.com/group/videha>

२२.<http://groups.yahoo.com/group/VIDEHA/>

२३.गजेन्द्र ठाकुर अडेकर

<http://gajendrat hakur123.blogspot.com>

२४. नैना भुठैका

<http://mangan-khabas.blogspot.com/>

२५.बिदेह रेडियोकरिता आदिक पहिल पौडकास्ट सांठ-मैथिली कथा:

<http://videha123radio.wordpress.com/>

२७.  [Videha Radio](#)

२१.  [Join official Videha facebook group.](#)

२+. बिदेह मैथिली नाँठ उमेर

<http://maithili-drama.blogspot.com/>

२६.समदिया

<http://esamad.blogspot.com/>



३०. मैथिली फिल्मस

<http://maithilifilms.blogspot.com/>

३१. अनचिन्हार आखार

<http://anchinharakharakolkat.blogspot.com/>

३२. मैथिली हाकु

<http://maithili-hai.blogspot.com/>

३३. मानक मैथिली

<http://manak-maithili.blogspot.com/>

३४. रिहनि कथा

<http://vihanikatha.blogspot.in/>

३५. मैथिली करिता

<http://maithili-kavita.blogspot.in/>

३६. मैथिली कथा

<http://maithili-katha.blogspot.in/>

३७. मैथिली समालोचना

<http://maithili-samalochna.blogspot.in/>

महत्वपूर्ण सूचना: The Maithili pdf books are AVAILABLE FOR
free PDF DOWNLOAD AT

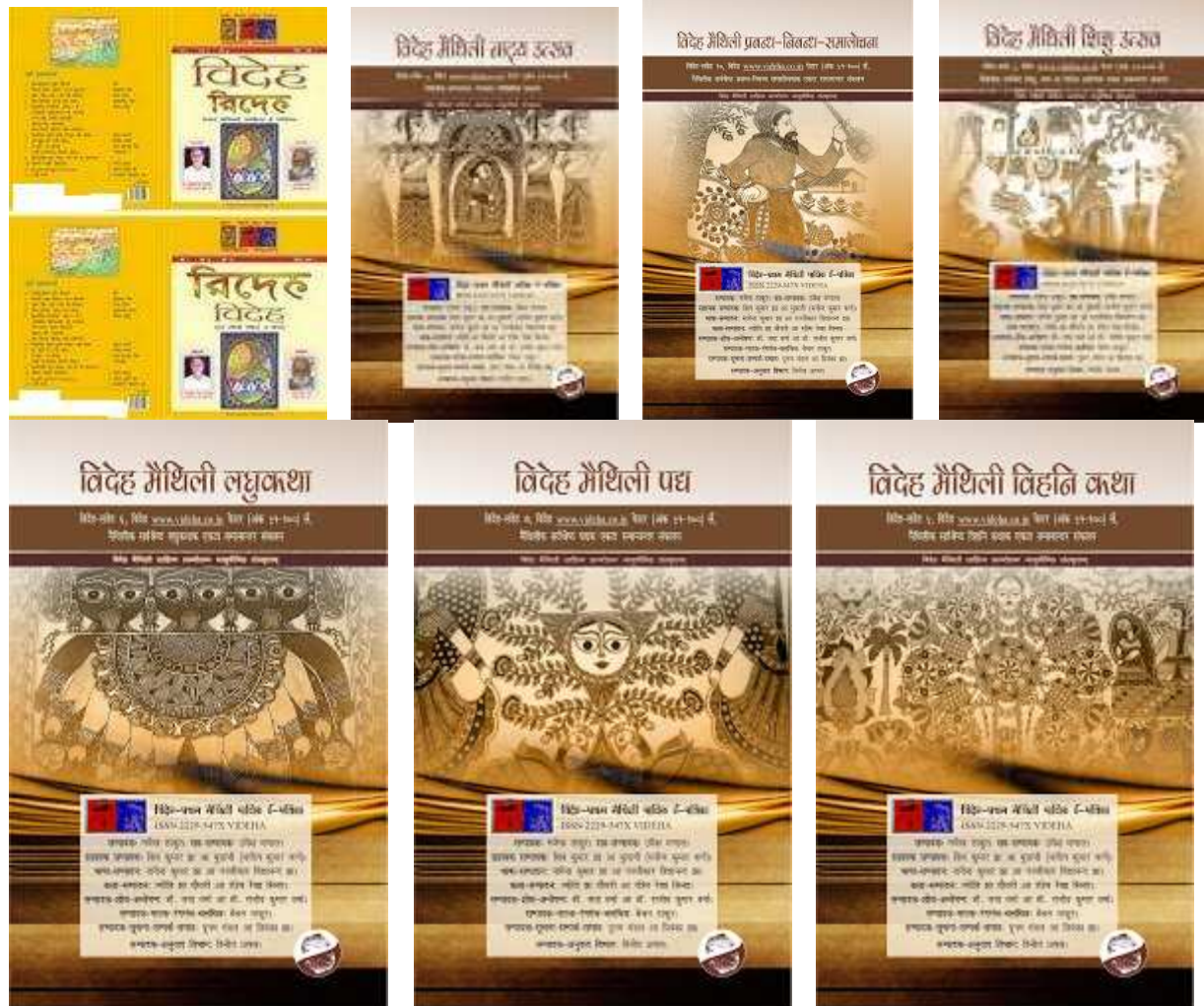
<https://sites.google.com/a/videha.com/videha/>



ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका 'विदेह' विदेह १३६ म अंक १५ अगस्त २०१३ (वर्ष ६ मास ६८ अंक १३६)
2229-547X *VIDEHA*

मानकीय संस्कृत **ISSN**

<http://videha123.wordpress.com/>
<http://videha123.wordpress.com/about/>



विदेह:सदेह: २: ३: ४:५:७:१:६:१० "विदेह"क प्रिंटेड संस्करण: विदेह-अ-पत्रिका
(<http://www.videha.co.in/>) क छनन बचना सम्मिलित ।

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर ।

Details for purchase available at publisher's (print -
version) site <http://www.shruti-publication.com> or you may
write to shruti.publication@shruti-publication.com

विदेह



मैथिली साहित् आन्दान

(c)२००४-१३. सराधिकार लेखकाधीन आ जतए लेखकक नाम नहि अछि ततए संपादकाधीन । बिदेह- प्रथम मैथिली पाष्किक ङा-पत्रिका । SSN 2229-547X
VI DEHA संपादक: गजेन्द्र ठाकुर । सह-संपादक: उमेश मंडव । सहायक संपादक: शिर कमार सा आ कुमारी (मनोज कुमार कर्ण) । भाषा-संपादन: नागेन्द्र कुमार सा आ पञ्जीकार रिद्वानन्द सा । कला-संपादन: ज्ञाति सा चौधरी आ बप्पि बेथा सिन्हा । संपादक-शोध-अवस्था: डा. जया रमा आ डा. बाजरी कमार रमा । संपादक- नाटक-वर्गमठ-चवटि-बैचन ठाकुर । संपादक- सूचना-संपर्क-समाद- पुनम मंडव आ प्रियका सा । संपादक- अनुराद रिभाग- रिनित उपेव ।

बचनाकाब अपन मौलिक आ अप्रकाशित बचना (जकरब मौलिकताक संपूर्ण उतबदायित्व लेखक गणक मध्य छुनि) ggajendra@videha.com केँ मेर अटैचमेण्टक रूपमें .doc, .docx, .rtf रा .txt फॉर्मेटमें पठा सकैत छुनि । बचनाक संग बचनाकाब अपन सम्पिष्ट पविचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठैतान, से आशी करैत छी । बचनाक अंतमें ठागप बहय, जे ङा बचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशिनक हेतु बिदेह (पाष्किक) ङा पत्रिकालेँ देल जा बहन अछि । मेर प्राप्त होयबैक बाद यथासंभव शीघ्र (सात दिनक भीतर) एकब प्रकाशिनक अंकक सूचना देल जायत । 'बिदेह' प्रथम मैथिली पाष्किक ङा पत्रिका अछि आ ईमें मैथिली, संस्कृत आ अंग्रेजीमें मिथिला आ मैथिलीसँ संबंधित बचना प्रकाशित कएल जायत अछि । एहि ङा पत्रिकालेँ शीमति नम्बरी ठाकुर द्वारा मासक ०१ आ १३ तिथिलेँ ङा प्रकाशित कएल जायत अछि ।

(c) 2004-13 सराधिकार स्वसिद्ध । बिदेहमें प्रकाशित सभलै बचना आ आर्काइवरक सराधिकार बचनाकाब आ संग्रहकर्ताक नगमें छुनि । बचनाक अनुराद आ पुनः प्रकाशिन किंवा आर्काइवरक उपयोगक अधिकार किनबैक हेतु ggajendra@videha.com पर संपर्क करू । एहि सांगठिकेँ प्रीति सा ठाकुर, मधुनिका चौधरी आ बप्पि प्रिया द्वारा डिजाइन कएल गेल ।



सिंहबु





ejournal बिदेह प्रथम मैथिली मासिक ई पत्रिका 'बिदेह' १३६ म अंक १५ अगस्त २०१३ (वर्ष ६ मास ६८ अंक १३६)

मानवीय संस्कृति **ISSN**

2229-547X VIDEHA